Vol.20, Issue 12 | Annual Subscription ₹420

October 2021

@NewsRotary /RotaryNewsIndia

रोटरी समाचार

INDIA
www.rotarynewsonline.org

Rotary

रोटरी समाचार

में अपनी प्रतिष्ठित परियोजना प्रकाशित करवाइए

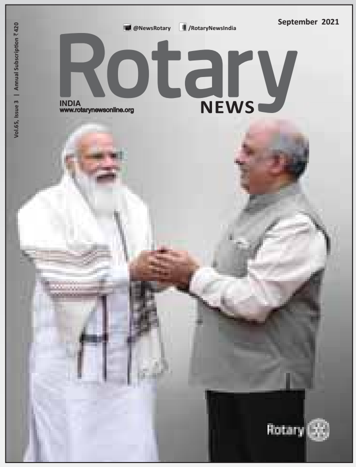

ऐसे रोटेरियन और रोटरी क्लब, या मंडल, जो सुनियोजित एवं ध्यानपूर्वक निष्पादित की गयी परियोजनाओं का बीड़ा उठाते है जिनसे लोगों की ज़िंदगियाँ परिवर्तित होती है एवं स्थानीय समुदाय लाभांवित होता है, वे अन्य रोटरी क्लबों को भी अपने बारे में ज्ञात करवाना चाहते है। आप में से बहुत से लोग सोचते है कि ऐसा करने का सबसे अच्छा तरीका है परियोजना को *रोटरी समाचार* में प्रदर्शित करना, जो कि **1.3 लाख रोटेरियनों, लगभग 1,000 पुस्तकालयों, शैक्षणिक संस्थानों, डॉक्टरों के प्रतीक्षा कक्ष, क्लीनिक,** इत्यादि में प्रसारित होती है और हर महीने लगभग 4 लाख पाठकों द्वारा पढ़ी जाती है।

रोटरी समाचार में हम इस बात से सहमत है कि बड़ी परियोजनाओं के निष्पादन में रोटेरियनों द्वारा लगाए गए कठिन परिश्रम एवं धन को आपकी पत्रिका में पर्याप्त रूप से सम्मिलित किया जाना चाहिए। लेकिन हमारी समस्या यह है कि ज्यादातर हमें ऐसी परियोजनाओं की कोई जानकारी नहीं होती है। निश्चित ही आप सूचना एवं विपणन के महत्व को समझते है। जबकि अधिकतर समय हम नियमित कल्याणकारी परियोजनाओं, जो समुदाय के लिए आवश्यक है, से घिरे हुए होते है, जैसे कि रक्त दान शिविर या एक वाहन भेंट करना या मोतियाबिंद की जांच, **हम अक्सर बड़ी, बेहतर एवं अनोखी परियोजनाओं से बस इस सरल कारण से चूक जाते है कि किसी ने भी हमें उसके बारे में नहीं बताया था।**

तो यहाँ पर आपके संचार को सही स्थान पर लाने का एक निमंत्रण है; अपने क्लब से किसी व्यक्ति को अपनी प्रतिष्ठित परियोजनाओं के बारे में *रोटरी समाचार* से बात करने का कार्य सौंपे। यदि आप सोचते है कि उन्हें बाकि के रोटरी जगत के साथ साझा किया जाना चाहिए, तो कृपया कर लिखिए, या परियोजनाओं के विभिन्न चरणों की जानकारी को क्रमबद्ध कीजिये, पत्रकारिता या रिपोर्ट लिखने के मौलिक मानदंडों को ध्यान में रखते हुए।

- उत्पत्ति - परियोजना के बारे में कब विचार किया गया।
- कारण - क्यों इसकी योजना बनाई गयी; बेशक स्थानीय समुदाय की आवश्यकता की पूर्ती के लिए। यह आवश्यकता क्या थी?
- पैसा कैसे इकठ्ठा किया गया; क्या यह एक टीआरएफ अनुदान था?
- चुनौतियाँ - क्या पैसा इकठ्ठा करना कोई समस्या थी? क्या सरकारी मंजूरी अपेक्षित थी; इन्हें कैसे हासिल किया गया। अन्य चुनौतियाँ और कैसे उनके समाधान ढूंढें गए।
- निष्पादन - समय सीमा जिसके अंदर परियोजना पूर्ण की गयी; विभिन्न चरण।
- लाभार्थी - *रोटरी समाचार* में आपके क्लब की परियोजना के शामिल होने का सबसे अच्छा मौका होगा यदि **आप हमें मानव हित की कहानियाँ देंगे... लाभार्थियों की तस्वीरें एवं उनसे बातचीत।**
- तस्वीरें - एक तस्वीर 1,000 शब्दों के बराबर होती है। परियोजना एवं उसके लाभार्थियों की **अच्छी, क्रियाशील तस्वीरें लीजिये।**
- परियोजना के नायक - परियोजना में पूरे जोश के साथ शामिल रोटेरियनों पर प्रकाश डालिए एवं व्यक्त कीजिये, यदि वे क्लब नेतृत्वकर्ता नहीं है और मौन कार्यकर्ता है तो भी।
- चूंकि रोटरी अधिक **महिलाओं एवं युवा सदस्यों को शामिल करने के लिए उत्सुक है, ऐसे समूहों द्वारा की गयी परियोजनाओं के बारे में हमे बताइए।**

एक बार यह सब जमा लेने पर, अपनी परियोजना का दौरा करने के लिए हमें आमंत्रित कीजिये। याद रखिये कि हमारे पास प्रति माह केवल एक पत्रिका है और इसमें जगह की बहुत अधिक मांग है। इसलिए, जैसा कि एक RNT ट्रस्टी ने हाल ही में संपन्न हुई एक बैठक में ध्यान दिलाया था, अंतर कीजिये कि क्या जीएमएल के लिए उपयुक्त है, और क्या रोटेरियनों के लिए राष्ट्रीय पत्रिका में भेजा जाना चाहिए।

कम्बल, किताबें या बेंच बांटने जैसी सभी प्रकार की गतिविधियों को भेजने के बजाय, हमें पत्रिका के लिए अपनी सर्वश्रेष्ठ परियोजना भेजिए।

अंत में, हम केवल विशाल परियोजनाओं को ही नहीं खोज रहे है जिनमें वैश्विक अनुदानों से सैकड़ों हजारों डॉलर की लागत लगी हो। यहाँ तक कि **एक छोटी परियोजना जिसमें एक अनोखा विचार हो, और जो स्थानीय समुदाय को एक सरल, अलग समाधान दे सके,** का स्वागत है।

अवश्य अपने सुझाव भेजिए:
rushbhagat@gmail.com
पर संपादक को और
jaishri67@gmail.com
पर वरिष्ठ सहायक संपादक को।

संपादक

विषयसूची

12

12 संजीवनी शैली से नन्हे दिलों को सुधारना

रोटरी, सत्य साईं संजीवनी अस्पतालों की सहायता करने का वादा करती है जो वंचित परिवारों के बाल हृदय रोगियों का इलाज करता है।

20

20 रोटरी के ताज में अफ्रीका एक अनतराशा नगीना है: रो ई अध्यक्ष मेहता

रोटरी न्यूज़ को दिए एक साक्षात्कार में, रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता ने अफ्रीका के अपने 7 देशों के दौरे के बारे में बात की, जहां उन्होंने राष्ट्राध्यक्षों से मुलाकात की और उन्हें स्थानीय समुदायों की मदद हेतु रोटरी के समर्थन का आश्वासन दिया था।

32 कोविड से निपटने में सावधानी बरतना ही समय की मांग है

रो ई कोविड टास्क फोर्स के अध्यक्ष PRIP के आर रवींद्रन ने दुनिया भर में महामारी से निपटने और टीकों को प्रोत्साहित करने के लिए रोटरी की कार्य योजना साझा की।

38

38 सपनों के धागे

रोटरी क्लब बिलासपुर क्वींस की एक परियोजना जो उमरेली गांव की महिला रेशम बुनकरों के माल को बेहतर कीमतों पर बेचने में मदद करती है, और उन्हें कौशल विकास पाठ्यक्रम प्रदान करती है।

42

42 सरकार के साथ रोटरी क्लब कोडाई ने सम्पूर्ण पहाड़ी शहर का टीकाकरण किया

महामारी के दौरान कोडईकनल में स्थानीय समुदाय को राहत प्रदान करने के लिए क्लब ने ₹1.13 करोड़ खर्च किए।

62 होम से 'स्मार्ट होम' तक

कुछ बेहतरीन विचारों के बारे में पढ़ें जो आपके घर को पूरी तरह से स्वचालित और पर्यावरण के अनुकूल बना सकते है।

64

64 पंडित जसराज हिंदुस्तानी शास्त्रीय गायन के दैदीप्यमान नक्षत्र

अपनी भावपूर्ण आवाज और बहु-अष्टक सुरों के लिए पहचाने जाने वाले, वह हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के सबसे प्रसिद्ध कलाकारों में से एक थे।

Scan our QR code & visit our Website

कवर पर: जन्मजात हृदय विकार वाले एक बच्चे का सत्य साईं संजीवनी अस्पताल में इलाज होते हुए।

Scan our QR code & read our Magazine

मेहता ने की मोदी से मुलाकात

रो ई अध्यक्ष मेहता की प्रधानमंत्री मोदी से मुलाकात की कवर और भीतर की तस्वीरें रोटेरियनों के लिए एक बूस्टर शॉट का काम कर रही है। निश्चित रूप से मेहता ने प्रधानमंत्री के साथ सामुदायिक सेवा पर अपने विचार साझा किए होंगे। उम्मीद है कि रोटेरियनों को दिए जाने वाले उनके अगले संदेश में हमें इसके बारे में अधिक जानकारी प्राप्त होगी।

आर श्रीनिवासन,
रोटरी क्लब मदुरई मिडटाउन - मंडल 3000

प्रधानमंत्री मोदी के साथ अध्यक्ष मेहता की कवर तस्वीर देखकर हम गर्व महसूस कर रहे है और उम्मीद करते है कि उनका कार्यकाल, खास तौर पर भारत के रोटेरियनों के लिए, एक सुनहरा दौर साबित होगा। मोदी एक सक्रिय नेता है और मुझे विश्वास है कि मेहता के नेतृत्व में रोटरी क्लब भारत के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देंगे।

अनिल सक्सेना,
रोटरी क्लब लखनऊ
मंडल 3120

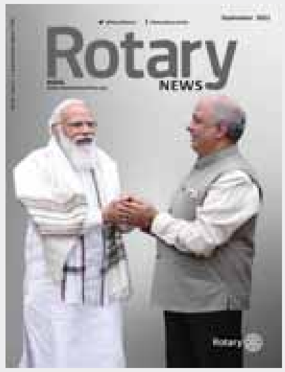

सितंबर के अंक में हमारे प्रधानमंत्री मोदी द्वारा रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता की अगवानी करती हुई कवर फोटो देखकर अच्छा लगा। लड़कियों की शिक्षा पर मेहता का संदेश और संपादक का संदेश-तालिबानी हुकूमत के तहत अफगानी महिलाओं की दुर्दशाएकदम सही हैं। इरोड के रोटेरियनों को बधाई जिन्होंने 45 दिनों के रिकॉर्ड समय में ₹20 करोड़ की लागत से एक अस्पताल शुरू किया। कोयंबटूर में झुलस चुके लोगों के अस्पताल के बारे में पढ़कर बहुत अच्छा लगा। रोटरी क्लब दिल्ली की *बेटी शिक्षा* एक अभिनव परियोजना है। सदस्यता वृद्धि पर सम्मान को लेकर मेहता द्वारा की गई घोषणा निश्चित रूप से कम समय में अच्छे परिणाम देगी। PRIP राजेंद्र साबू का लेख एक *मैराथन पुरुष* पढ़ने लायक है।

फिलिप मुलप्पोन एम टी,
रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम सबअर्बन
मंडल 3211

अफगानी महिलाओं की दुर्दशा

अफगानी महिलाओं के दुर्भाग्य पर संपादकीय सामयिक है। अफगानिस्तान में शिक्षा का समर्थन करने के लिए रोटरी क्लब एमराल्ड सिटी और रो ई मंडल 5030, सिएटल, यूएस, के अन्य क्लबों ने स्थानीय अफगानी छत्रछ, ऐग्रिकल्चर, हेल्थ एंड डेवलपमेंट ऑर्गनाइज़ेशन (-कऊज), की गतिविधियों का समर्थन करने हेतु प्रतिबद्ध होने की सूचना दी है जिसने वहाँ एक नए स्कूल का निर्माण किया है। हमें उम्मीद है कि लड़कियों की शिक्षा की उपेक्षा नहीं की जाएगी।

के एम के मूर्ति
रोटरी क्लब सिकंदराबाद - मंडल 3150

तालिबान द्वारा अफगानी महिलाओं की पिटाई का दृश्य वाकई विचलित करने वाला है। इस नई इस्लामी सरकार में एक दर्जन से अधिक मंत्री ऐसे है जिनके नाम संयुक्त राष्ट्र की आतंकवादी सूची में शामिल है। कई देश इस सरकार का मौन रहकर समर्थन कर रहे है। दुनिया भर के देशों के समर्थन से अफगानिस्तान के नागरिकों द्वारा किया गया नागरिक विद्रोह ही इस बदकिस्मत देश के बच्चों और महिलाओं को बचा सकता है।

कोका दयानंद, रोटरी क्लब नेल्लोर - मंडल 3160

भावनाओं, सूचनाओं, फोकस और प्रेरणा के संयुक्त मिश्रण से भरे लेखों के साथ एक और शानदार अंक के लिए मेरी बधाईयाँ जो रोटरी की थीम *जीवन परिवर्तित करने के लिए सेवा* के अनुरूप है।

आपके संपादकीय को पढ़कर मेरी आंखों में आंसू आ गए और मैं बस तालिबान के नियंत्रण में रहने वाली अपनी अफगानी बहनों के बारे में सोच रही थी। *जले से पीड़ितों के लिए उम्मीद के 10 साल* लेख प्रेरणादायक है और हमारे क्लब की परियोजना बेटी शिक्षा को प्रदर्शित होते हुए देखकर बहुत अच्छा लगा।

कृति मखीजा
रोटरी क्लब दिल्ली साउथ - मंडल 3011

तालिबान के नियंत्रण के बाद अफगानी महिलाओं की दुर्दशा को संपादकीय में स्पष्ट रूप से वर्णित किया गया है। कैलिफोर्निया में रहने वाले एक प्रसिद्ध UNHCR राजदूत और अफ़ग़ानी उपन्यासकार खालिद होसैनी ने अपनी किताब *अ थाउजेंड स्प्लेंडिड सन्स* में तालिबानी शासन के तहत अफगानी महिलाओं के भाग्य पर शोक व्यक्त किया है। भगवान अफगानिस्तान को बचाए।

एडवर्ड मेन्डोन्सा
रोटरी क्लब शंकरपुरा - मंडल 3182

इरोड अस्पताल, एक विशाल प्रयास

केवल 45 दिनों में 20 करोड़ की लागत से एक अस्पताल स्थापित करने के लिए इरोड के रोटेरियनों को सलाम जिससे समुदाय को बहुत मदद मिल रही है। प्रत्येक अंक में किसी प्रसिद्ध गायक/संगीतकार के बारे में पढ़ना दिलचस्प लगता है।

शिवकुमार इसरानी
रोटरी क्लब बॉम्बे - मंडल 3141

मैं उस गति और ऊर्जा को देख चकित हूँ जिससे रो ई मंडल 3203 के रोटेरियनों ने इरोड में केवल 45 दिनों में 20 करोड़ की लागत से 400 से अधिक बिस्तरों

आपके पत्र

वाला एक सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल बनाया। वास्तव में यह PDG डॉ सगधेवन और उनकी टीम द्वारा DG षणमुगसुंदरम के समर्थन से किया गया एक विशाल प्रयास था।

एस मोहन
रोटरी क्लब मदुरई वेस्ट - मंडल 3000

सिर्फ 45 दिनों में बनाकर सरकार को सौंप दिए गए इरोड के रोटरी स्पेशलिटी हॉस्पिटल पर रोटेरियनों को गर्व है।

टी डी भाटिया
रोटरी क्लब दिल्ली मयूर विहार - मंडल 3012

इरोड रोटरी हॉस्पिटल को 45 दिनों के रिकॉर्ड समय में तैयार किया गया था जो एक बार फिर यह साबित करता है कि यदि रोटेरियनों को खुद पर विश्वास हो तो वे बड़ी से बड़ी उपलब्धि हासिल कर सकते है। इस अस्पताल परियोजना ने तमिलनाडु के रोटेरियनों के लिए अच्छी ख्याति अर्जित की है।

आर ए मुत्तुकरुप्पन
रोटरी क्लब शंकरापुरम - मंडल 2982

हमें इरोड के रोटेरियनों द्वारा 400 बिस्तरों वाले कोविड अस्पताल की स्थापना हेतु किए गए जबरदस्त काम की सराहना करनी चाहिए जिसे सरकारी मेडिकल कॉलेज अस्पताल को सौंप दिया गया था। यह परियोजना PDG ई के सगधेवन के दिमाग की उपज है। रो ई अध्यक्ष मेहता ने टिप्पणी की है, ''रोटरी में मेरे 36 वर्षों में, मुझे नहीं लगता कि मैंने इतने बड़े पैमाने की कोई भी परियोजना देखी है।''

एन जगथीसन
रोटरी क्लब एलुरु - मंडल 3020

महाराष्ट्र के शेगांव तालुक में स्थित एक छोटे से गांव में रोटरी द्वारा एक पुल का निर्माण किया जाना उल्लेखनीय है। रोटरी हॉकी फाउंडेशन 200 से अधिक उड़िया लड़कियों को हॉकी में प्रशिक्षित करने का सराहनीय काम कर रहा है और इस प्रयास में रोटेरियन कोच द्वारा अपनी जेब से ₹20 लाख से अधिक खर्च किया जाना काबिले तारीफ है।

पॉन मुथइया
रोटरी क्लब आदुथुरई - मंडल 2981

विभिन्न क्लबों द्वारा की गई स्वास्थ्य संबंधी परियोजनाओं के बारे में पढ़कर बहुत अच्छा लगा। TANKER का अत्याधुनिक डायलिसिस केंद्र और रोटरी क्लब बॉम्बे द्वारा की जा रही जटिल हृदय सर्जरियाँ पढ़ने योग्य है।

डॉ संजय कोलते
रोटरी क्लब नागपुर - मंडल 3030

सदस्यता वृद्धि पर अध्यक्ष मेहता का संदेश समयोचित है। हमें नए सदस्यों के काम की सराहना करनी चाहिए और उनका मार्गदर्शन करना चाहिए ताकि वे क्लब के दृष्टिकोण, मूल्यों और परियोजनाओं को समझ सकें।

नवीन गर्ग, रोटरी क्लब सुनाम - मंडल 3090

दिलीप कुमार के लिए एक ब्लैक एंड व्हाइट कवर पेज प्रकाशित करना आपके द्वारा उठाया गया एक बहुत ही विचारशील कदम था। इस दिवंगत अभिनेता पर उत्कृष्ट कवरेज करने के लिए मैं आपको और आपकी टीम को बधाई देता हूं।

प्रभात केड़िया
रोटरी क्लब गुवाहाटी - मंडल 3240

अध्यक्ष मेहता ने क्लबों से सदस्यता में वृद्धि करने और सार्वजनिक छवि-निर्माण अभ्यास के रूप में रोटरी दिवस मनाने का आग्रह किया है। महिला सशक्तिकरण और बालिका शिक्षा पर लेख लिखने की संपादक की प्राथमिकता का तहे दिल से स्वागत है। रोटेरियन जतिंदर शर्मा ने हॉकी में उड़ीसा की लड़कियों को प्रशिक्षण देकर रोटरी को समृद्ध बनाया है। लेख *एक ग्रामीण नेत्र अस्पताल के निर्माण की भूमिका बना विवाह समारोह* दिलचस्प है; और दिल्ली क्लबों द्वारा राजस्थान में रोधक बांधों का निर्माण प्रशंसनीय है।

आर थयूमानवन
रोटरी क्लब कुड्डलोर मिडटाउन मंडल 2981

रोटरी प्लस

रोटरी प्लस के अगस्त अंक के कवर पर इस कार्यक्रम के साथ आदिवासी बस्तियों में कोविड जागरूकता अभियान लेख प्रकाशित करने के लिए हमारा धन्यवाद और प्रशंसा।

डी के ज़रेकर
रोटरी क्लब नासिक अंबाद - मंडल 3030

प्रवेश के दौरान, वर्तमान में नए सदस्य अपनी खुली हथेली को नीचे की ओर करके अपने हाथ आगे बढ़ाते है, जो हिटलर के जर्मनी की नाज़ी सलामी की तरह ही है। इसलिए मेरा सुझाव है कि एक संभावित सदस्य को अपने दाहिने हाथ को कोहनी से सीधा ऊपर उठाकर खुली हथेली सामने दिखाना चाहिए। यह शांति अभिवादन की मुद्रा है। इस पर विचार करें।

रामकृष्ण के
रोटरी क्लब पुट्टूर - रो ई मंडल 3181

सुधार बॉक्स

सितंबर अंक में, पृष्ठ 63 पर किशोरी अमंकर के साथ वाली फोटो के कैप्शन में पंडित हरिप्रसाद चौरसिया को गलती से भीमसेन जोशी के रूप में वर्णित किया गया है। इस त्रुटि के लिए हमें खेद है।

संपादक

We welcome your feedback. Write to the Editor:
rotarynews@rosaonline.org; rushbhagat@gmail.com.
Mail your project details, along with hi-res photos,
to **rotarynewsmagazine@gmail.com.**

Messages on your club/district projects, information and links on zoom meetings/ webinar should be sent only by e-mail to the Editor at **rushbhagat@gmail.com** or **rotarynewsmagazine@gmail.com.** WHATSAPP MESSAGES WILL NOT BE ENTERTAINED.

Click on **Rotary News Plus** on our website **www.rotarynewsonline.org** to read about more Rotary projects.

आजीविका को वढ़ावा दें

SERVE TO CHANGE LIVES

रोटरी वर्ष की एक तिमाही गुजर चुकी है। मुझे यकीन है कि आप रोटरी को बढ़ने, और अधिक करने में मदद कर रहे है। और मुझे आशा है कि आपने पहले ही एक व्यक्ति को रोटरी में शामिल करके हर एक, लाए एक पहल में अपनी भूमिका निभा चुके होंगे।

क्या आप कभी रोटेरियन के रूप में अपने शुरुआती दिनों के बारे में सोचते है? मैं अक्सर सोचता हूं - क्योंकि सेवा की शक्ति की खोज के उन प्रारम्भिक क्षणों ने ही आज मैं जो हूँ उसे आकार दिया है। जब मैं अपने रोटरी क्लब में शामिल हुआ, तो हमारे प्रयास भारत के ग्रामीण समुदायों पर केंद्रित थे, जहां लोग शौचालय के बिना रह रहे थे, जिस तालाब में वे नहाते थे उसी से पीने का पानी भरते थे, और अपने बच्चों को एक पेड़ के नीचे लगने वाली बाहरी कक्षाओं में भेज रहे थे। नजदीकी स्वास्थ्य देखभाल प्रदाता अक्सर मीलों दूर रहते थे - और वहाँ मिलने वाली सेवाएं भी पर्याप्त नहीं होती थी। लेकिन रोटरी क्लबों द्वारा कुछ सेवा परियोजनाएं करने के बाद, गांवों में शौचालय, पीने का साफ पानी, प्रारंभिक शिक्षा के लिए एक कक्षा और पास में एक स्वास्थ्य देखभाल केंद्र आ गया।

रोटरी ने मेरे भीतर जो चिंगारी जगाई, उसने मुझे खुद से परे देखने और मानवता को अपनाने के लिए मजबूर किया। इसने सेवा को जीने का एक तरीका बनाया और मुझे एक मार्गदर्शक सिद्धांत की ओर ले गया, जिस पर मैं आज भी कायम हूं: सेवा वह किराया है जिसका भुगतान मैं धरती पर रहने के लिए करता हूं।

यदि आप अपने या अपने क्लब में सेवा की चिंगारी को फिर से जगाने की आवश्यकता महसूस करते है, तो अक्टूबर - सामुदायिक आर्थिक विकास माह - ऐसा करने का एक अच्छा समय है। जब हम उन समुदायों में लोगों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए सेवा करते है जिनकी पर्याप्त रूप से सेवा नहीं की गई - उदाहरण के लिए, व्यावसायिक प्रशिक्षण और वित्तीय संसाधनों तक पहुंच प्रदान करने वाली परियोजनाओं के माध्यम से - तो हम स्थानीय आर्थिक विकास का निर्माण करने और उसे बरकरार रखने में मदद करते है।

आवश्यकता बड़ी है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, दुनिया की 9 प्रतिशत आबादी - यानी 700 मिलियन लोग, जिनमें से अधिकांशतः उप-सहारा अफ्रीका में रहते है - अपना गुज़ारा 1.9 डॉलर प्रतिदिन से कम पर करते है। मजबूत सामुदायिक विकास के साथ-साथ उद्यमियों का समर्थन करके, हम उस क्षेत्र के लोगों के साथ-साथ अन्य लोगों की स्थितियों में भी सुधार लाने में मदद कर सकते है।

वित्तीय सेवाओं तक पहुँच को सुलभ बनाने के लिए ऋणदाताओं के साथ साझेदारी करके, आपका क्लब स्थानीय स्कूलों और सामुदायिक कॉलेजों के माध्यम से व्यावसायिक प्रशिक्षण के अवसरों का विस्तार आर्थिक प्रगति को प्रोत्साहित करने के लिए कर सकता है, या आप एक ऐसे गैर-लाभकारी संगठन के साथ काम कर सकते है जो उद्यमियों को संसाधन प्रदान करता हो और उन्हें व्यावसायिक समुदाय से जोड़ता हो। .

बेशक, सशक्त सार्वजनिक स्वास्थ्य के बिना मजबूत समुदायों का विकास असंभव है। 24 अक्टूबर को, विश्व पोलियो दिवस पर, हम पोलियो उन्मूलन प्रयासों में अपनी जबरदस्त प्रगति का जश्न मनाएंगे। लेकिन हम यह भी जानते है कि लड़ाई अभी खत्म नहीं हुई है। सभी बच्चों का पोलियो टीकाकरण सुनिश्चित करने के लिए हमें अभी भी धन जुटाने और जागरूकता फैलाने के लिए आपकी सहायता की आवश्यकता है। कृपया उस महत्वपूर्ण दिन पर अपने क्लबों को सक्रिय करना न भूलें और उन्हें इस लिंक के माध्यम से दान करने के लिए प्रोत्साहित करें: *endpolio.org/world-polio-day*

सेवा ने हमेशा मुझे प्रतिफल दिया है। मुझे पता है कि आप में से कई लोगों को भी ऐसा ही लगता है। दूसरों की मदद स्वयं को और उनके समुदायों को बेहतर बनाने के लिए करके, इस महीने हमारे ग्रह का एक अच्छा किरायेदार बनने में मेरे साथ शामिल हो। एक साथ मिलकर, हम *जीवन परिवर्तित करने के लिए सेवा* कर सकते है।

Shekhar Mehta

शेखर मेहता

अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

संपादक
का संदेश

लड़कियों का सशक्तिकरण अवसर और चुनौतियां

बालिकाओं और महिलाओं की स्थिति में सुधार और उनके उत्थान की अविलम्ब आवश्यकता को ले कर सारी दुनिया कितनी जागरूक और संवेदनशील हो गई है, ये अलग-अलग, लेकिन आपस में एक दूसरे से जुड़े इन दोनों मुद्दों से साफ़ जाहिर है। जैसा कि उनकी सोशल मीडिया पोस्ट और *रोटरी न्यूज़* को दिए साक्षात्कार में नज़र आता है, जिस तरह से रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता के कार्यकाल के फोकस क्षेत्रों में से एक ने – लड़कियों को सशक्त बनाना – पूरी दुनिया का ध्यान बरबस अपनी ओर खींचा है, ये देख कर वो पूर्ण रूप से अभिभूत हैं। अफ्रीकी महाद्वीप में 7 देशों के 20 दिवसीय दौरे पर, अफ्रीकी रोटेरियनों में इस अभियान को मिले उत्साह और भावुकतापूर्ण समर्थन को देख कर बहुत उत्साहित हैं। ''लड़कियों को सशक्त करने के लिए चल रही परियोजनाओं को देखने मैं जहां भी गया हर जगह भरपूर उत्साह और एक जुनून नज़र आया,'' उन्होंने कहा। *पैड-ए-गर्ल* परियोजना में लड़कियों को पुन: प्रयोज्य सैनिटरी पैड बनाने के लिए प्रशिक्षण दिया जा रहा है, जो सीधे सीधे तीन महत्वपूर्ण सेवा क्षेत्रों को सम्बोधित करती है, स्वास्थ्य, स्वच्छता व पर्यावरण और बालिकाओं व महिलाओं का सशक्तिकरण। देश में हिंसा और संघर्ष की वजह से आंतरिक रूप से विस्थापित आबादी में लड़कियों को दी जाने वाली छात्रवृत्ति की एक अन्य परियोजना देख कर वो द्रवित हो गए थे।

हमें मालूम है कि लड़कियों को शिक्षित करने और महिलाओं को निपुण करने के लिए रोटरी क्लब पूरी दुनिया में परियोजनाएं चला रहे हैं। बिलासपुर, छत्तीसगढ़ का एक अखिल महिला क्लब, रोटरी क्लब बिलासपुर क्वींस उन महिला बुनकरों की सहायता कर रहा है जो कोसा रेशम की खूबसूरत साड़ियाँ बनाती हैं। इन महिलाओं का विभिन्न प्रकार से सहयोग करने के लिए क्लब ने *सपनो के धागे* नामक परियोजना शुरू की है, जिसमें उनके उत्पाद की बिक्री में सहायता, उन्हें सिलाई और कढ़ाई में अतिरिक्त कौशल उपलब्ध करवाना, छोटे उद्यमों के लिए ऋण, और भविष्य में बेटियों की शादी में होने वाले खर्चों में मदद शामिल है।

दूसरा लैंगिक मुद्दा है अफगानिस्तान की लड़कियों और महिलाओं की बिगड़ती दुर्दशा, जिनके मूल अधिकारों को तालिबानी शासन के पैरों तले कुचला जा रहा है। लेकिन तारीफ की बात यह है कि इस बार अफगानी महिलाएं – देश के भीतर और बाहर – पूरी बहादुरी से इसका सामना कर रही हैं। अफगान महिलाओं ने ट्विटर पर सितंबर में एक साहसिक #DoNotTouchMyClothes अभियान चलाया। अभियान के माध्यम से अफगान महिलाओं ने अपनी, किशोरियों , युवतियों, अपनी माताओं, मौसी, बहनों, आदि सभी की रंगीन, पारंपरिक अफगान वेशभूषा पहने तस्वीरें पोस्ट कीं हैं, जिनका ना तो चेहरा ढका हुआ है ना ही केश। तालिबानी शासन के तहत महिलाओं के लगातार कम होते अधिकारों का रुख पलटने का ये एक साहसिक प्रयास है, जिन्होंने लड़कों के लिए तो शिक्षा शुरू करने की अनुमति दे दी है लेकिन लड़कियों की शिक्षा पर हर तरह के प्रतिबंध लगा दिए हैं। इस अभियान के माध्यम से, अफगान महिलाएं अपने शासकों को स्पष्ट सन्देश दे रही हैं कि पारम्परिक रूप से, महिलाओं के लिए नकाब और बुर्का अफगानी वेश भूषा, इस के ड्रेस कोड का हिस्सा कभी भी नहीं थे।

तालिबान द्वारा किए गए वादे के अनुसार, जब भी बालिकाओं की शिक्षा की शुरुआत होगी, वो कितनी व्यर्थ होगी, इसकी एक झलक *द न्यू यॉर्क टाइम्स* (NYT)में छपे एक लेख में पढ़िए। जिसमें काबुल स्थित बालिकाओं के एक स्कूल की निदेशक अकिला, जो बालिका शिक्षा के लिए तालिबान की योजना के बारे में जानना चाहती हैं, लेकिन शिक्षा पर आयोजित तालिबानी समिति की साप्ताहिक बैठकों में शरीक नहीं हो सकतीं। ये सिर्फ पुरुषों के लिए हैं, उनका कहना है, ''आपको पुरुष प्रतिनिधि भेजना चाहिए,'' अकिला ने NYT को बताया! उन्हें और बालिका शिक्षा से जुड़े अन्य लोगों को ये समझने के लिए इन बैठकों में भाग लेने की आवश्यकता नहीं है कि तालिबान द्वारा बालिका शिक्षा और महिला अधिकारों में बड़ी निर्ममता से काट-छाँट की जाएगी।

रशीदा भगत

Governors Council

RID 2981 S Balaji
RID 2982 K Sundharalingam
RID 3000 R Jeyakkan
RID 3011 Anup Mittal
RID 3012 Ashok Aggarwal
RID 3020 Rama Rao M
RID 3030 Ramesh Vishwanath Meher
RID 3040 Col Mahendra Mishra
RID 3053 Sanjay Malviya
RID 3054 Ashok K Mangal
RID 3060 Santosh Prdhan
RID 3070 Dr Upinder Singh Ghai
RID 3080 Ajay Madan
RID 3090 Parveen Jindal
RID 3100 Rajiv Singhal
RID 3110 Mukesh Singhal
RID 3120 Samar Raj Garg
RID 3131 Pankaj Arun Shah
RID 3132 Dr Omprakash B Motipawale
RID 3141 Rajendra Agarwal
RID 3142 Dr Mayuresh Warke
RID 3150 K Prabhakar
RID 3160 Thirupathi Naidu V
RID 3170 Gaurishkumar Manohar Dhond
RID 3181 A R Ravindra Bhat
RID 3182 Ramachandra Murthy M G
RID 3190 Fazal Mahmood
RID 3201 Rajasekhar Srinivasan
RID 3203 Shanmugasundaram K
RID 3204 Dr Rajesh Subash
RID 3211 Srinivasan K
RID 3212 Jacintha Dharma
RID 3231 Nirmal Raghavan W M
RID 3232 Sridhar J
RID 3240 Dr Mohan Shyam Konwar
RID 3250 Pratim Banerjee
RID 3261 Sunil Phatak
RID 3262 Santanu Kumar Pani
RID 3291 Prabir Chatterjee

Printed by PT Prabhakar at Rasi Graphics Pvt Ltd, 40, Peters Road, Royapettah, Chennai - 600 014, India, and published by PT Prabhakar on behalf of Rotary News Trust from Dugar Towers, 3rd Flr, 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai 600 008. Editor: Rasheeda Bhagat.

The views expressed by contributors are not necessarily those of the Editor or Trustees of Rotary News Trust (RNT) or Rotary International (RI). No liability can be accepted for any loss arising from editorial or advertisement content. Contributions — original content — is welcome but the Editor reserves the right to edit for clarity or length. Content can be reproduced with permission and attributed to RNT.

आइए एक शांतिपूर्ण दुनिया में प्रवेश करें

प्रिय दोस्तों,

रोटरी अंतर्राष्ट्रीय की शांति निर्माण पहल का एक लंबा इतिहास रहा है। प्रथम विश्व युद्ध से पहले के प्रस्ताव में शांति निर्माण, शांति केंद्रों की स्थापना से लेकर अब पर्यावरण का समर्थन करने तक, रोटेरियनों के पास बुनियादी मानवाधिकारों के उल्लंघन के कारण दुनिया में होने वाले संघर्षों को संबोधित करने हेतु आवश्यक संसाधन और विचार प्रक्रिया मौजूद है। रोटरी ने उन लोगों को शामिल करके और उन्हें प्रेरित करके शांति प्रक्रिया को आगे बढ़ाया है जिनकी हमने सेवा की है। रोटरी सभी के लिए स्थायी शांति पर जोर देती है।

हालाँकि, आज की दुनिया में संघर्ष और हिंसा के कारण 70 मिलियन से भी अधिक लोग प्रभावित है। क्योंकि न तो शांति सेना और न ही राज्य एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थान व्यापक रूप से प्रचलित इन मानवाधिकारों के उल्लंघन को कम कर सकते है। अफ़गान संकट इसका उदाहरण है।

याद रखें, लगभग आधी प्रभावित आबादी में बच्चे शामिल है। जैसी स्थिति चल रही है हम उसे वैसा ही स्वीकार नहीं कर सकते। हमारे पास सभी तरह के उपकरण और संसाधन मौजूद है। हमारे पास अपनी परियोजनाओं के माध्यम से शांति निर्माण करने और समुदायों को जोड़ने का एक सिद्ध ट्रैक रिकॉर्ड है। पूर्व में, रोटरी ने स्वयंसेवकों को प्रशिक्षित किया और जनता एवं समाज को कौशल प्रदान किए। अब शांति प्रक्रिया को फिर से समानुभूति देने और शांति में निवेश करने का समय आ गया है।

बच्चे वैश्विक आबादी का एक तिहाई हिस्सा है जिसमें 6 में से 1 बच्चा अत्यधिक गरीबी में जीता है। हर साल 5 साल से कम उम्र के 6 मिलियन बच्चे कुपोषण से मर जाते है और कई बच्चे दुर्व्यवहार, शोषण और दासता के शिकार हो जाते है। दुनिया भर में परोपकारी व्यक्तियों और सेवा भाव वाले संस्थानों के संयुक्त प्रयासों के बावजूद यह स्थिति सामान्य रूप से कायम है।

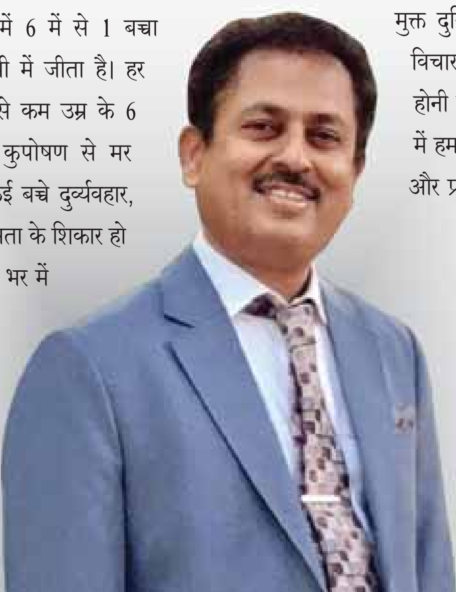

तो चलिए संघर्ष को जीवन के एक हिस्से के रूप में स्वीकार करने से इनकार करें। आइए शांति को सोचें, कहें और उसे करें। शांति को प्रसारित करने और उसका अभ्यास करने के लिए हमें अपने आसपास के समुदायों और लोगों को शामिल करने, शिक्षित करने और सशक्त बनाने की आवश्यकता है। शांति तब स्थापित होती है जब रोटेरियन बीमारी की रोकथाम करने, स्वच्छ जल तक पहुंच प्रदान करने, माताओं और बच्चों को बचाने, शिक्षा का समर्थन करने, पर्यावरण की रक्षा करने और समाज को आर्थिक और भावनात्मक रूप से सशक्त बनाने हेतु परियोजनाओं की योजना बनाकर उन्हें कार्यान्वित करते है।

रोटरी और कुछ नहीं बल्कि कार्यों में झलकने वाली मानवता है। शांति निर्माण हमारे सभी कार्यों और कर्मों का एक अंतर्निहित घटक है। हालाँकि, आज के चुनौतीपूर्ण वातावरण में, हमें अधिक ध्यान केंद्रित करने और शांति प्रयासों को अपनी सभी गतिविधियों के केंद्र में रखने की आवश्यकता है। शांति को शामिल करने के लिए प्रत्येक कार्यवाही की समीक्षा की जानी चाहिए और उसे फिर से डिजाइन किया जाना चाहिए। हमारा अंतिम लक्ष्य शांतिपूर्ण और संघर्ष रहित समाज होना चाहिए। हमें अधिक सार्थक और प्रभावशाली परियोजनाओं के लिए काम करना चाहिए जिससे परिवर्तित और संघर्ष मुक्त दुनिया का वातावरण निर्मित हो सकें। हमारे विचार और मिशन में शांति की आशा शामिल होनी चाहिए। मानवजाति की सेवा की दूसरी सदी में हम सबको मिलकर पहले से कई अधिक सफल और प्रभावशाली बनना होगा।

महेश कोटबगी
रो ई निदेशक, 2021-23

का संदेश

सदस्यों की भागीदारी से क्लबों को मजबूती मिलती है

हमारे देश भर के क्लबों और मंडलों को धीरे-धीरे एवं सावधानीपूर्वक महामारी से पहले के गतिविधि स्तर पर फिर से आते देखना खुशी की बात है। मैंने यह भी देखा है कि जहाँ भी आवश्यकता होती है, क्लब प्रासंगिक तकनीक को अपनाने के लिए तत्पर रहते है। हालाँकि हमें असावधानी नहीं बरतनी चाहिए और आगे बढ़ते रहना चाहिए। जब मैं इसे अपने आस-पास देखता हूँ, तो मैं दो दशक पहले पहुँच जाता हूँ जब एक नए रोटेरियन के रूप में मैंने एक बच्ची को मेरे क्लब द्वारा उसके स्कूल को दान की गई नई बेंच से उतरने से इनकार करते हुए देखा था। मेरे मन में वो तस्वीर अंकित है जब उस बच्ची ने कहा कि वह अपने जीवन में पहली बार जमीन के अलावा किसी और चीज पर बैठी है और वह थोड़ी देर और उसका आनंद लेना चाहती है। वह न केवल उसके लिए बल्कि मेरे लिए भी जीवन परिवर्तक घटना थी। जीवन के प्रति मेरा दृष्टिकोण उस क्षण बदल गया। रोटरी के साथ मेरा बंधन और मजबूत हो गया।

मैं अपने क्लब के सदस्यों को व्यस्त रखने के महत्व पर जोर देने के लिए इस घटना को याद कर रहा हूँ क्योंकि कोई नहीं जानता कि कौन सा अनुभव जीवन परिवर्तक साबित होगा। लोग विभिन्न कारणों से रोटरी से जुड़ते है और उनमें से अधिकतर कारण उचित भी हो सकते है। हालांकि अगर कोई एक ऐसा धागा है जो उन सभी कारणों को एक साथ पिरोकर रखता है, तो वह है किसी न किसी रूप में व्यस्त रहने की इच्छा। कुछ लोग स्वयं ऐसे अवसरों की तलाश कर सकते है और कुछ लोग इसके लिए किसी का आग्रह किए जाने की प्रतीक्षा करते है। हमारे सभी जोन के क्लबों को इस बात को ध्यान में रखना चाहिए और उनके नेतृत्वकर्ताओं को चारों तरफ ध्यान देते हुए यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सभी सदस्य किसी न किसी गतिविधि या अपनी पसंद के किसी अन्य कार्य में व्यस्त रहें।

कई अध्ययनों से पता चला है कि जेननेक्स्ट अपने समुदाय में काम करने और अपने क्लबों के माध्यम से बदलाव लाने का एक व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करना चाहते है और यही वह प्रमुख कारण है जिसकी वजह से वे रोटरी में शामिल होते है या अभी भी जुड़े हुए है।

अच्छा करने के लिए अच्छा महसूस करना आवश्यक है। तो चलिए हम अपने सदस्यों को ऐसी गतिविधियों में शामिल होने के प्रासंगिक अवसर उपलब्ध कराने का संकल्प लें जिससे उन्हें हमारे संगठन में अपनी सदस्यता को लेकर अच्छा महसूस हो। यदि ऐसा होता है तो हम निश्चित रूप से 'आगे बढ़ेंगे और अधिक करेंगे।'

लोग सदस्यों के रूप में शामिल होते है। यह उनका अनुभव होता है जो उन्हें रोटेरियन बनाता है!

ए एस वेंकटेश
रो ई निदेशक, 2021-23

Board of Trustees

Shekhar Mehta RID 3291
RI President

Dr Mahesh Kotbagi RID 3131
RI Director & Chairman, Rotary News Trust

A S Venkatesh RID 3232
RI Director

Gulam A Vahanvaty RID 3141
TRF Trustee

Rajendra K Saboo RID 3080
Kalyan Banerjee RID 3060
Panduranga Setty RID 3190
Sushil Gupta RID 3011
Ashok Mahajan RID 3141
P T Prabhakar RID 3232
Dr Manoj D Desai RID 3060
C Basker RID 3000
Dr Bharat Pandya RID 3141
Kamal Sanghvi RID 3250

Executive Committee Members (2021–22)

Gaurish Dhond RID 3170
Chairman Governors Council

Anup Mittal RID 3011
Secretary Governors Council

Ramesh Meher RID 3030
Secretary Executive Committee

V Thirupathi Naidu RID 3160
Treasurer Executive Committee

Jacintha Dharma RID 3212
Member Advisory Committee

Editor
Rasheeda Bhagat

Senior Assistant Editor
Jaishree Padmanabhan

Rotary News Trust
3rd Floor, Dugar Towers,
34 Marshalls Road, Egmore
Chennai 600 008, India.
Phone: 044 42145666
rotarynews@rosaonline.org
www.rotarynewsonline.org

Now share articles from *rotarynewsonline.org* on WhatsApp.

चुनौती का सामना करें

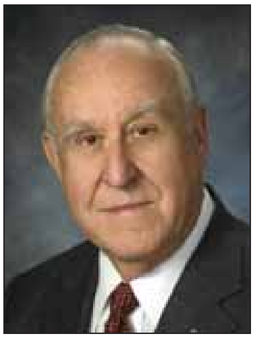

जब रोटरी ने पोलियो मुक्त दुनिया के सपने को साकार करने की साहसपूर्ण जिम्मेदारी उठाई, तो हमें पता था कि हमारे सपने को साकार करना आसान नहीं होगा। परंतु वर्ष 1988 से, अपने भागीदारों के साथ काम करते हुए, हम विश्वव्यापी मामलों की संख्या में 99.9 प्रतिशत की कमी लाए है। हालाँकि, हमें तब तक काम करना होगा जब तक कि यह पूरी तरह खत्म नहीं हो जाता। हमें हिम्मत से काम लेना होगा। जब तक यह लड़ाई खत्म नहीं हो जाती, हम निधीयन जारी रखेंगे।

24 अक्टूबर को विश्व पोलियो दिवस मनाते हुए, हम उत्साहित हो सकते है; हम प्रगति के मार्ग पर अग्रसर है, और वर्तमान में अफ़गानिस्तान और पाकिस्तान में खतरनाक पोलियोवायरस की कम संचरण दर के साथ, हमारे पास संचरण को रोकने का एक अनूठा अवसर भी है। हमारे पास एक नई रणनीति और टीका भी है जो हमारे उन्मूलन के प्रयासों को बढ़ावा देगा।

खतरनाक पोलियो वायरस को खत्म करने और वैक्सीन से उत्पन्न होने वाले पोलियोवायरस (cVDPV) के प्रसार को रोकने के लिए, ग्लोबल पोलियो इरैडकैशन इनिश्यटिव की नई रणनीति कई प्रमुख क्षेत्रों के आसपास केंद्रित है: स्थानीय और प्रकोप ग्रस्त देशों में अधिक तात्कालिकता और जवाबदेही लाने के लिए राजनीतिक वकालत, अधिक जोखिम वाले समुदायों के साथ बेहतर जुड़ाव, बेहतर परिचालन और पोलियो निरीक्षण, और व्यापक स्वास्थ्य कार्यक्रमों में पोलियो टीकाकरण का समावेशन। हमारी नई रणनीति के अलावा, रोटरी और उसके सहयोगी टाइप 2 (cVDPV) प्रकोप को दूर करने में मदद करने के लिए एक नए साधन, नोवेल ओरल पोलियो वैक्सीन (nOPV2), का उपयोग कर रहे है। इस नए टीके को समय के साथ अधिक से अधिक देशों में लगाया जा रहा है और यह पोलियो को हमेशा के लिए खत्म करने की हमारी खोज में एक आशाजनक प्रगति है। लेकिन अभी भी बहुत कुछ करना बाकी है। विशेष रूप से, हमें अफ़गानिस्तान में हाल ही के घटनाक्रम का सामना करने के लिए अपने लक्ष्यों के प्रति दृढ़ता से प्रतिबद्ध रहने की आवश्यकता है। एक गैर-राजनीतिक संगठन होने का नाते, रोटरी हर जगह बच्चों के स्वास्थ्य की रक्षा के लिए आवश्यक कार्य करती रहेगी। आइए पोलियो उन्मूलन में रोटरी की भूमिका के बारे में जागरूकता फैलाए। और आइए अपनी प्रतिबद्धता को दोगुना करें और पोलियो के लिए हर साल 50 मिलियन डॉलर जुटाते रहे। याद रखिए: बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन की वजह से, आपके रोटरी या रोटरेक्ट क्लब द्वारा किए गए किसी भी योगदान का मिलान 2 से 1 में किया जाएगा। अब हमारे लिए पोलियो को हराने के लिए साहस के साथ फिर से उठना पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।

जॉन एफ जर्म

ट्रस्टी अध्यक्ष, द रोटरी फौउंडेशन

TRF सहायता

महामारी के अत्यधिक कठिन दिनों के दौरान, जब वैयक्तिक बैठकें करना असंभव था, तब तकनीक ने निर्णायक भूमिका निभाई और आभासी रूप से जुड़े रहने के लिए हमें एक अमूल्य संसाधन प्रदान किया। Zoom सहित अन्य अच्छे प्लेटफार्मों ने हमें इस मुश्किल दौर में जुड़े रहने में हमारी मदद की। इसका नकारात्मक पहलू यह था कि व्यवसायों को असीमित नुकसान उठान पड़ा और बच्चे शारीरिक और सामाजिक संपर्क से अछूते रहे। साथ ही, आभासी शिक्षण ने हमारे बीच मौजूद आय के विशाल अंतर को भी सामने लाकर खड़ा कर दिया। गरीब बच्चे, जिनके परिवार स्मार्ट फोन नहीं खरीद सकते थे, स्कूली शिक्षा से चूक गए। हम आशा और प्रार्थना करते है कि अधिक से अधिक लोगों के टीकाकरण के साथ, हम जल्द ही महामारी को नियंत्रित एवं स्थिति को सामान्य होता देखेंगे।

इस मुश्किल घड़ी में, रोटेरियनों ने बदकिस्मत लोगों तक पहुंचने के अपने प्रयासों में कोई कसर नहीं छोड़ी। वास्तव में, उन्होंने अपने प्रयासों को दोगुना कर दिया; 2020-21 में, 143.55 मिलियन डॉलर के कुल निधीयन के साथ रिकॉर्ड 2,066 वैश्विक अनुदानों को स्वीकृत किया गया।

ध्यानाकर्षण क्षेत्रों के हिसाब से वैश्विक अनुदानों की संख्या और मूल्य इस प्रकार रहे है: रोगों का उपचार -1020 (74.75 मिलियन डॉलर), स्वच्छ जल, सफाई एवं स्वच्छता प्रदान करना - 341 (25.71 मिलियन डॉलर), स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को बढ़ाना - 264 (16.95 मिलियन डॉलर), शिक्षा का समर्थन - 184 (12.12 मिलियन डॉलर), माँ और बच्चे की रक्षा - 129 (8.38 मिलियन डॉलर) और शांति को प्रोत्साहन - 128 (5.64 मिलियन डॉलर)।

मैं आपको दीपावली की अग्रिम शुभकामनाएं देता हूं। इस खुशी के मौके पर मैं आपसे अपने दिल और बटुए, दोनों को खोलने का आग्रह करता हूं। संस्थान को दिया गया आपका उपहार जरूरतमन्द लोगों के लिए भलाई, शिक्षा और बेहतर स्वास्थ्य का प्रकाशपुंज स्थापित करेगा।

गुलाम ए वाहनवती

ट्रस्टी, द रोटरी फौउंडेशन

Rotary at a glance

Rotary clubs	:	36,866
Rotaract clubs	:	10,530
Interact clubs	:	16,496
RCCs	:	11,820
Rotary members	:	1,191,046
Rotaract members	:	223,785
Interact members	:	377, 039

As on September 20, 2021

Membership Summary

As on September 1, 2021

RI District	Rotary Clubs	No of Rotarians	Women Rotarians (%)	Rotaract Clubs	Interact Clubs	RCC
2981	130	6,005	7.68	34	51	227
2982	76	3,524	7.18	44	97	69
3000	135	5,259	9.34	89	259	213
3011	122	4,491	27.68	70	117	36
3012	127	3,990	26.44	60	76	61
3020	76	4,552	6.81	29	166	350
3030	95	4,982	14.85	115	237	361
3040	102	2,628	14.61	42	78	196
3053	66	2,725	16.15	31	48	117
3054	183	7,400	20.24	101	173	563
3060	111	5,078	14.77	62	69	147
3070	120	3,223	15.39	36	23	59
3080	96	3,999	13.03	125	156	113
3090	89	2,272	4.31	34	20	123
3100	104	2,304	10.24	10	19	146
3110	134	3,607	10.31	12	17	106
3120	88	3,547	16.49	59	30	55
3131	139	5,404	23.69	103	224	131
3132	89	3,475	10.53	30	122	165
3141	116	6,230	26.84	132	175	101
3142	102	3,586	20.80	76	137	80
3150	113	4,100	13.29	74	135	118
3160	76	2,442	6.39	14	20	82
3170	137	6,027	14.29	82	237	171
3181	86	3,381	8.75	32	194	115
3182	84	3,333	9.60	42	124	104
3190	157	6,709	18.56	151	195	69
3201	151	5,854	8.93	96	87	57
3203	87	4,551	8.17	71	232	36
3204	61	1,954	6.09	16	22	13
3211	145	4,741	7.72	6	24	133
3212	141	5,148	11.77	74	204	153
3231	96	3,579	7.74	28	81	419
3232	147	7,372	16.74	106	209	99
3240	101	3,519	15.83	57	402	216
3250	103	3,863	20.17	61	73	185
3261	86	3,058	17.89	14	23	44
3262	118	3,967	13.76	65	48	86
3291	163	3,966	22.89	130	95	642
India Total	**4,352**	**165,845**		**2,413**	**4,699**	**6,161**
3220	76	2,292	16.62	86	131	75
3271	127	2,026	16.44	88	134	24
3272	160	1,922	17.22	45	18	47
3281	302	8,404	19.12	261	144	208
3282	173	3,939	11.75	196	47	47
3292	152	5,990	16.79	164	126	127
S Asia Total	**5,342**	**190,418**		**3,253**	**5,299**	**6,689**

Source: RI South Asia Office

संजीवनी शैली से नन्हे दिलों को सुधारना

रशीदा भगत

मेरा विश्वास है कि हम उस सम्पदा के केवल संरक्षक हैं जो हमें ईश्वर ने हमें प्रदान की है; जो हमारे जन्म से पहले किसी और की थी, और हमारी मृत्यु के बाद, किसी और की हो जाएगी, ये कहना है विवेक गौड़ का जो श्री सत्य साईं हेल्थ एंड एजुकेशन ट्रस्ट के तीन ट्रस्टियों में एक है। ये ट्रस्ट भारत में शिशु हृदय शल्य चिकित्सा को समर्पित तीन चिकित्सा केंद्र का संचालन करता है। जिनका नाम है श्री सत्य साईं संजीवनी सेण्टर फॉर चाइल्ड हार्ट केयर जो छत्तीसगढ़ में रायपुर; हरियाणा में फरीदाबाद के पास पलवल; और नवी मुंबई में स्थित हैं।

रोटरी क्लब गुड़गांव हार्मनी इबेरिस, RID 3011 के एक सदस्य,गौड़ विनम्रता पूर्वक कहते हैं कि साईं बाबा ने उनकी मृत्यु से कुछ वर्ष पूर्व, श्रद्धालु सी श्रीनिवास को शिशुओं के लिए पूरी तरह से निशुल्क हृदय चिकित्सा उपलब्ध करवाने के लिए पांच हार्टकेयर अस्पताल की स्थापना करने के लिए कहा था। ''श्रीनिवास के इस सपने को साकार करने के लिए सुनील गावस्कर और उनके भक्तों के साथ मैं भी इस पुनीत कार्य में जुट गया। तीन केंद्रों की स्थापना हम पूर्व में कर चुके हैं और दो अन्य की स्थापना और करेंगे'', गौड़ कहते हैं। इन सभी ने अस्पतालों के निर्माण में अपना योगदान दिया है, जो जन्मजात हृदय दोष (CHD) के साथ पैदा हुए बच्चों को पूर्णतया निशुल्क चिकित्सीय उपचार उपलब्ध कराते हैं।

तीन साल पहले, गौड़ ने विमानन इंजीनियरिंग में अपने व्यवसाय से जल्दी सेवानिवृत्ति ले ली; अपना हिस्सा बेच दिया और वो पैसा इस परियोजना में निवेश कर दिया। लेकिन वो ये नहीं बताते कितना!

कुल मिलाकर, तीन अस्पतालों में लगभग ₹150 करोड़ का निवेश किया गया है, जिसमें ''परोपकारी लोगों, और वैश्विक अनुदान सहित विभिन्न रोटरी क्लब और सीएसआर फंड से पैसा आया है।'' उनका अनुमान है कि लगभग 2.5 मिलियन डॉलर रोटरी से आए हैं, ''जिसमें GG और सर्जरी के लिए बच्चों को प्रायोजित करने वाले क्लब शामिल हैं।''

एक अनुमान के अनुसार भारत में हर साल 3 लाख बच्चे CHD रोग के साथ जन्म लेते हैं और स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी और गरीबी के कारण, इनमें 4 में से 1 बच्चा अपनी पहली सालगिरह नहीं देख पाता।

एक CHD रोगी बच्चा इन अस्पतालों में दो सप्ताह तक रहता है, और ''उसके माता-पिता अपनी खाली जेब के साथ बिना पैसे प्रवेश ले सकते हैं, अपने बच्चे का निदान, इलाज और ऑपरेशन करवा सकते हैं और ज़रुरत पड़ने पर भविष्य में इलाज के लिए रुपयों की चिंता किए बिना अस्पताल छोड़ कर जा सकते हैं। अक्सर, बच्चे को ठीक करने के लिए कई प्रक्रियाओं की आवश्यकता होती है। और कुल तीन ट्रस्टियों के कारण, निर्णय शीघ्रतापूर्वक होते हैं।''

डॉक्टरों और अन्य कर्मचारियों को बाजार में चलन के अनुसार वेतन भुगतान पर, वे

कहते हैं: ''ठीक है, उन्हें सामान्य वेतन मिलता है, जिसकी तुलना बड़े निजी अस्पतालों से तो नहीं की जा सकती, जहां सालाना करीब ₹6 करोड़ तक के भुगतान किये जाते हैं। लेकिन ये वेतन राशी अत्यंत कठिन लक्ष्यों के साथ आती हैं जिन्हें सर्जन को पूरा करना होता है। पिछले साल जब मेरी माँ को दिल्ली के एक अस्पताल में भर्ती कराया था, तब मेरी मुलाकात एक सर्जन से हुई, जिसकी कमाई थी.... मुझे यकीन है आपको ये जान कर ज़बरदस्त झटका लगेगा.. ₹13 करोड़ प्रतिवर्ष!''

उनका कहना है कि यहां डॉक्टरों को सम्मानित वेतन मिलता है और साथ में आवास भी। लेकिन उनका सबसे बड़ा प्रतिफल ये है कि किसी मरीज को अत्यंत गरीब होने के कारण ना नहीं कहना पड़ता, जबकि निजी अस्पतालों में उन्हें अक्सर मना करना पड़ता था, ''भली भांति जानते हुए कि उस सर्जरी के बिना बच्चा मर जाएगा जिस का खर्च माता-पिता नहीं उठा सकते। और एक इंसान होने के नाते, इस चीज से उन्हें बहुत तकलीफ होती थी।''

आज संस्था को लगभग 9 वर्ष हो गए हैं ; पहले तीन वर्षों के लिए उन्हें जबानी जानकारी से ही मरीज मिलते थे। ''पर आज कई डॉक्टर जो उन्हें राहत नहीं दे सकते, कहते हैं आप सत्य साईं बाबा में चले जाओ।'' यहां तक कि सामान्य लोगों के परिवार में कम से कम एक स्मार्ट फोन होने के कारण, ''हम तक गूगल से ढूंढ कर पहुँच जाते हैं। साथ ही सरकारी अस्पताल भी, जहां गरीब से गरीब व्यक्ति भी सबसे पहले जाता है, मरीजों को हमारे पास भेजते हैं। हमारे पास भारत के लगभग हर कोने से बच्चे आते हैं मिजोरम से कश्मीर से कन्याकुमारी तक; हमारी प्रतीक्षा सूची अब 4,000 हो गई है।''

''हम किसी को भी निराश नहीं करते, और हमने पाकिस्तान, अफ़गानिस्तान, नेपाल, बांग्लादेश, श्रीलंका, फिजी, उजबेकिस्तान, नाइजीरिया, यमन, इथियोपिया, इराक आदि 14 विकासशील देशों के बच्चों का भी इलाज किया है। हमने फिजी और नाइजीरिया में चार अंतरराष्ट्रीय शिशु हृदय मिशन आयोजित किए हैं।''

उन्होंने जानकारी दी कि 2012 में शुरू होने के बाद से, इन केंद्रों में शिशु हृदय चिकित्सा के 135,000 से अधिक बहिरंग-रोगी शिशुओं का इलाज किया है और 16,000 से अधिक शिशुओं की ओपन हार्ट सर्जरी और बिना चीरफाड़ कैथेटर सर्जेरी से इलाज किया गया है, जिसकी लागत निजी अस्पतालों में ₹2-7 लाख के बीच रहती है, जबकि यहां ये लागत केवल ₹1.5 लाख है जिसमें से ₹75,000 गरीबों के लिए चलाई गई सरकारी योजनाओं के माध्यम से आते हैं।

रो ई निदेशक महेश कोटबागी उनकी ''जीरो रुपया अवधारणा'' से अत्यधिक प्रभावित हुए।

तंज़ानिया से 4 साल की इवानाह।

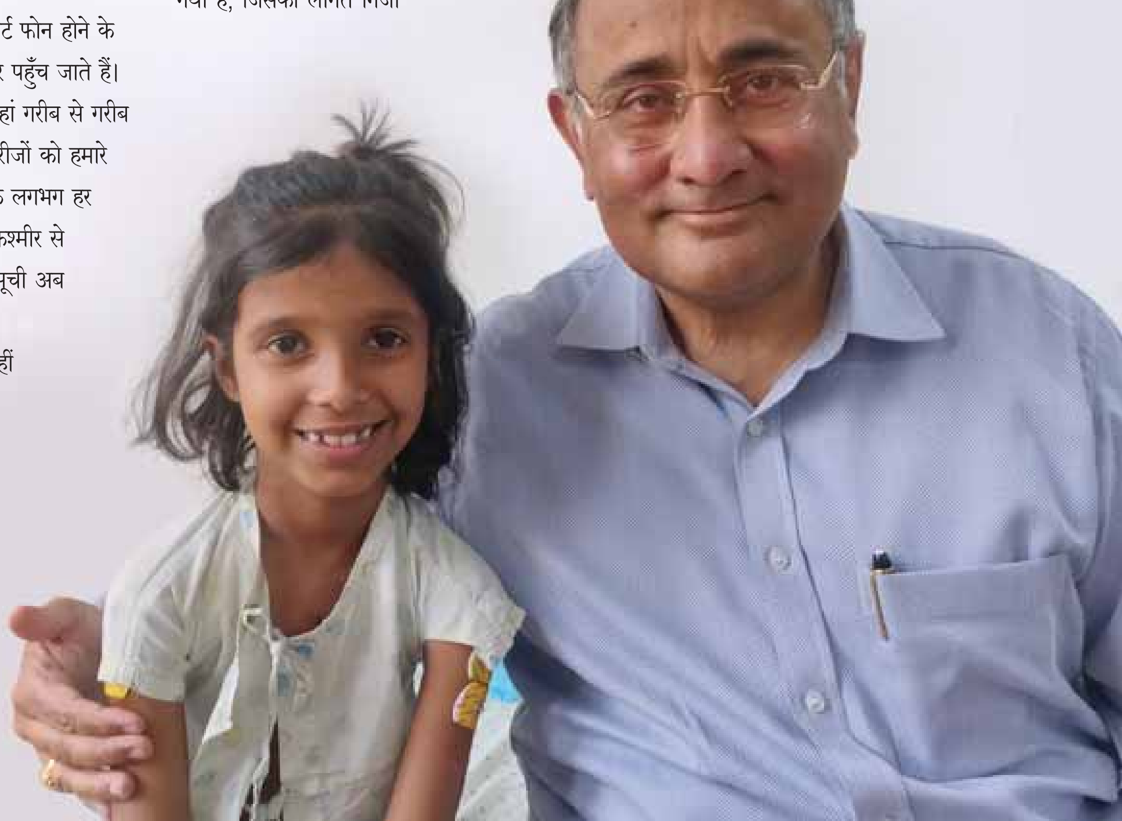

विवेक गौड़, ट्रस्टी, श्री सत्यसाई हेल्थ एंड एजुकेशन ट्रस्ट, एक लाभार्थी बच्चे के साथ।

उन्होंने अगस्त में रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता, पीआरआईडी कमल सांघवी और राज्यसभा सांसद विवेक तन्खा के साथ रायपुर अस्पताल का निरीक्षण किया था, जहां मेहता ने ₹1 करोड़ की लागत के ऑक्सीजन संयंत्र का उद्घाटन किया था, जिसे रोटरी क्लब रायपुर रॉयल, RID 3261 ने, टीआरएफ वैश्विक अनुदान के सहयोग से दान किया था।

एक डॉक्टर जो पुणे में स्वयं अस्पताल चलाते हैं, कोटबागी का कहना है कि आम तौर पर ह्रदय जन्मजात दोष को ठीक करने के लिए एक बाल चिकित्सा सर्जरी की लागत लगभग ₹5 लाख बैठती है, ''जिसमें प्री-सर्जरी डायग्नोस्टिक्स, ढेर सारे परीक्षणो, प्रयोगशाला की सेवाएं, कैथ उपचार, रक्त, दवाएं और अन्य वस्तुएं, सर्जरी, अस्पताल में रहने और ऑपरेशन के बाद का खर्च शामिल हैं। लेकिन यहां इसकी कीमत केवल ₹1.5 लाख है, और इसका भी आधा हिस्सा सरकारी योजनाओं से आता है।''

वे आगे कहते हैं, ''मैंने इस अस्पताल की तुलना धर्मार्थ सेवा कार्य करने वाले अन्य कई अस्पतालों से की है, लेकिन कोई इसके आसपास भी नहीं आता। उनके पास रायपुर अस्पताल में 150, हरियाणा के पलवल में 125 और नवी मुंबई के पास खारगर में 75 बेड हैं।'' सामान्यतः एक महीने में, संजीवनी अस्पताल में 350 से 500 के बीच सर्जरी होती है ; पहले ये औसत 500 था लेकिन कोविड के कारण, पिछले 18 महीनों में, संख्या घट गई। ''यह सर्जरी अपनेआप में एक बड़ी चुनौती है, अगर आप गौर करें कि नवजात गहन देखभाल इकाई में शिशु की चिकित्सा सर्जरी अत्यंत चुनौतीपूर्ण है। कई बच्चे बमुश्किल कुछ दिन या सप्ताह के होते हैं, और ये बच्चे डॉक्टर से बोल नहीं सकते कि मेरी सांस उखड़ रही है।''

बाल शल्य चिकित्सा इकाई के तहत ''नर्सिंग का कार्य सामान्य आईसीयू नर्सिंग जैसा नहीं है, बल्कि हफ्ते के सातों दिन 24 घंटे शिशु की देखभाल करना, जिसमें लंगोट बदलने या बच्चे को स्पंज विधि से स्नान कराने से लेकर उसे दूध पिलाना, निहायत ही हुनरमंद काम है'' कोटबागी कहते हैं।

यहां ह्रदय की जटिल शल्य चिकित्सा भी की जाती है; ''भले ही बच्चे की उम्र आज 20 साल हो, हम उसकी भी सर्जरी करते हैं, हाँ, लेकिन ऐसे मामले गिने चुने ही होते हैं। क्योंकि ज्यादातर ऐसे बच्चे 20 साल की उम्र से पहले ही मर जाते हैं'', गौड़ कहते हैं। उनका सबसे छोटा रोगी एक सप्ताह का शिशु था; कई बच्चों को विभिन्न प्रकार की सर्जरी की आवश्यकता पड़ती है, और ''हमें मालूम है कि अगर हमने नहीं की, तो कोई अन्य तो करेगा नहीं और शिशु की जान चली जाएगी'', ट्रस्टी कहते हैं।

जब मैं गौड़ से सर्जरी के लिए आ रहे बच्चों के लिंग अनुपात के बारे में पूछता हूं, क्योंकि हम जानते हैं कि आज भी कई घरों में एक लड़के की जान बचाना लड़की की जान बचाने से ज्यादा मायने रखता है, वो बताते हैं हालांकि लड़कियों की तुलना में लगभग 60 प्रतिशत लड़के आते हैं, ''अक्सर, हमारे यहां ऐसी कई महिलाएं आती हैं, और मुझे हमेशा उन पर गर्व होता है, जो अकेले अपनी बेटी के इलाज के लिए आती हैं, अक्सर अपनी मां के साथ, क्योंकि सीएचडी दोष की वजह से पिता और उसका परिवार बच्चे को त्याग देते हैं।''

RID कोटबागी एक लाभार्थी बच्चे के साथ।

दुर्भाग्य से, वे कहते हैं, बच्चे के दिल की दुरुस्तगी के बाद उन्हें परिवार का पुनर्मिलन भी देखने को मिलता है! पिता वापस आता है और बच्चे पर फिर से अपना अधिकार जताता है।

मैं ''गिफ्ट ऑफ़ लाइफ'' समारोह में भाग लेता हूं जिसे संजीवनी अस्पताल उन सभी बच्चों के लिए आयोजित करते हैं जो अपने दिल के इलाज के बाद ठीक होकर घर जाते हैं। झारखंड के पलामू की रहने वाली आलिया फातिमा की उम्र 3 साल के करीब है। वह सिर्फ एक महीने की थी, उसकी एक आंख में

तकलीफ हुई थी और उसी जांच के दौरान उसके सीएचडी दोष का पता चला था। ''उन्हें बताया गया था कि सर्जरी के लिए ₹6.5 लाख खर्च होंगे। वह परिवार की चौथी संतान है और उसके पिता जावेद अहमद जूते की एक छोटी सी दुकान चलाते हैं; परिवार के पास सर्जरी के लिए बिलकुल पैसे नहीं थे'', रविकुमार श्रीपदा ने बताया, जो रायपुर केंद्र का प्रबंधन करते हैं।.

10 अगस्त को आलिया का ऑपरेशन हुआ था और सिर्फ 10 दिनों में ठीक हो कर घर जाने के लिए तैयार थी, और एक बार जब उसके पारिवारिक डॉक्टर हरी झंडी दे देंगे तो वह स्कूल जाना शुरू कर देगी।

दक्षिता शरमिता की कहानी बड़ी मार्मिक है; जब उसकी मां ज्योति गर्भवती थी, तो सोनोग्राफ में भ्रूण के दिल में कुछ समस्या नज़र आई थी। जन्म के समय बच्चे का वज़न 3 किलो था, लेकिन जब वो 3 महीने की हुई तो उसे तेज सर्दी और खांसी की शिकायत होने लगी। मेडिकल कॉलेज अस्पताल में की गई एक इको से उसके दिल में एक बड़ा छेद नज़र आया। उसका परिवार हरियाणा के हिसार जिले से आया था और पिता रमेश शर्मा मुंबई में मैकेनिकल इंजीनियर थे। उन्हें कहा गया कि ऑपरेशन की तत्काल आवश्यकता है, वे तुरंत मुंबई के एक बड़े निजी अस्पताल में पहुंचे, जहां सर्जरी का खर्च ₹10-20 लाख बताया गया और एक भारी अग्रिम राशी की मांग की गई थी, और इसमें बहुत अधिक जोखिम बताया गया था। बेंगलुरु में भी एक अन्य अस्पताल ने ₹7 लाख बताई क्योंकि एक जटिल शल्य प्रक्रिया की आवश्यकता थी।

इस समय माता-पिता को एक व्हाट्सएप संदेश मिला जिसमें उन्हें रायपुर के श्री सत्य साईं संजीवनी अस्पताल के बारे में बताया गया था। वे बच्चे को यहां लाए, कहा ''हालाँकि जोखिम ज़्यादा था, लेकिन उनकी टीम उसे ठीक करने की

> **हम किसी को भी निराश नहीं करते, और हमने 14 विकासशील देशों के बच्चों का भी इलाज किया है। हमने फिजी और नाइजीरिया में चार अंतरराष्ट्रीय शिशु हृदय मिशन आयोजित किए हैं।**
>
> **विवेक गौड**
>
> ट्रस्टी, श्री सत्यसाई हेल्थ एंड एजुकेशन ट्रस्ट

इराक के कुर्दिस्तान से एक बच्चा अस्पताल में इलाज के लिए लाया गया।

बिलकुल ताज़ा तरीन दिल

एक बार ऑपरेशन हो जाने के बाद, व्यक्तिगत स्थिति के आधार पर, एक महीने, छह महीने या एक साल या दो साल बाद भी अनुवर्ती कार्रवाई पूरी लगन से की जाती है। तीन बच्चों में से दो, जिनका यहां ऑपरेशन किया गया था, अब वे बड़े हो गए हैं और उन्हें यहां अस्पताल में नौकरी भी मिल गई है; 21 वर्षीय एक लैब तकनीशियन बन गया है, ट्रस्टी विवेक गौड़ कहते हैं! वह कहते हैं, ''एक बार बच्चा जब वापस घर चला जाता है, तो हम 3-4 साल तक लगातार साल में एक बार फोन करके उसके स्वास्थ्य की जानकारी लेते रहते हैं कि बच्चा कैसा कर रहा है। क्या वह स्कूल जा रही है, आदि; शत-प्रतिशत बच्चे वापस स्कूल जाते हैं और स्वस्थ जीवन गुजारते हैं।''

इसे संक्षेप में वह ऐसे समझाते हैं : ''मेरा दिल 60 साल का है और 60 साल तक मैंने जितना भी घी, तेल और चॉकलेट खाया है, वो सब इसमें भरा हुआ है। लेकिन 3 या 6 महीने के बच्चे का दिल अत्यंत शुद्ध और साफ होता है, और उसे केवल जन्मजात या तकनीकी दोष के कारण ही तकलीफ होती है। जब वह दोष ठीक हो जाता है तो वह एक नए दिल की तरह कार्य करता है। इसीलिए, एक सप्ताह के भीतर ही बच्चा वार्ड के चारों ओर दौडने लगता है, फुटबॉल खेलने लगता है, माँ उसे नियंत्रित नहीं कर सकती , आखिर 2 या 3 साल बाद बच्चे ने जीवन में पहली बार अपने भीतर ऊर्जा महसूस की है।''

रोटरी की सौगात 124 बच्चों के लिए, लागत ₹2 करोड़

रोई अध्यक्ष मेहता के साथ रायपुर में संजीवनी अस्पताल का निरीक्षण करने में साथ रहे रो इ निदेशक महेश कोटबागी, संजीवनी अस्पतालों के लोकाचार से बहुत प्रभावित हुए और कहा कि ''हमारे अध्यक्ष, शेखर मेहता, इस अक्टूबर में 62 वर्ष के हो गए हैं । उन्हें जो सबसे अच्छा तोहफा मैं दे सकता हूं, वह है उनके जन्मदिन का जश्न मनाने के लिए 62 मुफ्त दिल के ऑपरेशन प्रायोजित करना।'' सुन कर शेखर बहुत प्रभावित हुए, और उन्होंने कहा कि ''अगर महेश 62 ऑपरेशन प्रायोजित कर रहे हैं, तो मैं अतिरिक्त 62 प्रायोजित सर्जरी के साथ इसे मैच करता हूँ।''

प्रत्येक सर्जरी की औसत लागत लगभग ₹1.5 लाख आंकी गई है, इसका मतलब रोटरी द्वारा यह ₹2 करोड़ की परियोजना होगी। कोटबागी कहते हैं कि ''मैं रोटरी न्यूज़ के माध्यम से व्यक्तिगत रोटेरियनों और क्लबों से एक या एक से अधिक सर्जरी प्रायोजित करने की अपील करता हूं। हमारे पास जीजी का विकल्प भी है लेकिन जीजी बहुत लोकप्रिय है और इसकी मांग बहुत है, इसके अलावा सीएसआर फंड के लिए हम कॉरपोरेट्स से भी संपर्क कर सकते हैं।''

उन्होंने आगे कहा कि ''जब मैंने अपने दोस्तों से कहा कि मैं कुछ बच्चों की जान बचाना चाहता हूं, क्या आप मदद कर सकते हैं ... इसकी लागत करीब ₹1.5 लाख होगी और आपको कर में भी छूट मिलेगी, रोटरी और रोटरी के बाहर दोनों से मुझे 20 प्रायोजक मिल गए।''

कोटबागी ने कहा कि जब वह वाईका दौरा कर रहे थे तो उनकी मुलाकात केन्या से आई एक मां और उसके बच्चे से हुई। ''पूर्वी अफ्रीकी देशों में शिशु की नि:शुल्क हार्ट सर्जरी के लिए, प्रतीक्षा अवधि 8-10 साल है। एक केन्याई महिला, जो अपने बच्चे का ऑपरेशन करवाने के लिए भारत आई थी, उसे यहां रेफर कर दिया गया और वह इसे पूरी तरह से नि:शुल्क करवा कर हैरान रह गई।''

उन्होंने आगे कहा: ''यदि कोई व्यक्ति किसी बच्चे की ज़िंदगी बचाने चाहता है तो बच्चे को प्रायोजित करने के लिए वह मुझसे संपर्क कर सकता है, और अध्यक्ष शेखर के 62वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में 124 (62+62) लोगों की जान बचाने के हमारे लक्ष्य को पूरा करने में सहयोग कर सकता है।''

वह एक डॉक्टर के रूप में अपने जीवन में आये एक मार्मिक घटना का ज़िक्र करते हैं। ''एक बार पूर्वी अफ्रीका में एक चिकित्सा मिशन के दौरान, मैंने अफ्रीका में अश्वेतों के खिलाफ प्रचलित नस्लवाद के बारे में एक महिला से पूछा, और उसने जवाब दिया, मुझे नहीं पता कि एक अश्वेत या श्वेत इंसान में क्या फर्क होता है। ''मुझे सिर्फ इतना पता है कि जब मैंने बच्चे को जन्म दिया था तो वह नीला था (उसके दिल में छेद था), जबकि उसी मुहल्ले में, उसी दिन, एक अन्य महिला ने एक गुलाबी बच्चे को जन्म दिया था (एक सामान्य दिल के साथ)। इसलिए, मैं केवल एक नीले (बीमार) बच्चे और एक गुलाबी (स्वस्थ) बच्चे का फर्क जानती हूं।''

रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता और राशि अस्पताल में एक बच्चे के साथ।

इस अस्पताल में एक विचित्र अवधारणा है, जिसे वर्किंग मेडिटेशन नाम दिया गया है, वर्षों से, बच्चों के माता-पिता, जिनके बेटे बेटियों की देखभाल अस्पताल के कर्मचारी करते हैं और करने के लिए कोई काम नहीं है, उन्होंने स्वयंसेवा करना शुरू कर दिया। इसलिए, जब दिलेश्वर की माँ रसोई में रोटियाँ बना रही थी, तो कई पिता, उनमें से कुछ कुशल किसान बगीचे में सहायता कर रहे थे। अन्य लोग फर्श और शौचालय साफ रखते हैं; प्लंबिंग या बिजली के उपकरणों में प्रशिक्षित लोग संबंधित उपकरणों की मरम्मत करने में सहायता करते हैं। कोटबागी कहते हैं, यह एक बिलकुल नई अवधारणा है जो पिछले कुछ वर्षों में विकसित हुई है. माता-पिता का नया समूह जब पुराने माता-पिता को मदद करते हुए देखता है तो अपने आप को स्वयंसेवी के रूप में प्रस्तुत कर देता है, जो भी वो जानते हैं... खाना बनाना, सफाई करना या सब्जियां उगाना!

रोटरी के साथ संजीवनी का घनिष्ठ संबंध रहा है और कोटबागी कहते हैं कि एक ट्रस्ट अस्पताल होने के नाते, संजीवनी केंद्र के दरवाजे रोटेरियन और अन्य लोगों से हर तरह की मदद के लिए खुले हैं। ''आप दान कर सकते हैं, उपकरण दे सकते हैं; हाल ही में मैंने देखा कि एक अखिल महिला क्लब रोटरी क्लब रायपुर क्वींस ने इसके रायपुर परिसर में एक सुंदर सभागार का निर्माण करवाया है। एक मंजिल पर आराधना कक्ष बनाया गया है, जिसमें कोई मूर्ति नहीं है। यहां किसी भी धर्म का कोई भी व्यक्ति आ कर पूजा कर सकता है। इसकी संरचना एक सुंदर प्रिज्म की भांति है और यह विशाल कक्ष पूरी तरह से खाली है, जहां कोई भी प्रार्थना कर सकता है, शांति प्राप्त कर सकता है।''

रायपुर के साईं संजीवनी अस्पताल में ऑक्सीजन उत्पादन संयंत्र के उद्घाटन के अवसर पर रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता के साथ (दाएं से) रज्जो सैनी, राशी, PDG गण रंजीत सिंह सैनी, विवेक तन्खा, PRID कमल संघवी, RID महेश कोटबागी और DGE शशांक रस्तोगी।

भरसक कोशिश करेगी'', श्रीपाद कहते हैं।

नवंबर 2015 में सर्जरी सफलतापूर्वक की गई थी; ''उसकी पोस्ट-ऑपरेटिव अवधि बहुत ही प्रचंड रही थी। उसे बार-बार बाहर निकाला गया और फिर से इंट्यबेट किया गया, ट्रेकियोस्टोमी से गुजरना पड़ा और आखिरकार वेंटिलेटर से हटा दिया गया।'' 8 फरवरी को उसे अस्पताल से छुट्टी मिल गई थी, ''लेकिन उसका पहला जन्मदिन पूरे साईं परिवार के साथ मनाने से पहले नहीं!'' पिता ने कहा: ''सच तो ये है कि हमारा घर जाने का बिलकुल भी मन नहीं है; जो प्यार हमें यहां मिला, उसे कहीं और पाने का सपना तो हम देख ही नहीं सकते।''

नन्हा दिलेश्वर भी अपने दिल की मरम्मत के बाद घर लौटने के लिए तैयार है, और उसके कृतज्ञ माता-पिता, प्रमाण पत्र लेते हुए चिंतामुक्त नज़र आते हैं। उसके पिता, मेघनंद माखी ओडिशा में कालाहांडी के अत्यंत गरीब इलाके से हैं। वह एक ड्राइवर है और दिलेश्वर को बुखार आने पर जब वे उसे डॉक्टर के पास ले गए, उसकी और उसकी पत्नी की हालत खराब हो गई थी, वो अब 7 साल का हो गया है, पर उस समय केवल 18 दिन का था और उसे कहा गया था कि बच्चे के दिल की स्थिति खराब थी। उन्हें दिलेश्वर को किसी बड़े अस्पताल जाने के लिए कहा गया; एक रिश्तेदार ने उन्हें संजीवनी के बारे में बताया, और वे उसे 2016 में यहां लाये थे । हाल ही में उसका ऑपरेशन किया गया और अब उसने स्कूल जाना शुरू कर दिया है।

गावस्कर के बारे में गौड़ कहते हैं: ''धन जुटाने में उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है और वह भी सत्य साईं बाबा के भक्त हैं, इसलिए हमारे साथ है; हम उन्हें पहले से जानते हैं। और सोने पे सुहागा ये, कि वह एक क्रिकेट सेलिब्रिटी हैं।''

अगले दो केंद्रों के लिए, ये ट्रस्टी पूर्वी यूपी या बंगाल में एक शहर की तलाश कर रहे हैं ''क्योंकि यूपी, बंगाल, बिहार और झारखंड के बच्चों को हमारी मदद की आवश्यकता अधिक है क्योंकि वहां जनसंख्या घनत्व भी अधिक है। अगर हमें थोड़ी जमीन मिल जाए तो इन केंद्रों का निर्माण हो सकता है।''

आम तौर पर हृदय जन्मजात दोष को ठीक करने के लिए एक बाल चिकित्सा सर्जरी की लागत लगभग ₹5 लाख बैठती है, लेकिन यहां इसकी कीमत केवल ₹1.5 लाख है, मैंने इस अस्पताल की तुलना धर्मार्थ सेवा कार्य करने वाले अन्य कई अस्पतालों से की है, लेकिन कोई इसके आसपास भी नहीं आता।

RID महेश कोटबागी

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

our commitment to diversity, equity, and inclusion

Rotary

At Rotary, we understand that cultivating a diverse, equitable, and inclusive culture is essential to realising our vision of a world where people unite and take action to create lasting change.

We value diversity and celebrate the contributions of people of all backgrounds, across age, ethnicity, race, colour, disability, learning style, religion, faith, socioeconomic status, culture, marital status, languages spoken, sex, sexual orientation, and gender identity as well as differences in ideas, thoughts, values, and beliefs.

Recognising that individuals from certain groups have historically experienced barriers to membership, participation, and leadership, we commit to advancing equity in all aspects of Rotary, including in our community partnerships, so that each person has the necessary access to resources, opportunities, networks, and support to thrive.

We believe that all people hold visible and invisible qualities that inherently make them unique, and we strive to create an inclusive culture where each person knows they are valued and belong.

In line with our value of integrity, we are committed to being honest and transparent about where we are in our DEI journey as an organisation, and to continuing to learn and do better.

Download a copy of Rotary's commitment to DEI at ***rotary.org/dei.***

Dear Rotary members,

In Rotary, we celebrate diversity, equity, and inclusion. It doesn't matter who you are, who you love, how you worship, whether you have a disability, or what culture or country you (or your family) are from. All that matters is that you want to take action to create lasting change.

Rotary is working to ensure that everyone sees us as a just and welcoming organisation. Diversity has long been one of our core values, and we're proud of the organisation we've built. But there's more we can do to exemplify diversity, equity and inclusion (DEI); to expand our ability to reflect the communities we serve; and to respond to our communities' needs.

Based on input from our DEI Task Force, Rotary International's Board of Directors strengthened the DEI statement we adopted in 2019. The result is a heightened commitment to diversity, equity, and inclusion focused on celebrating everyone's contributions, advancing equity, and creating an inclusive culture where each person knows they are valued.

Diversity, equity, and inclusion are not political issues. Each of us has the right to be treated with dignity and respect, to have our voices be heard, and to access the same opportunities to succeed and lead at Rotary. Our members consistently tell us that being a welcoming organisation is vital to our future and that by being diverse and inclusive is how we'll remain the preeminent place for people of action to connect with one another and make a difference.

We look forward to your continued support as we make Rotary more diverse, equitable and inclusive, ensuring that everyone who engages with Rotary knows they are valued and belong.

Shekhar Mehta
RI President, 2021-22

Jennifer Jones
RI President, 2022-23

5 ways your club can support diversity, equity and inclusion

1. Share our updated statement about Rotary's commitment to DEI with your members via email or at a club meeting.
2. Post the updated statement to your club website and social media accounts, and link to it in your club's email signatures.
3. Use the statement to discuss how your club can be more diverse, equitable, and inclusive for current and future members.
4. Encourage your fellow members to be respectful of one another and speak up when a person's actions don't reflect our ideals and values.
5. Expand your knowledge by taking a DEI course in the Learning Center.

Find more resources at *rotary.org/dei.*

© Rotary

रोटरी के ताज में अफ्रीका एक अनतराशा नगीना है: रो ई अध्यक्ष मेहता

रशीदा भगत

रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता ने अगस्त और सितंबर का काफी समय सात अफ्रीकी देशों की यात्रा में व्यतीत किया (कैमरून, घाना, नाइजीरिया, इथियोपिया, केन्या, युगांडा और आइवरी कोस्ट), और इस बात का ध्यान रखा कि प्रत्येक देश में उनकी मुलाक़ात राष्ट्र प्रमुख से हो और उन कई मुद्दों पर चर्चा की जहां रोटरी उनके स्थानीय समुदायों की मदद कर सकती है, रोटरी न्यूज को दिए एक साक्षात्कार में उन्होंने बताया।

कुछ अंश:

रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता के साथ इथियोपिया की राष्ट्रपति सहले-वर्क ज़ेवडे।

रो इ अध्यक्ष के रूप में आपने अफ्रीका का दौरा करने का निर्णय किया - 7 - देश - 20 - दिनों में । अफ्रीकी महाद्वीप को इतना समय और प्राथमिकता क्यों?

दक्षिण एशिया के अलावा, अगर सदस्यता में वृद्धि की और सेवा परियोजनाओं की कहीं बड़ी संभावना है, तो मुझे लगता है कि यह अफ्रीका में ही है। मैं वहां कभी नहीं गया लेकिन मेरा हमेशा से यही मानना रहा है। जब से सेवा रोटरी का मुख्य आधार बनी है, हमारा संगठन उन सभी जगहों पर फल-फूल रहा है जहाँ - जहाँ सेवा की आवश्यकता है। ऐसे स्थानों पर हम सेवा परियोजनाओं के माध्यम से रोटरी द्वारा किये गए कार्य प्रदर्शित भी कर सकते हैं। यदि भारत और

शेष दक्षिण एशिया में रोटरी प्रगति कर रही है, तो इसका मुख्य कारण यह है कि हम जो कार्य प्रदर्शित करते हैं और लोग रोटरी के माध्यम से उन कार्यों में भाग लेना चाहते हैं।

लेकिन किसी ना किसी कारण से अफ्रीका में इसकी संभावनाओं पर गौर नहीं किया गया, इसलिए मैंने अफ्रीका जाने का निर्णय लिया, और वर्ष के अंत के बजाय मैं शुरू में जाना चाहता था, ताकि यदि सदस्यता में बढ़त करनी है तो शुरू से इस पर ध्यान दिया जा सके, जिससे सदस्यता में वृद्धि हो सके। और मुझे लगता है कि इस युक्ति से लाभ हुआ है।

क्या आप इसका उदाहरण दे सकते हैं?

हम कैमरून की राजधानी याउन्डे में आयोजित ज़ोन 22 की इंस्टिट्यूट में गए थे; वहां अफ्रीका के 54 में से 52 राष्ट्र आये थे। हमने वहां अद्भुत विविधता देखी... लगभग 400 ने व्यक्तिगत रूप से और 900 ने ऑनलाइन भाग लिया था। अफ्रीका के साथी रोटेरियनों से व्यक्तिगत मुलाकात, उनसे हुई बातचीत और जीवन में परिवर्तन लाने के लिए रोटरी के माध्यम से उन्हें सेवा करने के लिए प्रोत्साहित करना, काफी सशक्त रहा। अपनी यात्रा के दौरान, 17 में से 9 मंडल

सरकार के प्रमुखों से मैंने कहा कि टीके खरीदने के अलावा, हमें बताएं कि आप क्या चाहते हैं और हम यहां मदद करने के लिए हैं। जागरूकता पैदा करना एक बड़ी चुनौती है, वहां वैक्सीन को ले कर कई भ्रांतियां हैं।

दक्षिणावर्त

घाना के राष्ट्रपति नाना अकुफो-एडो के साथ रो ई अध्यक्ष मेहता और राशि।

आइवरी कोस्ट के प्रधान मंत्री पैट्रिक जेरोम अची के साथ रो ई अध्यक्ष मेहता और राशि।

केन्या के राष्ट्रपति उहुरू केन्याटा के साथ।

नाइजीरिया के राष्ट्रपति मुहम्मदु बुहारी के साथ।

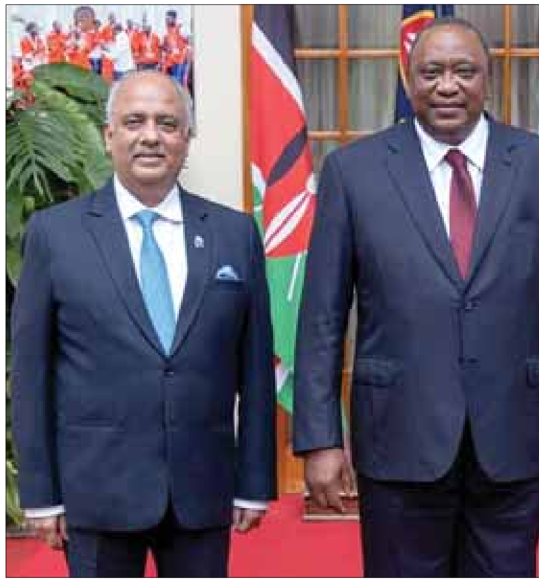

अध्यक्षों से हमारी मुलाक़ात हुई। मैंने उनसे अपने सदस्यता अध्यक्षों को भी साथ लाने का अनुरोध किया था। जब उनसे सदस्यता लक्ष्य के बारे में पूछा गया तो जवाब था की वे सामूहिक रूप से 12,000 नए सदस्य जोड़ेंगे।

उस क्षेत्र में कुल 17 गवर्नर हैं, इसलिए मैंने एक अनुमान लगाया था कि इस वर्ष 20,000 नए सदस्य जुड़ सकते हैं। अगर ऐसा नहीं भी होता है, तो 15,000 की संख्या से भी मुझे खुशी होगी, क्योंकि पहले 5,000 का अनुमान दिया गया था, जो अफ्रीका जैसे विशाल महाद्वीप के लिए मुझे काफी कम लगा था। पर अब मुझे विश्वास है कि सदस्यता में शुद्ध बढ़त 15,000 के आसपास रहेगी।

रोटरी को सही तरीके से पेश करना ज़रूरी है। हमारे द्वारा किये गए महान कार्य हमारी सार्वजनिक छवि के निर्माण में योगदान देते हैं।

सोशल मीडिया पर डाली गई एक पोस्ट में आपने कहा था कि आप एक परियोजना से सबसे ज्यादा प्रभावित हुए थे जहां करीब 13 वर्षीय लडकियां दुबारा इस्तेमाल करने योग्य सैनिटरी पैड बनाती हैं। हमें इसके बारे में विस्तार से बताएं, क्योंकि यह लड़कियों को सशक्त करने से सम्बद्ध है, और आपके अध्यक्षीय कार्यकाल के प्रिय विषयों में भी है।

हाँ, मुझे यह जानकर बहुत खुशी हो रही है कि लड़कियों को सशक्त बनाने के कार्यक्रम ने इतनी अच्छी तरह से गति पकड़ी है। मैं जहां भी गया, लोग इसे ले कर बहुत

ही संवेदनशील थे और मैं जहां भी जाता हूं, सबसे पहले लड़कियों को सशक्त करने वाली परियोजनाएं देखने जाता हूँ ... चाहे वह कैमरून हो या प्राग में आयोजित इंस्टिट्यूट, लड़कियों को सशक्त बनाना मुख्य कार्यक्रम था और राशि और मैंने इससे सम्बंधित कई प्रोजेक्ट देखे।

कैमरून की राजधानी याउंडे में, हमें *पैड-ए गर्ल* नामक एक कारगर अभियान देखने का अवसर मिला। रोइ मंडल 9141 ने दो दिवसीय गहन प्रशिक्षण सत्र का आयोजन किया था जिसमें 500 से अधिक लड़कियों को पुन: प्रयोज्य सैनिटरी पैड बनाने का प्रशिक्षण दिया गया। 13 साल तक की छोटी लड़कियों को स्वयं के लिए सैनिटरी पैड बनाते देखना अनुभव अवर्णनीय रहा। हमने देखा सभी लड़कियां एक बड़े हॉल में बैठी पुन: प्रयोज्य सैनिटरी पैड सिल रही थीं। और राशि भी वहीं उनके साथ बैठ गई और एक पैड उसने भी सिला। इस व्यवसाय में लगी एक कंपनी के प्रतिनिधि इन युवा लड़कियों को प्रशिक्षण, सामग्री की आपूर्ति, उनके काम की निगरानी और गुणवत्ता का नियंत्रण कर रहे थे। उनका उद्देश्य हैं 2,000 लड़कियों को प्रशिक्षित करना जो आगे चलकर 20,000 को प्रशिक्षित कर सकती हैं।

एक किशोरी को दो साल तक डिस्पोजेबल सैनिटरी पैड का इस्तेमाल करने की कीमत आज 50 डॉलर पड़ती है। जबकि पुन: प्रयोज्य नैपकीन की लागत अप्रत्याशित रूप से कम हो कर केवल 2 डॉलर तक रह जाती है, इस तरह प्रति लड़की 48 डॉलर की बचत होगी। और एक बार उपयोग

ऊपर: रो ई अध्यक्ष मेहता और राशि सरकार के मुख्य सचेतक थॉमस तैयबवा (बाएं से चौथे) और रोटेरियनों के साथ युगांडा की संसद के बहार।

*नीचे: रो ई अध्यक्ष मेहता RC युगांडा द्वारा आयोजित एक अनुदान संचय **#RotaryCancerRun10** के लिए पूरी तरह तैयार। उनके दाहिनी ओर पूर्व रो ई उपाध्यक्ष यिंका बाबालोला हैं।*

करने के बाद पैड का निस्तारण नहीं करने से, रोटरी के नवीनतम और फोकस के सातवें क्षेत्र, पर्यावरण को होने वाले फायदे देखें। वास्तव में इस से हमारे कई फोकस क्षेत्रों पर प्रभाव पड़ता है - पर्यावरण, लड़कियों को सशक्त बनाना, स्वास्थ्य और स्वच्छता। इस परियोजना को देख कर मैं द्रवित हो उठा था।

और कौन सी विशिष्ट परियोजनाओं ने आपको प्रभावित किया?

आंतरिक रूप से विस्थापित आबादी (IDP) में रहने वाली वाली लड़कियों को छात्रवृत्ति देना, अफ्रीका के कई क्षेत्रों में ये एक विकट समस्या है, जहां आतंकवादी गतिविधियों के कारण लोग विस्थापित होते रहते हैं। इन लड़कियों को अपने ही देश में अपने घरों से दूर रहना पड़ा और वैकल्पिक व्यवस्थाओं में अपना जीवन गुजारना पड़ा है। रोटरी इन लड़कियों को शिक्षित करने में भी सहायता कर रही है ।

मैंने वृक्षारोपण पर एक विशाल परियोजना में भी भाग लिया, आइवरी कोस्ट और केन्या में, जहां रोटेरियन 10 मिलियन पौधे देने जा रहे हैं।

राष्ट्राध्यक्षों से चर्चा में एक प्रमुख विषय टीकाकरण में रोटरी की मदद के सम्बन्ध में भी था। लेकिन क्या अफ्रीकी देशों के सामने सबसे बड़ी चुनौती कोविड वैक्सीन की उपलब्धता से संबंधित नहीं है?

एक बात स्पष्ट हैं; हम टीके उपलब्ध करवाने के क्षेत्र में दखल नहीं देंगे, क्योंकि इसका तात्पर्य होगा टीके खरीदना। रो ई ने ये निर्णय किया है कि आज भी पोलियो उन्मूलन पर पूरा ध्यान है और हम कोविड के टीके नहीं खरीदेंगे।

इसलिए जब मैं सरकार के प्रमुखों से मिला, मेरा नजरिया इस पहलू पर साफ़ था ... मैंने उनसे कहा कि टीके खरीदने के अलावा, हमें बताएं कि आप क्या चाहते हैं और हम यहां मदद करने के लिए हैं। जागरुकता पैदा करना एक बड़ी चुनौती है, वहां वैक्सीन को ले कर कई भ्रांतियां हैं। लोग टीके लगवाना ही नहीं चाहते हैं। कैमरून में, कुछ रोटेरियनॉ सहित, सामान्य धारणा यह थी, हम ऐसी जड़ी-बूटियाँ लेते हैं कि हमें कोविड हो ही नहीं सकता और भी इसी तरह की कई धारणाएं। हो सकता है कि उनकी आंतरिक प्रतिरक्षा प्रणाली और रोग प्रतिरोधक क्षमता बेहतर हो, खैर, कारण कुछ भी हो, उन देशों में कोविड के मामले, अमेरिका या भारत की तुलना में बहुत कम है बहुत कम लोग इससे प्रभावित हुए हैं या काल का ग्रास बने हैं।

तो मैंने उनको सुझाव दिया कि टीकाकरण करने, कोल्ड चेन बनाए रखने, जागरूकता बढ़ाने आदि से संबंधित हर प्रकार की सहायता करने के लिए रोटेरियन तैयार हैं।

अफ्रीका में रोटेरियन को और किन क्षेत्रों पर ध्यान देने की आवश्यकता है?

अफ्रीका रोटरी के ताज का अनतराशा नगीना है। बस थोड़ा सा चमकाने की जरूरत है और इसे तराशने के लिए रोटरी नेतृत्व को वहां जाना होगा। मुझे खुशी है कि मैं अफ्रीका गया और अपने राष्ट्रपति कार्यकाल में वहां दो बार और

रोटरी पीस सेंटर, मेकरेरे विश्वविद्यालय, युगांडा में रो ई अध्यक्ष मेहता।

सभी देशों में, मुझे, रो ई अध्यक्ष के रूप में, वही सम्मान मिला जो राष्ट्र प्रमुख के लिए आरक्षित रहता है। यह देखकर बहुत अच्छा लगा कि अफ्रीका में रोटरी इतनी परिपक्व है, इसकी उत्कृष्ट छवि है और आपसी संपर्क काफी बेहतर है।

ऊपरः इथियोपिया में रोटरेक्टर्स के साथ रो ई अध्यक्ष मेहता और राशि।
***नीचेः** प्राग, चेक रिपब्लिक में एक बहु-क्षेत्रीय संस्थान में **PRIP** होलगर नेक (बाएं से दूसरे) के साथ।*
***ऊपर दाईं ओरः TRF** डोनर रिकॉग्निशन डिनर में इथियोपिया में।*

जाना होगा; पहले मार्च 2022 में मोजाम्बिक में प्रेसिडेंशियल कांफ्रेंस के लिए और उससे पहले, मैं उत्तरी अफ्रीका - मिस्र, मोरक्को, ट्यूनीशिया जैसे राष्ट्रों का दौरा करना चाहता हूं, क्योंकि अफ्रीका के उन भागों में सदस्यता अधिक है।

क्या आप अपनी अफ्रीकी यात्रा के किसी अन्य पहलू पर प्रकाश डालना चाहेंगे?

मेरी यात्रा का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह था कि प्रत्येक स्थान पर मैंने उस देश के राष्ट्रपति या प्रधान मंत्री से मिलने के लिए ज़ोर दिया। और यही इसकी विशिष्टता रही, जो कि बहुत महत्वपूर्ण है। मुझे लगता है कि लोगों की नजर में रोटरी की

अहमियत का इस बात पर निर्भर करेगी कि हम इसे किस तरह से पेश करते हैं। रोटरी को सही तरीके से पेश करना ज़रूरी है। हमारे द्वारा किये गए महान कार्य हमारी सार्वजनिक छवि के निर्माण में योगदान देते हैं। जब तक लोगों को हम अपनी रोटरी के किस्से नहीं सुनाएंगे, किसी को भी रोटरी के बारे में पता नहीं चलेगा। लेकिन ये किस्से सर्वो च्च स्तर पर सुनाने होंगे।

मैंने रोटरी की कहानी सर्वोच्च स्तर पर सुनाने का निर्णय किया; अफ्रीका में जितने भी राष्ट्राध्यक्षों से मुलाकात की मैंने प्रत्येक के साथ यही किया। मैं फिर से दोहराना चाहता हूं कि हम खुद को किस तरह से पेश करते हैं, ये महत्वपूर्ण है। यदि हम इसे लापरवाही से और साधारण रूप में करेंगे, तो हमें भी सतही तौर पर ही लिया जाएगा। एक आभा मंडल का सृजन करने की आवश्यकता है ।

याउन्डे, कैमरून में अध्यक्ष मेहता,राशि के साथ। चित्र में राशि एक रीऊज़बल सैनिटरी पैड की सिलाई कर रही हैं।

मेरी यात्रा का दूसरा महत्वपूर्ण पहलू यह था कि प्रत्येक राष्ट्राध्यक्ष को, रोटरी के पास कुछ ना कुछ ज़रूर था, उनसे अनुरोध करने या उनसे पूछने के लिए नहीं।

क्या आप इस पर प्रकाश डाल सकते हैं?

रो ई की ओर से, मैंने सरकार के प्रमुखों से कहा कि अगर आपको हमारे फोकस क्षेत्रों में कुछ भी करने की ज़रूरत महसूस हो तो हम आपकी मदद ज़रूर करेंगे। उदाहरण के लिए, मैंने जिन अफ्रीकी देशों का दौरा किया, वहां स्वास्थ्य का बुनियादी ढांचा ठीक नहीं है। अपनी यात्रा से पहले, मैंने मालूम कर लिया था कि नैरोबी के बाहर केन्या में कितने नेत्र अस्पताल थे। ज़्यादा नहीं थे। मैंने केन्या के राष्ट्रपति से कहा कि हम आपके लिए एक नेत्र अस्पताल बनाने के लिए तैयार हैं, बशर्ते आप हमें भवन उपलब्ध करा दें। उन्होंने पूछा कि आप कितने नेत्र चिकित्सालय स्थापित कर सकते हो? मैंने कहा कि आप हमें जितनी इमारतें दोगे उतने । उन्होंने कहा: 'मिस्टर मेहता आपको गंतव्य तक पहुंचने से पहले भवन मिल जाएगा।' उन्होंने ब्लड बैंकों के सम्बन्ध में भी यही कहा।

वह खड़े हुए और बोले क्या मैं आपसे हाथ मिला सकता हूँ? आम तौर पर मैं कोविड की वजह से हाथ नहीं मिलाता। कुछ अन्य अफ्रीकी देशों की तुलना में केन्या अब कई मापदंडों में अच्छा कर रहा है, लेकिन जरूरतें तो वहां भी हैं। एक नेत्र अस्पताल की स्थापना के लिए 2 वैश्विक अनुदानों की आवश्यकता होती है; एक इसे स्थापित करने के लिए और दूसरा इसे लगभग 18 महीने तक चलाने के लिए। इतने सारे नेत्र अस्पताल स्थापित करने के बाद, मैं अपने अनुभव से इस बारे में जानता हूं। इसके बाद मैंने ई-लर्निंग प्रोग्राम की पेशकश की और उन सभी ने इसे अपना लिया।

आइवरी कोस्ट में, मुझे सुखद आश्चर्य हुआ जब मैंने साक्षरता कार्यक्रम के बारे में बात शुरू की और राष्ट्र प्रमुख ने कहा कि 'मैं TEACH कार्यक्रम के बारे में सब जानता हूँ।'

आइवरी कोस्ट में वृक्षारोपण अभियान में भाग लेते हुए रो ई अध्यक्ष मेहता।

आइवरी कोस्ट में, मुझे सुखद आश्चर्य हुआ जब मैंने साक्षरता कार्यक्रम के बारे में बात शुरू की और राष्ट्र प्रमुख ने कहा कि 'मैं TEACH कार्यक्रम के बारे में सब जानता हूँ।'

हमने टोगो में एक प्रायोगिक परियोजना के लिए कुछ ई-लर्निंग सामग्री पहले ही तैयार कर ली है, यहां सामग्री का अनुवाद फ्रेंच में किया गया है और छवियों के स्थान पर अफ्रीकी चित्रों को लगाया गया है। अब जबकि रुचि इतनी अधिकहै, मांग है और आवश्यकता है, हम इसे घाना, केन्या, इथियोपिया आदि देशों में भी भेज सकते हैं।

यहां मुझे एक बार फिर लड़कियों को सशक्त बनाने के कार्यक्रमों में गहरी दिलचस्पी का जिक्र करना चाहिए; युगांडा संसद द्वारा पारित प्रस्ताव सोने पर सुहागा था। उन्होंने हम 23 रोटरियनों को आमंत्रित किया और प्रस्ताव में रोटरी द्वारा दुनिया भर में किए गए मानवीय कार्यों और पोलियो उन्मूलन पर इसके प्रभाव के बारे में चर्चा की, युगांडा सहित।

सभी देशों में, मुझे, रो ई अध्यक्ष के रूप में, वही सम्मान मिला जो राष्ट्र प्रमुख के लिए आरक्षित रहता है। यह देखकर बहुत अच्छा लगा कि अफ्रीका में रोटरी इतनी परिपक्व है, इसकी उत्कृष्ट छवि है और आपसी संपर्क काफी बेहतर है; सम्बोधित करने वाले सांसदों में 20 रोटेरियन थे; मैंने जिन देशों की यात्रा की, उनमें से कम से कम 30 से 40 रोटेरियन सांसद थे।

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

कोविड राहत कार्य करने वाले रोटेरियनों को सम्मानित किया गया

किरण ज़ेहरा

PDG जी ओलिवनन, क्लब के अध्यक्ष जॉन फ्रेड्रिक, DG जे श्रीधर, और, डॉ नारायणस्वामी के साथ RID कोटबागी कोविड केयर केंद्र में।

चेन्नई के गिंडी स्थित किंग इंस्टीट्यूट ऑफ प्रिवेंटिव मेडिसिन एंड रिसर्च में पोस्ट-कोविड देखभाल केंद्र की अपनी यात्रा के दौरान, रो ई निदेशक महेश कोटबागी ने रोटरी क्लब मद्रास नॉर्थ, रो ई मंडल 3232, के सात रोटेरियनों को क्लब द्वारा शुरू की गई कोविड राहत परियोजनाओं में उनके योगदान के लिए सम्मानित किया। उन्होंने DG जे श्रीधर, PDG जी ओलिवनन और क्लब अध्यक्ष जॉन फ्रेड्रिक के साथ कोविड सुविधा का दौरा किया जहाँ क्लब ने ₹1 करोड़ की लागत के ऑक्सीजन कन्सन्ट्रैटर एवं अन्य चिकित्सीय उपकरण स्थापित किए है। क्लब के प्रयासों की सराहना करते हुए, कोटबागी ने कहा कि यह परियोजना रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता के 'बड़ा सोचने और बड़ा करने' के मंत्र के अनुरूप थी। ''क्लब ने बहुत ही नाजुक समय में सामने आकर चेन्नई के वंचित लोगों की मदद करने हेतु असाधारण गति के साथ काम किया।''

उन्होंने कोविड केंद्र के निदेशक डॉ नारायणस्वामी और उनकी टीम से भी मुलाकात की और उन्हें आश्वासन दिया कि अगर उन्हें कुछ भी चाहिए तो ''रोटरी आपकी मदद के लिए हमेशा तैयार होगी।'' डॉक्टरों और चिकित्सा कर्मचारियों को असली हीरो कहते हुए, कोटबागी ने कहा, ''मानवता की सुरक्षा और कल्याण के लिए आप जो बलिदान दे रहे है वह बहुमूल्य है और आजीवन आभार प्रकट किए जाने योग्य है।'' रो ई निदेशक को धन्यवाद देते हुए डॉ नारायणस्वामी ने कहा कि जहाँ इस घातक वायरस ने दुनिया भर की स्वास्थ्य प्रणालियों की कमी को उजागर किया है, वहीं ''रोटरी जैसे संगठनों ने अस्पतालों को आवश्यक उपकरणों से सुसज्जित करने और स्वास्थ्य कर्मियों का समर्थन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है ताकि वे जरूरतमंद लोगों को त्वरित सहायता प्रदान कर सकें।'' DG श्रीधर ने कहा कि युद्ध स्तर पर महामारी से निपटने में स्वास्थ्य कर्मियों को समय पर मदद पहुँचाकर क्लब के सदस्यों ने यह साबित कर दिया कि रोटेरियन कार्यवाही करने वाले लोग है। ■

> रोटरी जैसे संगठनों ने अस्पतालों को आवश्यक उपकरणों से सुसज्जित करने और स्वास्थ्य कर्मियों का समर्थन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है ताकि वे जरूरतमंद लोगों को त्वरित सहायता प्रदान कर सकें।
>
> **डॉ नारायणस्वामी**
> निदेशक, पोस्ट-कोविड देखभाल केंद्र, किंग इंस्टीट्यूट

अध्यक्ष मेहता के साथ सदस्यता पर चर्चा

जयश्री

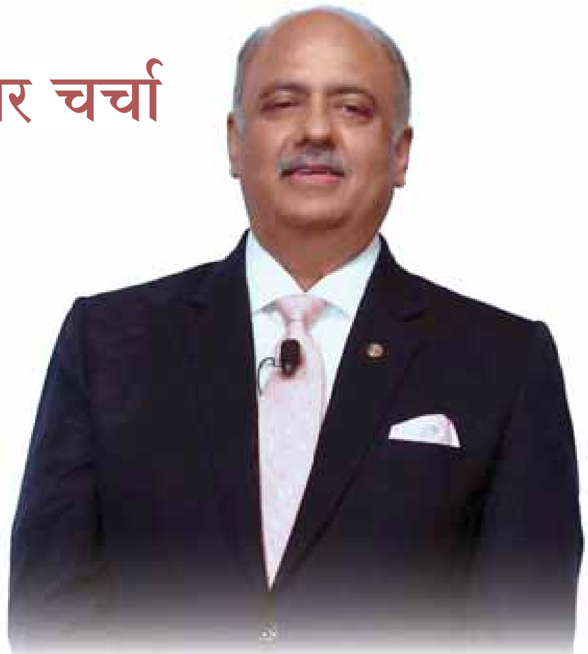

रो ई अध्यक्ष, शेखर मेहता।

मैं बहुत भाग्यशाली हूं कि 35 साल पहले किसी ने मुझे रोटरी की सदस्यता का उपहार दिया था और मुझे खुशी है कि यही उपहार मैंने भी कई लोगों को दिया है'', रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता ने एक ऑनलाइन सदस्यता पर जारी चर्चा में कहा जिसमें दुनिया भर के रोटेरियन और गैर-रोटेरियन ने भाग लिया था। कई गैर-रोटेरियन ने चैट-बॉक्स में रोटरी सदस्य बनने में रुचि भी व्यक्त की। इस कार्यक्रम में रो इ निदेशक विकी पुलिज़, सदस्यता समिति के अध्यक्ष कमल सांघवी और इसकी उपाध्यक्ष जेरिस गैस्टन ने भी भाग लिया।

वर्तमान समय में समाज की आवश्यकताएं बढ़ गई हैं और रोटरी के लिए और अधिक प्रगति करने और अधिक कार्य करने का उचित समय यही है। इस वर्ष रोटरी विशेष प्रयास कर रही है और ज़्यादा सदस्यों को जोड़ने के लिए आक्रामक कदम उठा रही है, हर एक लाये एक (EOBO) योजना के माध्यम से प्रत्येक रोटेरियन से रोटरी में कम से कम एक सदस्य बनाने के लिए कहा जा रहा है, मेहता ने कहा। ''आइए विभिन्न क्षेत्रों में हमारे द्वारा किए गए महान कार्यों को प्रदर्शित करने के लिए 'रोटरी डेज़ ऑफ़ सर्विस' का आयोजन कर अपनी उपलब्धियों की कहानियां लोगों को बताएं और हमारे द्वारा किए जा रहे भलाई के कार्यों में शामिल करने के लिए अधिक से अधिक लोगों को प्रेरित करें। नए सदस्यों को शामिल करने का मुख्य आधार भी विविधता, समानता और समावेश होगा'', उन्होंने कहा।

RID विकी पुलिज़

रो ई अध्यक्ष ने EOBO के लक्ष्य को बेहतर तरीके से समझने के लिए तीन प्रतिभागियों के साथ एक प्रश्नोत्तर सत्र का आयोजन किया ।

मेहता: 'ग्रो रोटरी' से आप क्या समझते हैं और आपको क्यों लगता है कि यह संगठन की प्रगति के लिए महत्वपूर्ण है?

विकी: ये वाकई रोमांचक पहल है क्योंकि हम उन लोगों के पास जायेंगे जिन्हें हम जानते हैं,जिनका सम्मान करते हैं और जो हमारे मूल्यों में समान विचारधारा रखते हैं मित्रता, अखंडता, विविधता, सेवा और नेतृत्व और उन्हें रोटरी का सदस्य बनने के लिए आमंत्रित कर, उन्हें खुद से कहीं बड़ी चीज का हिस्सा बनने में मदद करेंगे और स्थायी परिवर्तन में उनकी भी भूमिका रहेगी।

इस पहल का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू है अभिनव विशिष्टताओं वाले क्लबों को चार्टर करना जो अपने सदस्यों के लिए अधिक लचीले हों। हमारे यहां ऐसे अंतरराष्ट्रीय ई-क्लब हैं जो उन लोगों के समूहों के साथ बनते हैं जिनकी रूचियां समान हैं और किसी विशेष प्रयोजन को ले कर संवेदनशील हैं। सदस्यों को रोचक तरीके से व्यस्त रखना और उन्हें रोटरी मूल्यों का अनुभव कराना, रोटरी में एक सदस्य को लाने के लिए सभी सदस्यों को शामिल करना और बदलती जरूरतों के हिसाब से अभिनव विशिष्टताओं वाले नए रोटरी/रोटारेक्ट क्लबों का सृजन करना, इन तीन तरीकों से हम रोटरी का विकास कर सकते हैं और अपना प्रभाव बढ़ा सकते हैं।

संघवी: अगर हम अपनी पहुंच या प्रभाव का विस्तार करना चाहते हैं तो हमारे पास अधिक सदस्य होने ही चाहिए। हमारे क्लब अधिक जीवंत बनेंगे और समाज को समृद्ध करने के लिए हमारे पास अधिक संसाधन होंगे। सदस्यता रोटरी की आंतरिक संगठनात्मक प्राथमिकता है। किसी ने हमसे संपर्क किया था और रोटरी की इस शानदार दुनिया से परिचय कराया था। हम देने से प्राप्त होने वाली खुशी का आनंद उठाते हैं और लाखों लोगों का आशीर्वाद लेते हैं। अब हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम किसी अन्य से संपर्क कर उसे रोटरी में लाएं।

मेहता: आपके लिए यह उपहार क्या मायने रखता है? क्या आप कोई व्यक्तिगत अनुभव साझा कर सकते हैं कि किसी अन्य को आपने यह उपहार कैसे दिया?

जेरिस: कई साल पहले एक राजदूत (Ambassadorial) छात्रवृत्ति के माध्यम से मिले इस उपहार की मैं आभारी हूं। इसने मुझे अपने वैश्विक दृष्टिकोण का विस्तार करने और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर रोटरी का नजरिया देखने और समझने में मदद की है।

विकी : मैं व्यावसायिक संपर्क बढ़ाने के लिए रोटरी में शामिल हुई थी। जब मैं इस के भीतर आई तो मुझे पता चला कि यहां तो और भी बहुत कुछ है। सबसे पहले, रोटरी उन लोगों के साथ मित्रता

कराती है जिन्हें अन्यथा मैं कभी नहीं मिल सकती थी। लोगों के साथ काम कर मैंने अपनी योग्यता और कौशल बढ़ाया है। और फिर, सेवा करने का अतुलनीय उपहार मिला है। रोटरी के बारे में अनूठी बात यह है कि हमारे सदस्य स्वयं निर्धारित करते हैं कि किसी समुदाय के लिए सबसे अधिक प्रासंगिक और महत्वपूर्ण क्या है उस पर कार्रवाई करने के लिए अन्य सदस्यों के साथ विचार विमर्श कर करते हैं

शुरू में मेरे पति टिम को मेरे ज़रिये रोटरी के फेलोशिप और सेवा जैसे कई फायदे हुए । लेकिन आज, वह स्वयं रोटरी ई-क्लब ऑफ एविएशन के सदस्य हैं, जो दुनिया में हवाई यात्रा के शौक़ीन लोगों को एक मंच पर लाता है जिन्हें एक साथ उड़ने का जुनून है। प्रौद्योगिकी का उपयोग और रोटरी का लचीलापन विभिन्न देशों और विभिन्न पृष्ठभूमि के अलग-अलग लोगों को इस क्लब से जोड़ने और एक साझा हित के लिए संबंध और मित्रता विकसित करने और फाउंडेशन और उनके क्लब के माध्यम से दुनिया में भलाई के काम करने का अवसर प्रदान करता है।

एक अन्य कहानी में एक युवक जिसे एक RYLA में परिवर्तन के नेतृत्व का अनुभव था उस समय वह हाई स्कूल में पढता था। और अब, वह एक रोटरी क्लब में शामिल होने के विकल्प खोज रहा है। यह हमारे रोटरी कार्यक्रमों में साथ रहे पूर्व सहभागियों और उस कार्यक्रम के लाभार्थियों से जुडी यादें कर देता है।

मेहता: **सदस्यों को लाने के लिए क्या आप कुछ ऐसे कार्यक्रमों का उदाहरण दे सकते हैं जिन्हें रोटरी आयोजित कर सकता है?**

जेरिस गेस्टन, सदस्यता समिति उप-अध्यक्ष।

सांघवी: रो इ मंडल 3203 के एक छोटे से शहर इरोड में कोविड ने धावा बोला था, वहां रोटरी सदस्यों ने आपसी सहयोग से 2 मिलियन डॉलर एकत्रित कर 400-बेड वाला अस्पताल बना दिया, वो भी सिर्फ 45 दिनों में। इस परियोजना से वहां रोटरी के साथ कई लोग जुड़ गए। एक और, विश्व योग दिवस पर रोटरी ने आर्ट ऑफ लिविंग के साथ सहभागिता की। दोनों संगठनों ने अपने विशाल सदस्यता आधार के साथ सात दिन तक ऑनलाइन योगासन किए और सोशल मीडिया के विभिन्न चैनलों के माध्यम से 10,000 लोगों ने इस योग समारोह के आयोजन में भाग लिया। इस आयोजन से देश भर में रोटरी में नए सदस्य बने। एक अन्य विचार, युवाओं को प्रोत्साहित कर रोटरी में शामिल होने के लिए मैराथन, वॉकथॉन, खेल प्रतियोगिताओं जैसे युवा उत्सवों का आयोजन भी किया जा सकता है।

जेरिस: मैं एक पूर्व रोटारेक्टर रह चुकी हूँ, समाज पर प्रभाव डालने के लिए मैं रोटारेक्ट के साथ मिल कर संयुक्त कार्यक्रम आयोजित करने का सुझाव दूंगी। रोटारेक्टर हमसे मार्गदशन और सलाह की अपेक्षा रखते हैं और वे रोटेरियन के साथ काम करने के लिए उत्सुक हैं। इससे रोटेरियनों को युवा पीढ़ी के साथ मेलजोल बढ़ाने और अपने क्लब में नए सदस्यों (दोहरे सदस्यों) को लाने में भी मदद मिलेगी।

मेहता: **सदस्यों को आकर्षित करने के लिए रोटरी के लिए समानता और समावेश क्यों महत्वपूर्ण है?**

विकी: इस युग में विविधता का अर्थ महत्वपूर्ण है। विभिन्न व्यवसायों और स्थानों, लिंग, जातीयता और उम्र के व्यक्तियों को एक मंच पर लाने से क्लब के दृष्टिकोण भी विविध हो सकते हैं। प्रत्येक क्लब के पास यह मंथन करने का अवसर होता है कि क्या उनके सदस्य अपने समाज का प्रतिबिम्ब हैं और क्या वे चितन करते हैं कि ऐसे कौन से कार्य कर सकते हैं जो सभी के हित में हों और समावेशी भी हों, जिसमें सब लोग जुड़ सकें। EOBO अवधारणा हमारे सदस्यों के लिए उन लोगों तक पहुंचने का एक बिलकुल सही तरीका है, जिन्होंने पूर्व में रोटरी के बारे में ना तो कभी सोचा और ना सुना है।

PRID कमल संघवी, सदस्यता समिति अध्यक्ष।

जेरिस: सेवा जारी रखने के लिए हमें अगली पीढ़ी के रोटेरियन को आगे लाना होगा। जब हमारे पास विविधता लिए समावेशी क्लब होंगे तो हमारे पास और अधिक मजबूत रोटरी होगी और मिल कर हम और अधिक कर पाएंगे।

सांघवी : यह तथ्य ही कि हम दुनिया भर के 200 देशों में उपस्थित हैं, यही हमारे संगठन में विविधता और समानता की प्रासंगिकता को दर्शाता है। हम यह भी समझते हैं कि रोटरी के दृष्टिकोण को साकार करने के लिए एक विविध और समावेशी संस्कृति को बढ़ावा देना आवश्यक है एक ऐसी दुनिया जहां लोग मिल कर रहें और स्थायी परिवर्तन लाने के लिए एकजुट हो कर कार्य करें। हम उम्र, नस्ल और जाति, धर्म, संस्कृति, भाषा, यौन अभिविन्यास और लिंग पहचान और विचारों और विचारों में अंतर के सभी लोगों के योगदान को महत्व देते हैं। एक संगठन तभी तक अच्छा रहता है जब तक उसके सदस्य एकसाथ रहते होते हैं। हम अवरोध नहीं चाहते हैं और हर क्लब किसी भी तरह के आपसी मतभेद के उपरान्त भी एक समुदाय की जरूरतों को ज़रूर समझता है सुनता है। हमें रोटरी में महिलाओं को प्रोत्साहित करने की जरूरत है क्योंकि दुनिया की 48 फीसदी आबादी महिलाओं की है। वे दुनिया की नेता हैं। दुनिया में हर व्यक्ति में एक प्रत्यक्ष और परोक्ष विशिष्ट गुण होता है जो किसी भी संगठन को अद्वितीय बना सकता है।■

कोविड से निपटने में सावधानी बरतना ही समय की मांग है

रशीदा भगत

PRIP के आर रवींद्रन के साथ DGN पुबुडु डी ज़ोयसा (RID 3220) रोटरी क्लब कोलंबो द्वारा आयोजित टीकाकरण बूथ का दौरा करते हुए।

रोटरी न्यूज़ को दिए गए एक साक्षात्कार में, रो ई कोविड टास्क फोर्स के अध्यक्ष PRIP के आर रवींद्रन कहते है कि विभिन्न देशों में कोविड टीकों की असमान पहुंच के साथ ही इज़राइल और यूके जैसे देशों में वायरस के विभिन्न संस्करणों के मामलों में वृद्धि दर्ज किए जाने से महामारी की चुनौतियां बनी हुई है। अंश...

आप रो ई कोविड टास्क फोर्स की अध्यक्षता कर रहे है; यह कैसे काम करता है और इसकी क्या प्राथमिकताएं है?

कोविड महामारी ने रोटरी गतिविधियों को इतना बाधित किया जितना पहले किसी चीज़ ने नहीं किया; पिछले वर्ष TRF के शीर्ष तीन एवं रो ई नेतृत्वकर्ताओं वाली एक समिति का गठन किया गया जिसमें होल्गर नेक, शेखर मेहता, जेनिफर जोन्स, जॉन जर्म, इयान रिसले और मैं शामिल था। इसकी बैठक नियमित रूप से होती थी लेकिन प्रत्येक सदस्य की अन्य जिम्मेदारियों को देखते हुए, इसे बाधाओं का सामना करना पड़ा। इसलिए इस रोटरी वर्ष की शुरुआत में, वैश्विक प्रतिनिधित्व वाले जानकार व्यक्तियों (उनमें से कुछ विशेषज्ञों) के साथ एक नई समिति (जिसका मैं अध्यक्ष हूँ) का गठन किया गया।

जहाँ तक प्राथमिकताओं की बात है, यह व्यापक स्तर पर निम्नलिखित बातों पर ध्यान केंद्रित करेगी:

- रोटेरियनों को कोविड-19 संकट के प्रति त्वरित एवं सर्वोत्तम प्रतिक्रिया के लिए समर्थन और दिशा प्रदान करना।
- संबंधों के विकास में सहायता करना और बाहरी संस्थानों एवं अंतर्राष्ट्रीय विकास संगठनों से धन की मांग करना ताकि कोविड-19 टीकाकरण की वकालत करने के लिए रोटरी अपनी क्षमता का पूर्ण उपयोग कर सकें जैसा कि इसने पोलियो उन्मूलन में किए गए अपने कार्य से प्रदर्शित किया था।
- दुनिया भर में यात्रा और बैठकों की सुरक्षा पर रो ई मंडल एवं न्यासियों को सलाह देना।

समिति के सदस्यों को निम्नलिखित बातों को रिपोर्ट करना होगा:

- अपने क्षेत्र में वयस्कों और बच्चों दोनों के कोविड पाज़िटिव मामलों के रुझान को
- कुछ महत्वपूर्ण मामलों (दोनों डोज़ लगे व्यक्ति के संक्रमित होने) को
- यात्रा और प्रतिबंधों पर सरकार की स्थिति को
- टीके की उपलब्धता को
- प्रमुख चुनौतियाँ/उल्लेखनीय घटनाओं को

रोटरी ने इस महामारी के चलते अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर किस तरह का प्रभाव डाला है?

दुनिया भर में वैक्सीन की समान उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए G20 देशों से संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस के आह्वान का हमने सक्रिय रूप से समर्थन किया है। हमने 2021 G20 शिखर सम्मेलन के अध्यक्ष, इटली के प्रधान मंत्री मारियो ड्रैगी के साथ भी इस बात को लेकर संवाद किया है कि जबकि हम G20 की रोम घोषणा की सराहना करते है जो घरेलू परिस्थितियों की अनुमति होने पर, ''टीके की सस्ती खुराक के वैश्विक साझाकरण के लिए समर्थन प्रदान करने का संकेत देता है'', यह आश्वासन अपने आप में काफी नहीं है। और यह कि G20 का दायित्व है कि वह यह सुनिश्चित करें कि प्रत्येक देश समय पर कोविड टीकों का अपना आवश्यक स्टॉक प्राप्त करने की स्थिति में हो।

वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय टीके की पहुंच असमान है और इस अंतर को कम करना अत्यधिक महत्वपूर्ण है। कोई भी देश तब तक सुरक्षित नहीं है जब तक सभी देश सुरक्षित न हों।

हमने हाल ही में GAVI (ग्लोबल अलायंस फॉर वैक्सीन्स एंड इम्यूनाइजेशन) के साथ एक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया है, जो वैश्विक स्तर पर एक सहयोगपूर्ण व्यवस्था को सुनिश्चित करता है ताकि सामाजिक यथार्थवाद के समर्थन के माध्यम से कोविड-19 टीके के कवरेज को आगे बढ़ाया जा सके।

GAVI एक वैश्विक स्तर का सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र का टीका गठबंधन है जिसका साझा लक्ष्य टीकों के समान उपयोग को सुनिश्चित करना है और यह एक विश्वव्यापी पहल के रूप में कोविड-19 वैक्सीन ग्लोबल एक्सेस (COVAX) का सह-नेतृत्व कर रहा है, जिसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि हर देश की कोविड के टीकों तक पहुंच हो।

COVAX पहल GAVI द्वारा निर्देशित है और WHO, UNICEF, CEPI इसके साझेदार है। रोटरी और GAVI ने ''कोविड से सुरक्षित एक दुनिया'' के दृष्टिकोण की दिशा में एक साथ मिलकर काम करने के लिए सैद्धांतिक रूप से एक समझौता किया है।

हम इस बात पर सहमत है कि वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय टीके की पहुंच असमान है और इस अंतर को कम करना अत्यधिक महत्वपूर्ण है। कोई भी देश तब तक सुरक्षित नहीं है जब तक सभी देश सुरक्षित न हों और केवल पूरी दुनिया का टीकाकरण ही महामारी की दिशा तय करेगा। जितने अधिक लोगों को टीका लगेगा, समुदाय में महामारी का प्रसारण उतना ही कम होगा, जिससे सभी के संक्रमण का खतरा कम होगा।

बहुत से देशों में रोटेरियन हमारे पोलियो प्रयासों से प्राप्त अनुभव का उपयोग टीकों के वितरण में और अन्य तरीकों से COVAX का समर्थन करने के लिए कर सकते है। शुरुआत में, GAVI/COVAX ने अधिक सक्रिय साझेदारी के लिए भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल और श्रीलंका सहित 9 देशों की संक्षिप्त सूची तैयार की है।

सरकारों द्वारा दिए गए आंकड़ों पर हमेशा सवालिया निशान रहता है। क्या आप दिए गए आँकड़ों से सहमत होंगे कि दुनिया भर में केवल 4.5 मिलियन लोग ही इस वायरस के शिकार हुए है? आपका क्या अनुमान है?

मुझे नहीं लगता कि ये आंकड़े सही है और रिपोर्ट में बहुत कम आँकड़े बताए जा रहे है। *द इकोनॉमिस्ट* पत्रिका ने अपने सितंबर अंक में बताया है कि

उसका वास्तविक विश्व मृत्यु दर को लेकर एकमात्र सर्वश्रेष्ठ अनुमान लगभग 15.2 मिलियन लोगों का है। उनके अध्ययन से पता चलता है कि 95 प्रतिशत संभावना है कि सही आंकड़ा 9.3 मिलियन और 18.1 मिलियन अतिरिक्त मौतों के बीच है। यह संख्या एक निश्चित समयावधि के दौरान किसी निश्चित क्षेत्र में, किसी भी कारण से मृत लोगों की संख्या और किसी विशेष परिस्थिति (जैसे प्राकृतिक आपदा या बीमारी का प्रकोप) की अनुपस्थिति में सामान्य स्थिति में होने वाली मौतों की संख्या के बीच के अंतर को दर्शाती है।

मुझे लगता है कि यह वास्तविक आंकड़ों की गणना करने का एक उचित तरीका है।

PRIP के आर रवींद्रन और RC कोलंबो के अध्यक्ष निति मुरुगेसु एक कोविशील्ड शीशी की जांच करते हुए।

आपको क्या लगता है कि इस वायरस को खत्म करने के प्रयासों में दुनिया के सामने सबसे बड़ी चुनौतियां क्या है?

वैज्ञानिक एक रिकॉर्ड समय में अनेक कोविड टीके लेकर आए है। जीवन रक्षक टीके का निर्माण एक अन्य बड़ी उपलब्धि साबित हुई है। अनुमान है कि वर्ष के अंत तक उत्पादन 12 बिलियन खुराक को पार कर जाएगा और 2022 के मध्य तक यह आंकड़ा दोगुना हो सकता है।

दुर्भाग्य से, जिस समस्या का हम सामना कर रहे है वो है असमान टीकों की आपूर्ति; उच्च आय वाले देशों में 80 प्रतिशत की तुलना में कम आय वाले देशों में केवल पांच प्रतिशत लोगों को ही पहली खुराक मिली है।

भारत सहित कुछ देशों में टीकाकरण के प्रति प्रतिरोध के बारे में आपके क्या विचार है?

यह दूसरी समस्या है; सशक्त टीका-विरोधी प्रचार। यहीं पर रोटरी ऐसे विचारों का मुकाबला करने में प्रमुख भूमिका निभा सकती है। जून में कोविड की वजह से 99 प्रतिशत से अधिक मृत्यु उन लोगों की हुई है जिन्हें टीके नहीं लगे। फिर भी, इस बात के बढ़ते प्रमाण के बावजूद कि टीके सुरक्षित और प्रभावी है, कुछ इलाकों में उनके प्रति प्रतिरोध बढ़ता जा रहा है। अधिकांश अफ्रीकी देशों में टीकाकरण की मंद रफ्तार से वायरस की प्रतिकृति में बदलाव और इसके नए एवं अधिक खतरनाक रूपों के उभरने और दुनियाभर में फैलने का खतरा बना हुआ है।

दुनिया भर में रोटेरियन यह समझाने में प्रमुख भूमिका निभा सकते है कि टीके सुरक्षित है और लोगों को यह भी बता सकते है कि बच्चों को पोलियो का टीका लगाकर हम आज कहाँ पहुंच गए है। एक समय वैश्विक स्तर पर एक दिन में 1,000 मामले सामने आते थे; आज हमारे सामने दुनिया भर में इस खतरनाक पोलियो वायरस के सिर्फ 2 मामले है।

हम इस बात की पैरवी कर सकते है कि हर उस व्यक्ति के लिए टीकाकरण अनिवार्य किया जाना चाहिए जो हवाई जहाज, ट्रेन या बस में यात्रा करना चाहता है, फिल्म देखना चाहता है, किसी रेस्तरां में खाना चाहता है, किसी दुकान से खरीदारी करना चाहता है, एक कार्यालय में काम करना चाहता है या किसी अन्य घरेलू स्थान पर जाना चाहता है।

1 सितंबर से, श्रीलंका में किसी भी ऐसे व्यक्ति को प्रवेश की अनुमति नहीं दी जा रही है जिसे टीके न लगे हो।

आपको क्या लगता है कि रोटरी क्लब भौतिक रूप से दोबारा मिलना कब शुरू कर सकते है?

मैं न तो कोई विशेषज्ञ हूँ और न ही कोई भविष्यवक्ता! वायरस उन जगहों पर फैल रहा है जहाँ लोग महामारी को लेकर सख्त नियमों का पालन किए बिना बड़ी संख्या में एकत्रित होते है।

CDC ने हाल ही में एक चेतावनी जारी की थी कि टीके के दोनों डोज़ लगवा चुके व्यक्तियों को भी सावधानी बरतनी चाहिए। अनुसंधान ने ऐसे शिविरों एवं बड़े आयोजनों में कोविड के प्रकोप के जोखिम की पुष्टि की है जहाँ रोकथाम की रणनीतियों को पर्याप्त रूप से लागू नहीं किया जाता है।

मैं निश्चित रूप से किसी भी बड़े घरेलू आयोजन का खंडन करूंगा। हाल ही की रिपोर्टों से पता चलता है कि कोविड के कारण अस्पताल में भर्ती 12-24 प्रतिशत लोगों का पूर्ण टीकाकरण हो चुका है। हम जानते है कि उच्च टीकाकरण दर वाले इज़राइल में डेल्टा संस्करण के मामलों में वृद्धि हुई है और यूके में हाल ही में हुई मौतों में से अधिकांश लोग वो ही थे जिन्हें टीके लग चुके थे।

कुछ महीनों में चीजें बदल सकती है, लेकिन अगर क्लब या मंडल में बैठकें होती है, तो उन्हें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि बैठक कक्ष अच्छी तरह हवादार हो।

क्रीमियाई युद्ध के दौरान, फ्लोरेंस नाइटिंगेल ने एक सिद्धांत दिया जो बाद में उनके महान नर्सिंग करियर के लिए महत्वपूर्ण साबित हुआ: ताजी हवा का प्रवाह सुनिश्चित करने के लिए खिड़कियां खोलने का महत्व। ■

District Wise TRF Contributions as on August 2021

(in US Dollars)

District Number		Annual Fund	PolioPlus Fund	Endowment Fund	Other Funds	Total Contributions
India						
2981		26,499	654	0	67,568	94,720
2982		17,683	598	0	97	18,378
3000		2,469	11	0	1,000	3,479
3011		5,271	439	0	43,868	49,578
3012		15,942	3,734	22,000	78,108	119,784
3020		8,726	1,262	0	4,620	14,609
3030		8,823	0	15,027	0	23,850
3040		5,102	0	0	5,546	10,648
3053		2,065	0	0	0	2,065
3054		1,549	84	0	22,341	23,973
3060		19,615	28	0	47,014	66,657
3070		6,458	0	0	738	7,196
3080		5,650	1,931	0	703	8,283
3090		5,862	0	0	0	5,862
3100		6,369	0	0	0	6,369
3110		177	0	0	0	177
3120		2,473	0	0	0	2,473
3131		131,682	9,323	0	45,459	186,464
3132		6,332	543	5,000	507	12,382
3141		157,255	27	50,000	107,566	314,848
3142		95,313	105	5,405	24	100,847
3150		6,351	1,050	0	4,607	12,008
3160		4,348	423	17,264	0	22,034
3170		21,596	4,271	1,196	3,901	30,964
3181		2,421	7	0	0	2,428
3182		1,766	0	0	0	1,766
3190		29,837	3,658	0	0	33,495
3201		16,429	1,382	0	3,758	21,569
3203		6,071	7,124	5,072	132,702	150,968
3204		583	0	0	1,036	1,619
3211		280	280	0	3,240	3,800
3212		3,625	170	1,036	588	5,420
3231		5,620	102	0	2,851	8,574
3232		22,482	11,034	6,500	74,247	114,263
3240		12,921	984	0	0	13,906
3250		1,093	66	1,036	301	2,496
3261		2,433	14	0	0	2,447
3262		1,643	0	0	0	1,643
3291		30,759	470	5,541	0	36,770
India Total		**701,574**	**49,773**	**135,076**	**652,389**	**1,538,813**
3220	**Sri Lanka**	19,154	483	1,510	1,000	22,147
3271	**Pakistan**	308	316	0	1,155	1,780
3272	**Pakistan**	817	120	0	0	937
3281	**Bangladesh**	8,711	925	1,000	16,399	27,036
3282	**Bangladesh**	4,545	0	1,000	500	6,045
3292	**Nepal**	14,530	1,949	0	44,230	60,709
South Asia Total		**749,639**	**53,567**	**138,586**	**715,674**	**1,657,466**

Annual Fund (AF) includes SHARE, Areas of Focus, World Fund and Disaster Response. AF contributions count towards club annual giving goals and are included in per capita amounts. **Source:** RI South Asia Office.

रोटरी ने 2 मिलियन भारतीयों को कोविड के विरुद्ध टीका लगाने में मदद की है

रशीदा भगत

रोटरी इंडिया कोविड टास्क फोर्स के अध्यक्ष PRID अशोक महाजन, डोंबिवली में कोविड टीकाकरण शिविर (RID 3142) जहां 250 ट्रांसजेंडरों का टीकाकरण किया गया। PDG मोहन चंदावरकर भी चित्र में शामिल हैं।

रोटरी इंडिया कोविड टास्क फोर्स के अध्यक्ष, पूर्व रो ई निदेशक अशोक महाजन, कहते है कि वरिष्ठ रो ई नेतृत्वकर्ताओं और भारत में रोटरी में उत्साही एवं मेहनतकश मंडल एवं क्लब नेतृत्व के समर्थन ने, कोविड के विरुद्ध 2 मिलियन से अधिक भारतीयों को टीका लगाने में मदद की है। उन्हें पूरा विश्वास है कि भारत जल्द ही कोविड मुक्त हो जाएगा। बातचीत के अंश...

आपकी अध्यक्षता वाली इंडिया कोविड टास्क फोर्स का ध्यान मुख्य रूप से किस बात पर केंद्रित है?

जब भारत सरकार कोविड टीकों को लगाने की तैयारी कर रही थी, भारत में रोटरी के नेतृत्व ने तुरंत ही कोविड टीकाकरण में भागीदार बनने की पेशकश की, और मुझे रोटरी इंडिया कोविड टास्क फोर्स की अध्यक्षता करने के लिए आमंत्रित किया गया। फिर केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय और नीति आयोग के अधिकारियों के साथ हुई बैठकों में, निम्नलिखित ध्यानाकर्षण क्षेत्रों की पहचान की गई:

* कोविड टीकों के प्रति जागरूकता पैदा करना
* सामाजिक संघटन
* गलत सूचना से उपजे सार्वजनिक प्रतिरोध पर काबू पाना
* जहां आवश्यकता हो वहाँ लॉजिस्टिकल सहायता प्रदान करना

कोविड टीकाकरण में भारतीय रोटेरियनों ने क्या भूमिका निभाई है; क्या हम किसी आँकड़ें का अनुमान लगा सकते है?

पूरे भारत के रोटरी क्लबों ने कोविड टीकाकरण अभियान में बहुत बड़ी भूमिका निभाई है। उन्होंने रैलियों और ऑनलाइन संगोष्ठियों का आयोजन करके शुरुआत की और टीकाकरण को बढ़ावा देने के लिए सोशल मीडिया का भरपूर उपयोग किया। अभियान के शुरू होने के बाद, रोटरी क्लबों ने देश भर में कोल्ड चेन, टीकों के लिए परिवहन और टीकाकरण शिविर आयोजित करने में मदद की है। मेरे अनुमान से, रोटरी क्लबों द्वारा आयोजित शिविरों में लगभग *2 मिलियन भारतीयों को* टीका लगाया गया है।

इसके अलावा, रोटेरियनों ने कोविड अस्पतालों की क्षमता बढ़ाने में भी मदद की है और विभिन्न अस्पतालों में ऑक्सीजन कन्सेंट्रेटर प्रदान किए है,

ऑक्सीजन संयंत्र स्थापित किए है, जरूरतमंदों को दवाइयाँ उपलब्ध कराई है, बेड, ऑक्सीजन कन्सेंट्रेटर, दवाइयों, इत्यादि की उपलब्धता के बारे में जानकारी प्रदान करने के लिए कॉल सेंटरों का संचालन किया है।

हमारी विशाल जनसंख्या के मद्देनजर, भारत को अपनी आबादी का टीकाकरण करने में किन मुख्य चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है? रोटरी और किस तरह मदद कर सकती है?

पहली बाधा टीकों की पर्याप्त आपूर्ति प्राप्त करना था। क्योंकि हमारी संख्या बहुत ज्यादा है। आखिरकार, हमारी आबादी विशाल है और वह शहरों में सघनता से केंद्रित है। आधी से अधिक आबादी को टीके का कम से कम एक डोज़ मिल गया है, और लॉकडाउन को चरणबद्ध तरीके से हटाने के साथ ही, यह सुनिश्चित करना चुनौती है कि लोग सावधानी बरतना ना छोड़े। पर्याप्त शारीरिक दूरी बनाए रखना, वैयक्तिक बैठकों से बचना और फेस मास्क एवं सैनिटाइज़र का उपयोग जारी रखना चाहिए।

रोटरी क्लबों को राज्य सरकारों की यह सुनिश्चित करने में भी मदद करनी चाहिए कि ग्रामीण इलाकों में लोगों को टीके जल्द से जल्द लग सकें।

आपने भारत से पोलियो खत्म करने में रोटरी के प्रयासों में बहुत बड़ी भूमिका निभाई। क्या कोविड टीकाकरण अभियान में आप कोई समानता या अंतर देखते है?

पोलियो टीकाकरण को मुस्लिम समुदाय वाले कुछ क्षेत्रों से प्रतिरोध का सामना करना पड़ा था। इस प्रतिरोध पर विजय हमने धर्मगुरुओं का समर्थन हासिल करके प्राप्त की जिन्होंने टीकाकरण को स्वीकार करने के लिए अपने समुदाय को मनाया। यह पोलियो उन्मूलन अभियान में एक महत्वपूर्ण बिंदु था जिसके परिणामस्वरूप भारत को पोलियो मुक्त घोषित किया गया।

इस बार, उलेमा समिति, जिसका अध्यक्ष मैं अभी भी हूं, को यह सुनिश्चित करने के लिए बहुत पहले ही शामिल कर लिया गया कि मुस्लिम समुदाय से किसी भी प्रकार के प्रतिरोध का सामना नहीं करना पड़े।

एक चुनौती यह है कि पोलियो का टीका केवल 5 वर्ष से कम उम्र के बच्चों को दिया जाना था। जबकि कोविड का टीका प्रत्येक वयस्क भारतीय को लगाना है। यह आश्चर्यचकित कर देने वाला आंकड़ा है, और हमारी सरकार ने अब तक बहुत अच्छा काम किया है।

लेकिन इससे पहले कि हम फिर राहत की सांस ले सके, कुछ काम करना अभी बाकि है। हालांकि, पोलियो टीकाकरण में रोटरी का अनुभव हमें इस बात का विश्वास दिलाता है कि भारत शीघ्र ही कोविड मुक्त हो जाएगा।

यहां इस बात का उल्लेख करना अनुचित नहीं होगा कि संपूर्ण कोविड टास्क फोर्स इस उद्देश्य के लिए समर्पित है और हमारे वरिष्ठ रो ई नेताओं द्वारा पूरी तरह से समर्थित है। इस भयानक बीमारी से छुटकारा पाने के लिए स्थानीय सरकारों की मदद हेतु मंडल और क्लब नेतृत्व जबरदस्त काम कर रहा है। भगवान की कृपा रही तो, हम जल्द ही भारत को कोविड मुक्त बनाने में सफल होंगे। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

महिलाओं के स्वास्थ्य पर ध्यान

टीम रोटरी न्यूज़

लाभार्थी दंपत्ति के साथ रोटरी क्लब हुबली विद्यानगर की अध्यक्ष डॉ महिमा दंड (बीच में)।

रोटरी क्लब हुबली विद्यानगर, RID 3170 ने वंचित महिलाओं को भंडारण बक्से के साथ ठेले दान किए। क्लब की अध्यक्ष डॉ महिमा दंड ने कहा कि वे इन मोबाइल कार्ट का उपयोग सब्जियां, फल, सामान या खाद्य पदार्थ बेचने और जीविकोपार्जन के लिए कर सकते हैं।

एक अन्य पहल में, क्लब ने अपनी RID प्रोजेक्ट के हिस्से के रूप में हुबली में आईबीएमआर कॉलेज के छात्रों के लिए मासिक धर्म स्वच्छता प्रबंधन कार्यक्रम का आयोजन किया। 100 छात्रों और व्याख्याताओं को मेंस्ट्रुअल कप बांटे गए। लड़कियों को डिस्पोजेबल पद के बजाय मासिक धर्म कप और पुन: प्रयोज्य सैनिटरी नैपकिन का उपयोग करने की और मासिक धर्म सुरक्षा और स्वच्छता के बारे में शिक्षित करने के लिए एक जागरूकता व्याख्यान प्रस्तुत किया गया।■

Rotary PEOPLE OF ACTION

सपनों के धागे

रशीदा भगत

कोविड महामारी के कारण सम्पूर्ण भारत में बार बार हुए लॉकडाउन ने हथकरघा उद्योग की कमर तोड़ कर रख दी है जिसके दूरगामी प्रभाव पड़े हैं। सिर्फ कपड़े की बुनाई ही लगभग ठप नहीं हुई है, बुनकर से एजेंट से लेकर दुकान तक आपूर्ति की श्रृंखला भी छिन्न भिन्न हो गई है। इन कारीगरों के चेहरों पर सबसे बड़ा खौफ ये है कि जब आपूर्ति बहाल हो जाएगी और दुकानें और स्टोर खुल जाएंगे, जैसा कि शुरू हो चुका है, तो क्या उपभोक्ता आज भी उनके बनाये खूबसूरत कपडे खरीदने में पर्याप्त रूचि लेंगे,

भारत में कश्मीर से कांचीपुरम और इसके बीच में रहने वाले रेशम बुनकरों पर वास्तव में जबरदस्त मार पड़ी है और इसमें छत्तीसगढ़ के बुनकर भी शामिल हैं जो कोसा रेशम की खूबसूरत साड़ियाँ बनाते हैं। कोसा संस्कृत का शब्द का अर्थ है 'रेशम'।

द प्रिंट के एक ताज़ा लेख में, छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिले में कोसा रेशम के एक प्रधान बुनकर और व्यापारी कन्हैया देवांगन ने कहा: मेरे लिए काम करने वाले 25 से अधिक हथकरघा बुनकरों के पास तालाबंदी शुरू होने के बाद से कोई काम नहीं है। मेरे पास उन्हें देने के लिए कच्चा माल ही नहीं है।

कोसा को अक्सर एक प्रकार का टसर सिल्क भी कहा जाता है, लेकिन बनावट में थोड़ा मोटा होने और टसर की चमक की कमी के कारण, यह अक्सर टसर से अलग दिखता है, रोटरी क्लब बिलासपुर क्वींस, RID 3261 में 38 सदस्यों वाले अखिल महिला क्लब की अध्यक्ष अर्चना अग्रवाल बताती हैं। उन्होंने कोसा रेशम की बुनाई में लगे कई परिवारों, विशेष रूप से महिलाओं की मदद करने के लिए एक परियोजना की परिकल्पना कर इसकी शुरुआत कर दी, बिलकुल उपयुक्त, बल्कि काव्यात्मक, शीर्षक सपनो के धागे से, इस परियोजना में बुनकरों और उनके परिवारों की

विभिन्न तरीकों से सहायता करने की योजना बनाई गई है, विशेष रूप से कोविड महामारी के घातक परिणामों के बाद।

अर्चना का कहना है कि लगभग एक साल से वह एक ऐसी असरदार परियोजना पर विचार

कोसा सिल्क छत्तीसगढ़ के घर घर की शान है। हथकरघा के लिए हमारे प्रेम ने कोसा रेशम को देश के कोने कोने में पहुंचा दिया है।

रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता, (दाएं से) RID महेश कोटबागी, PDG विवेक तन्खा, राशि, RC बिलासपुर क्वींस की अध्यक्ष अर्चना अग्रवाल, प्रोजेक्ट चेयर प्रेरणा सुराणा और क्लब सचिव आंचल अगिचा की उपस्थिति में 'सपनों के धागे' परियोजना का उद्घाटन करते हुए।

कर रही हैं जो लोगों के जीवन को बदल दे। ''रोटरी में हम सभी ऐसी परियोजनाओं का चयन करते हैं जिनमें एक घटक सेवा का होता है, लेकिन अध्यक्ष रहते हुए मेरे वर्ष के दौरान मैं कुछ ऐसा काम करना चाहती थी जिसमें रो इ अध्यक्ष शेखर मेहता के फोकस क्षेत्र लड़कियों/महिलाओं को कौशल प्रदान कर उन्हें सशक्त बनाएं, और इस दुष्कर वातावरण में उन के उत्पादों की बिक्री में सहायक हो'', वह कहती हैं।

बुनकरों की दुर्दशा को देखते हुए, जो कोसा रेशम को इतनी खूबसूरती से सुंदर और सुरुचिपूर्ण साड़ियों में परिवर्तित करते हैं और जो कई भारतीय महिलाओं की अलमारियों की शोभा बढ़ाती हैं, क्लब ने इस परियोजना का शुभारंभ किया जिसका उद्घाटन अध्यक्ष मेहता ने अगस्त में इवान्स्टन में रो इ मुख्यालय के लिए रवाना होने से पहले किया था।

इस परियोजना का केंद्र बिलासपुर से करीब दो घंटे की दूरी पर स्थित उमरेली गाँव में होगा, ''क्योंकि काफी शोध करने और इस क्षेत्र में जाने के बाद मुझे लगा कि यहां की महिलाओं में प्रतिभा है और सबसे ज़्यादा मदद की ज़रुरत भी इन्हें ही है। ज़्यादातर लड़कियां और महिलाएं घर से बाहर नहीं जा सकतीं, वे पढ़ी लिखी नहीं हैं और पूर्ण रूप से अपने पति या पिता पर आश्रित

कोसा को अक्सर एक प्रकार का टसर सिल्क भी कहा जाता है, लेकिन बनावट में थोड़ा मोटा होने और टसर की चमक की कमी के कारण, यह अक्सर टसर से अलग दिखता है।

हैं। और यदि आप इस बात पर गौर करें कि कोसा रेशम के ये प्रतिभाशाली बुनकर छत्तीसगढ़ की शान हैं तो मैंने सोचा कि उनके कल्याण के लिए हमें उनकी मदद करनी चाहिए'', अर्चना ने कहा।

वह टसर और कोसा सिल्क साड़ियों में फर्क बताती हैं कि टसर में हल्की सी चमक होती है जबकि कोसा की बनावट में मोटी होती है, लेकिन इसकी बहुत किस्में हैं। साड़ी की कीमत 6,000 से 7,000 रुपये से शुरू हो कर 25,000 रुपये तक जा सकती है। लेकिन बुनकरों को इसमें कुछ खास नहीं मिलता। एक महिला को कोसा सिल्क की एक साड़ी बनाने में 1.5 या 2 दिन लगते हैं, जिसके बदले उसे 400-500 रुपये मिलते हैं, लेकिन हर रोज़ काम मिलेगा इसकी कोई गारंटी नहीं है।

इस परियोजना की अध्यक्ष प्रेरणा सुराना कहती हैं, ''कोसा सिल्क छत्तीसगढ़ के घर घर की शान है। हथकरघा के लिए हमारे

प्रेम ने कोसा रेशम को देश क कोने कोने में पहुंचा दिया है और दुनिया भर के डिजाइनरों में इसकी ज़बरदस्त मांग है।

वह आगे कहती हैं, ''इस परियोजना में शामिल हम सभी मानते हैं कि वास्तव में बुनाई रचनात्मकता, फोकस, धैर्य और एकाग्रता का एक बेहतरीन संयोजन है। यह बनाने और बेचने से कहीं परे है और तैयार साड़ी यकीनन दिल से की गई मेहनत का नतीजा है।''

क्लब के सदस्य इस सच्चाई को जान कर अत्यंत द्रवित हो गए जब साड़ियों की बुनाई करने वाली कई लड़कियों ने बेहतर शिक्षा के माध्यम से अपनी ज़िंदगी और कमाई बेहतर करने की इच्छा जताई। एक लड़की ने कहा कि ''मैं कंप्यूटर सीखना चाहती हूँ। इसके आलावा पाँच बेटियों का एक परिवार है और उन्हें वास्तव में हमारी सहायता की ज़रूरत है। इसलिए मैंने उनसे वायदा किया है कि हम एक बड़ी परियोजना करने का प्रयास करेंगे,संभवतः एक वैश्विक अनुदान के माध्यम से और अगर ऐसा हुआ, तो हम इन लड़कियों की शादी करवाने में भी मदद करेंगे... केवल इन्हीं लड़कियां की नहीं बल्कि अन्य युवा महिलाओं की भी।'' अर्चना कहती हैं, जो एक प्रशिक्षित वकील हैं और रियल एस्टेट में भी काम करती हैं।

यहां की महिलाओं में प्रतिभा है और सबसे ज़्यादा मदद की ज़रुरत भी इन्हें ही है। रेशम के ये प्रतिभाशाली बुनकर छत्तीसगढ़ की शान हैं तो मैंने सोचा कि उनके कल्याण के लिए हमें उनकी मदद करनी चाहिए।

अर्चना अग्रवाल

अध्यक्ष, रोटरी क्लब बिलासपुर क्वींस

वह बताती हैं कि उनका एक अखिल महिला क्लब है, इसलिए सदस्यों से बड़ी धनराशि एकत्र करना संभव नहीं है। उनके पति, अरुण अग्रवाल, रोटरी क्लब बिलासपुर मिडटाउन के पूर्व अध्यक्ष, एक चार्टर्ड एकाउंटेंट हैं और उन्होंने इस परियोजना के लिए व्यक्तिगत ₹2 लाख का दान दिया है। सदस्यों की योजना में कम से कम 1,000 लोगों के लिए एक कोविड टीकाकरण शिविर भी प्रस्तावित है।

वह एक रोटेरियन क्यों बनी, इस पर वह कहती है कि वह हमेशा रोटरी और इसकी गतिविधियों और परियोजनाओं में संलग्न रहती थी, ''पहले एक पत्नी के रूप में और फिर स्वयं एक रोटेरियन के रूप में। मुझे अच्छी तरह से यह एहसास है कि ईश्वर ने हमारे परिवार को धन और प्रतिभा और दोनों दिए हैं ... हमारे समाज में सेवा की बहुत आवश्यकता है और अवसर भी उपलब्ध है, इसलिए हम जितनी मदद कर सकते हैं, करनी चाहिए।''

जब मैं परियोजना का शीर्षक काव्यात्मक रखने पर उनकी प्रशंसा की तो अर्चना मुस्कराई, बोली कि शीर्षक निर्धारित करते हुए, ''हमें लगा कि इन महिलाओं के सारे

सपने बुनाई से ही संबंधित हैं, यह शीर्षक यथोचित होगा।''

इससे आगे, प्रेरणा का कहना है कि क्लब के सदस्य इन महिलाओं के लिए एक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म तैयार कर रहे हैं ताकि वहां अपने उत्पाद बेच कर उन्हें बेहतर कीमत मदद मिल सके। ''हम *www. sapnokedhaage.com* नामक एक वेबसाइट बनाएंगे; हमारी योजनाओं में चुरी और शिवनी तीन गांवों सहित तीन केंद्र शामिल हैं और चूंकि लड़कियां डिजिटल साक्षरता भी चाहती हैं, इसलिए हम सिलाई और कढ़ाई मशीनों के अलावा, प्रत्येक केंद्र में पांच कंप्यूटर भी लगाएंगे और सिलाई, कढ़ाई की कक्षाएं आयोजित की जाएंगी ताकि वे अपना उत्पादन बढ़ा सकें और अधिक आय उपार्जित कर सकें।'' इन साड़ियों के विपणन के लिए एक शिल्प मेला या प्रदर्शनी आयोजित करने की योजना भी बनाई जा रही है।

अर्चना कहती हैं, ''डिजिटल पढ़ाई के लिए हम एक ट्यूटर नियुक्त करेंगे, RILM के तहत TEACH के घटक,प्रौढ़ साक्षरता की कक्षाएं आयोजित करेंगे और उनके बच्चों को बुनियादी शिक्षा भी देंगे ताकि वे अपने भविष्य में उम्मीद न खोएं।''

क्लब की एक छोटी वित्तीय इकाई स्थापित करने की भी योजना है जिससे महिलाओं को छोटे स्व-उद्यमों के लिए ऋण दिया जा सके। ''हमारे पास ढेर सारी योजनाएं हैं और इन परिवारों का जीवन बेहतर बनाने और महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए 20-30 लाख रुपये के वैश्विक अनुदान के लिए आवेदन करना चाहते हैं।''

इस परियोजना को विशाल और साहसिक परियोजना बनाने की प्रेरणा रो ई अध्यक्ष मेहता से मिली, जब उन्होंने राष्ट्रीय हथकरघा दिवस पर अगस्त में राशि मेहता के साथ इसका उद्घाटन किया था जिसमें रो ई निदेशक महेश कोटबागी, रो ई सदस्यता अध्यक्ष कमल सांघवी और से डीजी सुनील फाटक (RID 3261) के साथ पीडीजी और संसद सदस्य विवेक तन्खा मौजूद थे, अर्चना ने जानकारी दी।

हम सभी मानते हैं कि वास्तव में बुनाई रचनात्मकता, फोकस, धैर्य और एकाग्रता का एक बेहतरीन संयोजन है। यह बनाने और बेचने से कहीं परे है और तैयार साड़ी यकीनन दिल से की गई मेहनत का नतीजा है।

प्रेरणा सुराणा
परियोजना अध्यक्ष

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

Rotary PEOPLE OF ACTION

सरकार के साथ रोटरी क्लब कोडाई ने सम्पूर्ण पहाड़ी शहर का टीकाकरण किया

रशीदा भगत

कोविड महामारी की पहली और दूसरी लहरों के दौरान जैसे ही पहाड़ियों में कडा लॉकडाउन लागू हुआ रोटरी क्लब कोडाईकनाल, RID 3000 के सदस्य हरकत में आए और स्थानीय समुदाय की परेशानियों को दूर करने के उद्देश्य से सामुदायिक सेवा परियोजनाएं हाथ में ले ली।

क्लब की पूर्व अध्यक्ष (गत वर्ष) कृपा सोन्स बताते हैं, ''कोडाईकनाल, एक पर्यटन शहर होने के नाते बुरी तरह प्रभावित हुआ था, कोविड के कारण सब कुछ बंद हो गया था। पर्यटन के बिना यहां वस्तुतः आजीविका का कोई साधन नहीं था।'' इस 48 वर्षीय प्रतिष्ठित क्लब के 50-रोटेरियनों ने उन लोगों को किराना किट बांटना शुरू कर दिया, जो पर्यटन व्यवसाय पर बहुत अधिक निर्भर थे टैक्सी चालक, दुकानदार, फल और सब्जी विक्रेता , होटल और रेस्तरां कर्मचारी, आदि।

कोडाईकनाल, एक पर्यटन शहर होने के नाते बुरी तरह प्रभावित हुआ था, कोविड के कारण सब कुछ बंद हो गया था। पर्यटन के बिना यहां वस्तुतः आजीविका का कोई साधन नहीं था।

कृपा सोन्स
रोटरी क्लब कोडाईकनाल की पूर्व अध्यक्ष

देखते देखते यह एक विशाल प्रोजेक्ट बन गया। ''मुझे नहीं मालूम कि पैसा कैसे आया, लेकिन आया और हमने काफी अरसे तकस्थानीय लोगों को भोजन उपलब्ध कराया। पहले चरण के अंतर्गत, चार महीने तक लगभग ₹14 लाख की खाद्य किट का वितरण किया गया और जब महामारी चरम पर थी पर्यटन पूरी तरह से बंद हो गया था और पहाड़ियों पर आना जाना भी वर्जित कर दिया गया था, तब हमने लगभग 2,500 को भोजन दिया।'' रोटरी क्लब कोडाई के सदस्यों ने महामारी के दौरान स्थानीय समुदाय को राहत देने के लिए कुल ₹1.13 करोड़ एकत्रित कर खर्च किए।

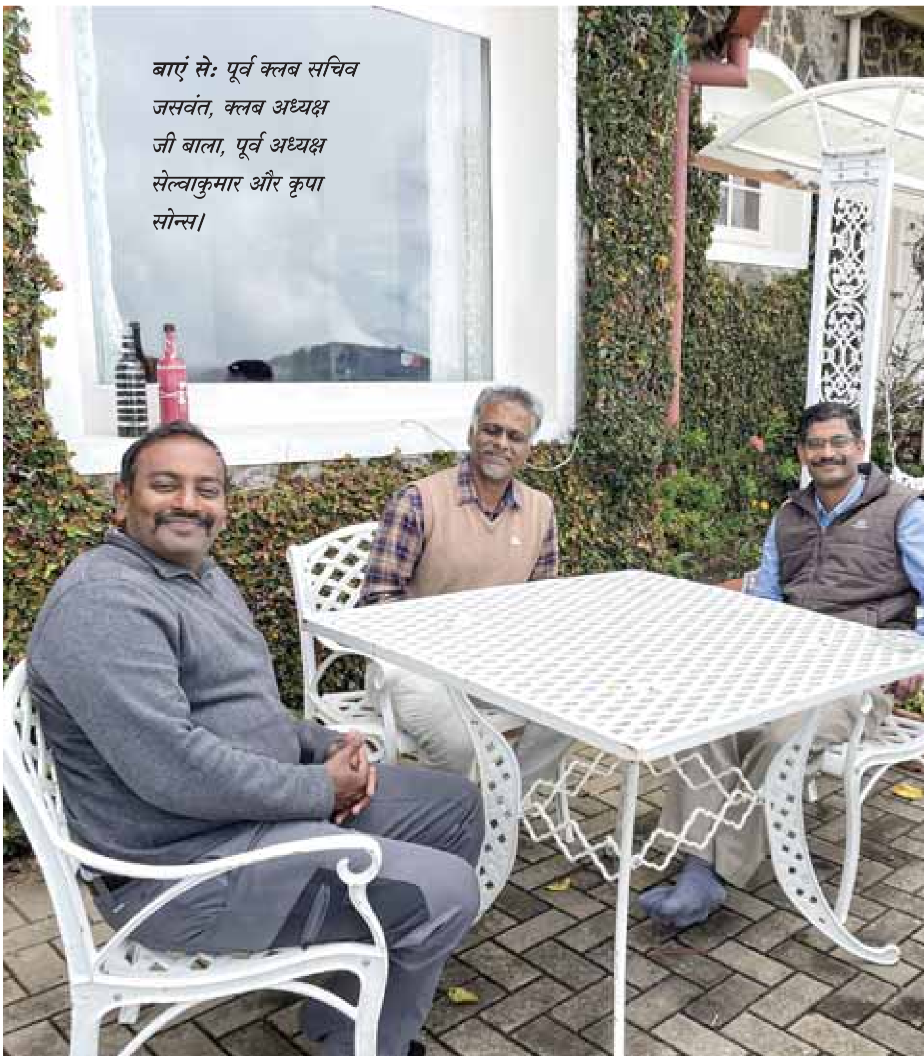

बाएं से: पूर्व क्लब सचिव जसवंत, क्लब अध्यक्ष जी बाला, पूर्व अध्यक्ष सेल्वाकुमार और कृपा सोन्स।

तत्पश्चात, मार्च के तुरंत बाद, सदस्यों ने कोविड के खिलाफ टीकाकरण को अपनाया, और ''सरकार के साथ एक मजबूत सहभागिता की। इस सहभागिता को धन्यवाद, हमें यह कहते हुए अत्यंत गर्व हो रहा है कि इस वायरस के खिलाफ कोडाई की पूरी आबादी का टीकाकरण कर दिया गया है'', कृपा कहती हैं

इस बीच, वह बताती हैं, ''हमारे पास सांस लेने के लिए चार महीने थे और फेलोशिप और हाथ में कुछ कार्यक्रम थे और फिर दूसरी लहर, जो पहली से भी बदतर थी, जिस ने अचानक से धावा बोल दिया था, एक बार फिर से हम सेवा में लग गए।''

पर्यावरण पर फोकस

क्लब के अध्यक्ष जी बाला का कहना है कि इस साल मुख्य रूप से पर्यावरण संरक्षण पर ध्यान केंद्रित किया गया है, रोटरी का सातवां फोकस क्षेत्र। एक उत्साही पर्यावरणविद्, बाला 1985 से पलानी हिल्स संरक्षण परिषद की स्थापना के बाद से ही इस के अभिन्न अंग हैं, और इस लेखक को 1990 के दशक में बाला और परिषद के अन्य सदस्यों के साथ लिया गया साक्षात्कार अच्छी तरह से याद है जब *द इंडियन एक्सप्रेस* में एक श्रृंखला लिखी थी, खतरनाक ढंग से यहां घटती पहाड़ियों पर जो अंधाधुंध खनन गतिविधियों के कारण इस क्षेत्र के पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रही थी।

''इस वर्ष, हमारे क्लब की मुख्य परियोजनाओं में कोडाई झील का पुनरुद्धार, नदी प्रबंधन और धारा प्रवाह का अध्ययन शामिल रहेगा। कोडाई झील पर्यटन के कारण बुरी तरह प्रभावित हुई है और हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि झील में ताज़े पानी की आवक होती रहे।''

वो कहते हैं कि क्लब पंबर नदी के जीर्णोद्धार का काम भी करना चाहता है। पूर्व अध्यक्ष सेल्वा कुमार बताते हैं, ''इस साल क्लब की एक और परियोजना है जिमखाना दलदल का सरक्षण जो कोडाई झील के लिए एक स्पंज की तरह है।'' कोडाई झील के चारों ओर तो बाड़ बनी हुई है, लेकिन दुर्भाग्य से दलदल वाला क्षेत्र खुला है, और अतिक्रमण के अलावा, बेकार निर्माण सामग्री भी दलदल में डाली जा रही है।

''इस तरहं हमारे रोटरी क्लब ने दलदल के चारों तरफ तारबंदी करने और सीमा पर पेड़ लगा कर इसे हरा और घना आवरण प्रदान करने की योजना बनाई है'', बाला कहते हैं। बाड़ की लम्बाई करीब 2 किलोमीटर रहेगी और इस परियोजना पर करीब ₹40 लाख खर्च होंगे।

''स्थानीय पर्यावरण के लिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण है; हमने विस्तार से इसका अध्ययन किया है, डेटा इकठ्ठा किया है और हमारे पास एक स्थायी योजना है, लेकिन हम सरकारी अनुमति की प्रतीक्षा कर रहे है जिसके लिए हमने जिला कलेक्टर को आवेदन कर दिया है'', उन्होंने आगे कहा।

कृपा कहते हैं कि क्लब के सभी सदस्य मिल कर आदिवासियों के गाँव पेरंगाडु में लगभग 37 बच्चों को भोजन खिला रहे हैं, क्लब ने तीन साल पहले इस गाँव को गोद लिया था। ''किसी कारणवश ये बच्चे सरकारी कार्यक्रम दोपहर के भोजन से बाहर रह गए थे। इसलिए हम दोपहर का पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराने के लिए पैसे इकट्ठे करते हैं और इसका खर्च ₹15,000 प्रति माह है।''

इस वर्ष, हमारे क्लब की मुख्य परियोजनाओं में कोडाई झील का पुनरुद्धार, नदी प्रबंधन और धारा प्रवाह का अध्ययन शामिल रहेगा। कोडाई झील पर्यटन के कारण बुरी तरह प्रभावित हुई है और हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि झील में ताज़े पानी की आवक होती रहे।

जी बाला, क्लब अध्यक्ष

RID 3000 के असिस्टेंट गवर्नर और रोटरी क्लब कोडाईकनाल के पूर्व अध्यक्ष राजकुमार रमन का कहना है कि क्लब इस क्षेत्र में आदिवासी समाज के कल्याण पर अपना ध्यान केंद्रित कर रहा है। क्लब अध्यक्ष (2016-17) के रूप में उनके वर्ष के दौरान हमने कोडाई से लगभग 22 किमी दूर वल्लंकुलम की आदिवासी बस्ती को अपनाया था। ''हम वहां स्वास्थ्य सेवा और साक्षरता के स्तर में सुधार करने का प्रयास कर रहे हैं। लेकिन मेरे साल का मुख्य आकर्षण था मेरे सपनों की परियोजना, इस गांव में सौर बिजली लाना और जब उन्हें सौर ऊर्जा मिल गई तो ग्रामीण बहुत खुश हुए। उन्होंने कहा कि हमारे पूर्वज यहां 250 साल से रह रहे हैं, लेकिन हमने अपने घरों में पहली बार बिजली देखी है।''

गाँव में उपलब्ध सौर ऊर्जा की वजह से, आज ग्रामीणों कोअपने मोबाइल फोन चार्ज करने के लिए दूसरे गांव तक जाने की जरूरत नहीं है। रमन कहते हैं, ''इस परियोजना की लागत लगभग ₹4 लाख आई थी, और मैंने इसे अपने पिता की स्मृति में वित्त पोषित किया है, जो ऊटी के सरकारी स्कूल में प्रधानाध्यापक रह चुके हैं, और हमारे इस कार्य से 32 परिवारों को फायदा हुआ है।''

उन्होंने कहा कि इस साल RID 3000 के डीजी आर जयक्कन ने साक्षरता और पर्यावरण के क्षेत्रों में

दाएं से: वल्लकुलम में मीरा राजकुमार, RID 3000 के AG राजकुमार रामन, रोटेरियनों वसंत, जसवंत, कार्तिक और क्लब अध्यक्ष जी बाला।

आदिवासी ग्रामीणों की मदद के लिए कुछ विशेष परियोजनाएं निर्धारित की हैं। ''इसलिए कोडाई झील की सफाई हमारी प्राथमिकता सूची में बहुत ऊपर है'', वे कहते हैं।

अध्यक्ष बाला और कृपा ने कहा कि चूंकि लॉकडाउन ने कोडाईकनाल आबादी की कमी को उघाड़ दिया है जो मुख्य रूप से पर्यटन आय पर निर्भर है, हमारे रोटेरियन अपना ध्यान RILM कार्यक्रम के तहत शिक्षा स्तर में सुधार पर केंद्रित कर रहे हैं और व्यावसायिक कौशल प्रशिक्षण पाठ्यक्रम भी आयोजित करने जा रहे है।

क्लब की कोविड राहत सेवा के तहत किराना किट का वितरण किया गया।

बाला कहते हैं, ''कोविड महामारी के दौरान हमने महसूस किया कि यहां लगभग सभी लोग पर्यटन पर निर्भर हैं, हमें उनकी आजीविका के लिए रोजगार उपलब्ध कराने के बारे में सोचना होगा। इसलिए एनजीओ सुरक्षा बंधन के साथ साझेदारी में, जो एक स्वयं सहायता समूह चलाता है, हम महिलाओं के लिए सिलाई और कढ़ाई की कक्षाएं आयोजित करने जा रहे हैं और उन्हें अपने उत्पादों को बेचने के लिए विपणन में सहायता भी करेंगे।''

सेल्वाकुमार कहते हैं कि पेरंगाडु में, जिसे क्लब ने गोद लिया था, ''कई अच्छी चीजें होने लगी हैं। हमारे क्लब के सहयोग से गांव में अच्छी सड़कें, पानी की आपूर्ति और बिजली पहुंची है।''

क्लब के पूर्व सचिव जसवंत कहते हैं, ''हमने वहां पढ़ाई के लिए एक नई कक्षा का निर्माण किया है, एक व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किया है और एक ऐसे परिवार को छत बना कर दी है जिस में कमाई करने वाला दुनिया में नहीं रहा । हमने ऊथु के पास नायडूपुरम में एक बस शेल्टर भी बनाया है।''■

Rotary PEOPLE OF ACTION

नदी के पानी के संरक्षण के लिए फूलों के कचरे का पुनर्चक्रण

जयश्री

नासिक में, शादियों और पूजा स्थलों में इस्तेमाल होने के बाद सूखे फूलों का अब रोटरी क्लब नासिक गोदावरी, रो ई मंडल 3030, की एक पहल की वजह से एक नया उपयोग किया जा रहा है। क्लब ने फूलों के बाजारों और खेतों से इस्तेमाल किए गए या बिना बिके फूलों को एकत्रित करने के लिए विभिन्न स्थानों पर संचय पेटियाँ स्थापित की है। इन फूलों को पुनर्चक्रित करके उनका उपयोग पर्यावरणीय अनुकूल अगरबत्ती, रंग एवं जैविक कृमि खाद बनाने के लिए किया जाता है।

इस्तेमाल किये फूलों को इकठ्ठा करते रोटरी क्लब नासिक गोदावरी के सदस्य।

नासिक गोदावरी नदी के तट पर स्थित मंदिरों का एक शहर है जहाँ भक्त देवताओं को चढ़ाने के लिए माला के रूप में बहुत सारे फूल लेकर इन मंदिरों में आते है। ''शायद ही किसी ने कभी सोचा होगा कि आखिर इन फूलों का क्या किया जाता होगा। मूर्तियों से इस्तेमाल हो चुके फूलों और बाजार से बिना बिके फूलों को हटाकर नदी में फेंक दिया जाता है जिससे वह प्रदूषित होती है। इन फूलों की खेती में इस्तेमाल किए जाने वाले कीटनाशक नदी के पानी को अत्यधिक जहरीला बना देते है'', क्लब अध्यक्ष राकेश सिंघल कहते है।

जब क्लब की सदस्य दीप्ति जनोरकर ने शिरडी के साईंबाबा मंदिर में फूलों की भारी मात्रा को पुनर्चक्रित करने जैसा विचार प्रस्तुत किया, तो क्लब ने इसे उत्सुकता से स्वीकार कर लिया। ''दीप्ति ने शिरडी की अपनी यात्रा के दौरान उनकी फूल प्रसंस्करण इकाई का दौरा किया था। साईंबाबा मंदिर में भक्त श्रद्धापूर्वक प्रतिदिन कम से कम 800 किलोग्राम फूल चढ़ाते है'', सिंघल कहते है।

बचे फूलों से कागज और अन्य कचरे को अलग करते हुए।

क्लब ने एकत्रित फूलों को अलग करने, धूप में सुखाए गए फूलों से पंखुड़ियों को अलग करने और चारकोल मुक्त अगरबत्ती, धूप और रंग बनाने के लिए उनका पाउडर बनाने के लिए कुछ महिलाओं को नियुक्त किया है। डंठल और कम ताजे फूलों का इस्तेमाल कृमि खाद बनाने के लिए किया जाता है।

क्लब अध्यक्ष कहते है कि पुनर्चक्रित फूलों से निर्मित सभी उत्पाद बाजार में बेचे जाते है और इससे प्राप्त राशि का इस्तेमाल परियोजना के खर्चों को पूरा करने के लिए किया जाता है, जिसमें इस गतिविधि में संलिप्त महिलाओं का भुगतान करना भी शामिल है। ''यह परियोजना वंचित महिलाओं को भी लाभ पहुँचाती है, जिससे उन्हें न केवल वित्तीय सहायता मिलती है बल्कि मान-सम्मान भी प्राप्त होता है। साथ ही इससे पर्यावरण को भी लाभ मिलता है'', वह मुस्कुराते है।

क्लब जल्द ही आस-पास के गांवों को शामिल करके इस पहल को आगे बढ़ाने के लिए पूरी तरह तैयार है। ■

आजीविका का समर्थन

टीम रोटरी न्यूज़

PDG मुकुल सिन्हा (दाएं) एक लाभार्थी के साथ।

रोटरी क्लब कलकत्ता ईस्ट सेंट्रल, RID 3291 ने दक्षिण 24 परगना में करंजलि ग्राम पंचायत में 20 पुरुषों को साइकिल वैन और 10 महिलाओं को सिलाई मशीन वितरित की। क्लब के RCC चकदूलालपुर अरुणोदय संघ द्वारा लाभार्थियों की पहचान की गई थी और स्वर्णबीर नामक परियोजना को मंडल अनुदान द्वारा समर्थित किया गया था।

वितरण कार्यक्रम की अध्यक्षता पीडीजी मुकुल सिन्हा ने की।■

सेलम अस्पताल को एक ऑक्सीजन टैंक मिला

रोटरी क्लब सेलम कॉसमॉस के, रो ई मंडल 2982 ने सलेम के सरकारी मेडिकल अस्पताल में ₹30 लाख की कीमत एवं 6 किलोलीटर क्रायोजनिक क्षमता का ऑक्सीजन टैंक लगाया है। इस सुविधा को स्थापित करने के लिए आवश्यक धनराशि क्लब के अध्यक्ष डॉ सुगवानम के नेतृत्व में रिकॉर्ड 70 दिनों में जुटाई गई और इसका उद्घाटन तमिलनाडु के स्वास्थ्य मंत्री एम सुब्रमण्यम के द्वारा किया गया।

***बाएं से:** अध्यक्ष डॉ सी सुगवनम, DG के सुंदरलिंगम और PDG के एस वेंकटेशन।*

ऑक्सीजन टैंक की समय-सीमा 30 वर्ष तक की है और यह 350 रोगियों को उच्च गुणवत्ता युक्त ऑक्सीजन प्रदान करेगा। क्लब के अध्यक्ष के अनुसार यह सुविधा अस्पताल के लिए एक वरदान है जिसने हाल ही में कोविड की उग्रता के समय गैस की भारी कमी का अनुभव किया था।

क्लब को 1997 में चार्टर्ड किया गया था और यह सलेम में अपनी मानवीय परियोजनाओं के लिए जाना जाता है, जैसे कि यरकौड में आदिवासियों हेतु घर बनाना, ग्रामीण और अर्ध-शहरी स्कूलों में शौचालय बनाना और कुछ अनाथालयों में बायोगैस संयंत्र स्थापित करना आदि।■

रोटरी, अच्छाई का एक भव्य समागम

वी मुत्तुकुमारन

रो ई निदेशक महेश कोटबागी ने कहा कि जिस तरह एक ऑर्केस्ट्रा का प्रधान संवाहक बांसुरी, वायलिन, बैस गिटार और तबला जैसे विभिन्न वाद्ययंत्रों से एक मधुर संगीत रचना तैयार करता है, उसी तरह एक क्लब अध्यक्ष दुनिया में अच्छा करने के लिए सदस्यों के अलग-अलग विचारों और दृष्टिकोणों का तालमेल बैठाता है। "रोटरी में क्लब अध्यक्षों के हाथों में असली ताकत होती है क्योंकि वे जमीनी स्तर पर संगठन को आकार देते है, जबकि रो ई अध्यक्ष, ज़ोन निदेशक और मंडल गवर्नर केवल ऊपर से ही रोटेरियनों को प्रेरित कर सकते है", उन्होंने कहा।

चेन्नई में रो ई मंडल 3231 द्वारा आयोजित मरुमलार्ची (नवचेतना) नामक तीन दिवसीय PETS के उद्घाटन सत्र में बोलते हुए, उन्होंने कहा, "रोटरी ऐसे स्वयंसेवकों का एक संगठन है जो अपनी मर्जी से अच्छा करके अच्छा महसूस करने हेतु पैसा, समय और प्रयास देने के लिए एक साथ आते है। उन्होंने कहा कि रोटेरियनों के बीच इस तालमेल से मानवता को समृद्ध बनाने वाले हैप्पी स्कूलों, अस्पतालों एवं अन्य सुविधाओं का निर्माण हुआ है।"

देश के 39 रो ई मंडलों में से रो ई मंडल 3231 ही एकमात्र ऐसा मंडल था जिसने जुलाई में नए अध्यक्षों द्वारा क्लबों का कार्यभार संभालने के तुरंत बाद PETS की मेजबानी की थी, जो वाकई में सराहनीय था।

जब DG निर्मल राघवन और मंडल प्रशिक्षक PDG सी आर चंद्रबॉब ने उन्हें आमंत्रित किया, तो उन्होंने "10 दिनों में 12 राज्यों की यात्रा करने के बावजूद निमंत्रण को तुरंत स्वीकार किया क्योंकि PETS से मुझे संतुष्टि मिलती है।"

एक बदले हुए इंसान

दशकों पहले आयोजित एक चिकित्सीय मिशन शिविर के दौरान, कोटबागी ने कहा कि वह 7 वर्षीय नन्ही और अपंग पूजा से मिले। "जब मैंने उससे उसके सपने के बारे में पूछा तो उसने कहा: मेरा सपना है कि मैं अपने जीवन में बिना किसी की मदद के स्वयं शौचालय जाकर आ सकूँ।" उसकी अवस्था से विचलित होकर, उन्होंने उस लड़की की तुरंत दो सर्जरियों की व्यवस्था की, जिसके बाद उसे एक पहिएदार वॉकर दी गई। वॉकर के साथ पश्चिमी शैली के शौचालय से बाहर निकलते वक्त "उसकी मुस्कान ने मुझे हमेशा के लिए बदल दिया।" पूजा मुट्ठी बंद किए उनके पास लँगड़ाते हुए चलकर आई और उनके मुँह में एक चॉकलेट रख दी, "उस मिठास का स्वाद मेरी जबान पर लंबे समय तक रहा और मैं इस भावना (लड़की की मदद करने) को अपने पेशे की सर्वोच्च उपलब्धियों में से एक मानता हूँ।"

RID 3231 के PETS और फेलोशिप मीट में (बाएं से) इवेंट चेयरमैन एम राजनबाबू, मंडल काउंसलर PDG ए संपतकुमार, ट्रेनर पीडीजी सी आर चंद्रबोब, RID महेश कोटबागी, DG निर्मल राघवन और नंदिनी निर्मल।

सोशल मीडिया के माध्यम से होने वाली केवल ऑनलाइन बैठकों और नेटवर्किंग के बाद एक भौतिक बैठक के आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए, ऊ निर्मल राघवन ने कहा, "मेरी पत्नी और बेटी इस समुद्र तट के किनारे स्थित रिसॉर्ट में तीन दिनों के लिए 200 से अधिक रोटेरियन, एन्स और एनेट्स के साथ रहने को लेकर उत्साहित है क्योंकि मेलजोल फिर शुरू हो गया है।" मंडल ने पिछले दो महीनों (जुलाई-अगस्त) में लगभग 400 नए सदस्य जोड़े है, जिनमें से 200 ने *rotary.org* पोर्टल पर पंजीकरण कराया है। उन्होंने क्लब अध्यक्षों से रोटरी इंडिया ऐप का सर्वोत्तम उपयोग करने के अलावा अपनी अपलोड की गई परियोजनाओं एवं सूचनाओं को *rotary.org (माई रोटरी)* और *rotaryindia.org* दोनों पर समक्रमिक करने का आग्रह किया।

PDG चंद्रबॉब ने कहा कि प्रत्येक क्लब को कम से कम एक रोटरेक्ट क्लब को प्रायोजित करना चाहिए क्योंकि "पदानुक्रम में उनके उत्थान के बाद, रोटरेक्टरों को समान महत्व दिया जाता है। पिछले दो महीनों में हुई जबरदस्त वृद्धि के साथ, हम उम्मीद कर सकते है कि अवसर मिलते ही क्लब बड़ी सेवा परियोजनाएं शुरू करेंगे।" अपने संबोधन में मंडल क्लब सेवा निदेशक और कार्यक्रम अध्यक्ष एम राजनबाबू ने विश्वास जताया कि "एक बार फिर हम खुशी भरे दिन देखेंगे;" मंडल परामर्शदाता झऊ संपतकुमार ने क्लब अध्यक्षों से बेहतरीन सेवा परियोजनाएं करने का आग्रह किया।

जैसे ही कोटबागी की उपस्थिति में नए मंडल रोटरेक्ट परिषद ने कार्यभार संभाला, IPDRR सेन्दामरै ने DRR सुजतिह राजू (21-22) को नेतृत्व की कमान सौंपी। DG राघवन ने *रोटरी न्यूज़* को बताया कि उन्होंने AGयों, मंडल सचिवों, परामर्शदाताओं एवं प्रशिक्षकों के लिए रोटरी लीडरशिप इंस्टीट्यूटों का संचालन किया था और तीसरा भी जल्द ही आयोजित किया जाएगा।

चित्र: वी मुत्तुकुमारन

द रोटरी फाउंडेशन महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित

अज़ीज़ मेमन

440.9
Million USD
Raised by Rotarians

Number of district grants: 467
Total funding:
$31.1 million

Number of disaster response grants: 55
Total funding:
$3.1 million

Number of global grants: 2,066
Total funding:
$130 million

Number of programmes of scale grants: 1
Total funding: $2 million

आज, हम सब महामारी के कारण उत्पन्न हुई चुनौतियों से निरंतर जूझ रहे हैं। लेकिन जब महामारी का सामना करने की बात आती है, तो हम (पीपल ऑफ़ एक्शन) काम करने वाले लोग हैं: स्थायी परिवर्तन करने वाले लोग। फाउंडेशन के संसाधनों से लैस, हम दुनिया भर के हजारों समुदायों में परिवर्तन ला सकते हैं। हमारे प्रयासों में निम्न शामिल हैं, लेकिन प्रयास यहीं तक सीमित नहीं हैं:

- टीकों का न्यायसंगत वितरण सुनिश्चित करना
- टीके सम्बन्धी भ्रामक प्रचार से निपटना
- कोविड वायरस के प्रसार की गति धीमी करना

अभी तक, कोविड-19 के खिलाफ लड़ाई में वैश्विक अनुदान के माध्यम से 46 मिलियन डॉलर से अधिक खर्च हो चुके हैं। हम जानते हैं कि 30 जून, 2021 तक, हमारे फाउंडेशन ने विभिन्न परियोजनाओं के लिए 5.5 बिलियन डॉलर से अधिक जुटाए हैं और निवेश किए हैं जिनका हमारे समाज पर दूरगामी और स्थायी प्रभाव पडेगा। दुनिया भर में शांति बहाल करने, बीमारी से लड़ने, स्वच्छ पानी उपलब्ध कराने, माताओं और बच्चों को बचाने, शिक्षा को प्रोत्साहित करने और स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को विकसित करने के लिए किये गए निवेश रोटरी सदस्यों को और समर्थ बनाएंगे।

और पूरा करता है

152.9

Million USD

Total funding for Polio eradication grants

Grants and Funding

पिछले रोटरी वर्ष में, हमने 410 मिलियन डॉलर जुटाने का एक महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया था। रोटेरियन मिल कर साथ आये और हमने 440.9 मिलियन डॉलर से अधिक एकत्रित कर फाउंडेशन का लक्ष्य प्राप्त किया। इन फण्ड में एकत्रित धन राशि से पोलियो उन्मूलन में, दुनिया भर में शांति स्थापित करने वालों को सशक्त बनाने तथा हमारे फोकस क्षेत्रों में सदस्यों के नेतृत्व वाली परियोजना के क्रियान्वयन में हमारे प्रयासों को, मंडल और वैश्विक अनुदानों से बल मिला है। रोटेरियन और हमारे फाउंडेशन के मित्रों को उनकी उदारता के लिए धन्यवाद, हमने 2020-21 में वैश्विक अनुदान के लिए 143 मिलियन डॉलर से अधिक वितरित किये हैं । जबकि पोलियो उन्मूलन के लिए कुल अनुदान 152.9 मिलियन डॉलर रहा।

पोलियो उन्मूलन की लड़ाई जारी रखने के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात जो रोटरी के सदस्य कर सकते हैं, वह है पोलियो उन्मूलन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता बनाए रखना और इस वर्ष, हम *टीआरएफ एंडॉमेंट फण्ड* का बड़ा लक्ष्य रख रहे हैं : सन 2025 तक 2025 का प्रयास, वर्ष 2025 तक एंडॉमेंट फण्ड का लक्ष्य 2.025 बिलियन डॉलर एकत्रित करने का लक्ष्य रखा है। इसके साथ कोविड -19 प्रतिक्रिया की गतिविधियों को भी सहयोग जारी रहेगा।

मैं इंटरेक्ट, रोटरेक्ट, और रोटरी क्लब के सदस्यों और अन्य रोटरी प्रतिभागियों के बीच हमारे जुड़ाव और प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने की आवश्यकता पर जोर देना चाहता हूं। हमें सभी प्रतिभागियों के बीच आपसी समन्वय और सहयोग बढ़ाने की आवश्यकता है, विशेषकर रोटरी क्लबों और रोटरैक्ट क्लबों के बीच। हमारे रोटरैक्टर डिजिटल युग में बड़े हो रहे हैं और समाज में अकेलेपन की समस्या के बावजूद आपस में जुड़ने के नए नए तरीके खोजने में हमें उनकी क्षमता और प्रतिभा का उपयोग करना चाहिए। आज समय है रोटरैक्टर्स को आमंत्रित करने का ताकि वो हमारे भविष्य को आकार दे सकें । मुझे यकीन है कि आप में से कुछ लोगों ने आपस में जुड़ने और सेवा करने के लिए नए और रचनात्मक तरीके खोजे हैं, जिन्हें हमें कोविड बाद के युग में भी जारी रखना चाहिए। कुछ क्लब ऑनलाइन और व्यक्तिगत बैठकों का मिश्रित प्रयोग कर सकते हैं, और निश्चित रूप से इसे सदस्यों के लिए आयोजित करने की भी स्वतंत्रता है ।

अपने श्रेष्ठ स्तर पर, रोटरी आमूल परिवर्तन करने के लिए एक हिंडोला उपलब्ध कराता है। फिर चाहे पोलियोप्लस हो या ग्लोबल ग्रांट, वास्तविक अंतर लाने के लिए किसी भी सदस्य का एक विचार ही पर्याप्त है। आपकी उत्कृष्ट सेवा और योगदान के लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ साथ ही आपसे अपील करता हूं कि आप जो भी दे सकते हैं वह रोटरी फाउंडेशन को दें ताकि वैश्विक स्तर पर सार्वजनिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में की गई उल्लेखनीय प्रगति को हम जारी रख सकें।

लेखक द रोटरी फाउंडेशन के ट्रस्टी हैं

आपके गवर्नर्स

परवीन जिंदल

टेक्सटाइल्स, रोटरी क्लब मोगा स्टार, RID 3090

इंटरेक्टर से मंडल अध्यक्ष तक

जब वह कक्षा 8 में पढ़ रहे थे, तो उन्हें इस बात से बहुत तकलीफ होती थी कि उनका सबसे अच्छा दोस्त स्कूल नहीं जा सकता, क्योंकि उसके परिवार के पास स्कूल फीस भरने के पैसे नहीं थे। मैंने रोटरी और उसके भलाई के काम के बारे में सुन रखा था, सहायता के लिए मैं तुरंत दौड़ कर रोटरी क्लब मोगा के तत्कालीन अध्यक्ष रतन नंदा के पास गया। उनके क्लब ने ना केवल फीस का भुगतान किया बल्कि मेरे दोस्त की पूरी स्कूली शिक्षा का खर्च भी उठाया, परवीन जिंदल 1986 की इस घटना को याद करते भावुक हो जाते हैं। और रोटरी की इस सहायता से प्रेरित होकर, वह 1990 में एक इंटरेक्टर बन गए और फिर रोटारेक्टर बने,1996-97 में डीआरआर के रूप में अपने मंडल का प्रतिनिधित्व किया और अंततः वर्ष 2000 में रोटरी में शामिल हो गए।

उनके मंडल के पांच क्लबों ने हर एक लाये एक (EOBO) का लक्ष्य अभी से प्राप्त कर लिया है। अपने कार्यकाल में 128 रोटरी क्लब बनाने के अलावा, 16 नए रोटरी क्लब, 32 नए रोटारेक्ट क्लब और 64 नए इंटरेक्ट क्लब आरम्भ करने की योजना है। क्लब की वर्तमान 2,000 सदस्य संख्या में 1,000 नए सदस्यों को जोड़ना उनका लक्ष्य है। हाल ही में हरियाणा के भिवानी जिले में प्रौढ़ साक्षरता की कक्षाएं संचालित करने के लिए RILM की मदद से टेक महिंद्रा और वैश्य ट्रस्ट के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। हम 5,000 से अधिक प्रौढ़ शिक्षार्थियों तक पहुँच रहे हैं और साथ ही वर्तमान में प्रासंगिक TEACH प्रोजेक्ट भी हाथ में ले रहे हैं।

प्रोजेक्ट प्रयास एक मुस्कान उन बच्चों की मौलिक ज़रूरतों को पूरा करेगा जिन्होंने कोविड के दौरान अपने माता पिता खो दिए, उन्हें वित्तीय सहायता देकर और छात्रों को स्टेशनरी, पौष्टिक आहार, दवा इत्यादि उपलब्ध करवा कर उनकी प्राथमिक शिक्षा पूरी करने में मदद करेगा। एक अनूठी पहल के अंतर्गत, गरीब परिवारों के 16 स्कूल टॉपर्स सपने सच हुए प्रोजेक्ट के तहत एक भव्य होटल में 4 दिन के प्रवास के साथ-साथ हवाई यात्रा का आनंद लेंगे, और इससे उन्हें आशा है, हमारी सार्वजनिक छवि में वृद्धि होगी और सद्भावना का प्रसार होगा।

उनके क्लब छात्रों को बीज युक्त 50,000 पेंसिल वितरित करेंगे जिन्हें उपयोग के बाद फेंक देने पर वे अंकुरित हो कर अगले कुछ वर्षों में पेड़ बन जाएंगी। जिंदल ने पंजाब, हरियाणा और राजस्थान के शहरों में 50 मियावाकी तकनीक से वनों का सृजन करने की योजना बनाई है। पूरे क्षेत्र में क्लब एक लाख से अधिक पौधे रोपित करेंगे। उनका TRF लक्ष्य 150,000 डॉलर है। उनकी पत्नी, रतन नलिनी को 2014-15 में रो ई का सर्वश्रेष्ठ जीवनसाथी का पुरस्कार मिला, था, उनके दो बच्चे हैं - पुत्र रोटेरियन मयंक जिंदल और बेटी इशिका, एक मंडल की इंटरेक्ट प्रतिनिधि कई हैं। यह एक पीएचएफ परिवार है।

अशोक के मंगल

विद्युत अभियंता, रोटरी क्लब पालनपुर, RID 3054

पर्यावरण, स्वास्थ्य और साक्षरता सर्वोच्च प्राथमिकता

अशोक मंगल ने रोटरी की छवि में वृद्धि करने के लिए क्लबों को राजस्थान और गुजरात के ग्रामीण क्षेत्रों में सघन वृक्षारोपण और स्वास्थ्य शिविर लगाने के निर्देश दिए है। मंडल के क्लब दो लाख से अधिक पौधे लगाएंगे और आवासीय क्षेत्रों में प्लास्टिक कचरे की सफाई करने के लिए मंडल में कम से कम 50 पेट बोतल क्रशिंग इकाइयां स्थापित की जाएंगी। ''500 विशाल स्वास्थ्य शिविरों के माध्यम से हमने जनता को स्वस्थ जीवन के महत्व पर जागरूक करने की योजना बनाई है। हमारे सदस्य सोशल मीडिया पर निरंतर अभियान के माध्यम से समाज के अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचेंगे। चिकित्सा शिविरों में, बीपी, मोटापा और मधुमेह जैसे स्वास्थ्य मानकों का परीक्षण कर उचित परामर्श दिया जाएगा।''

पांच वैश्विक अनुदान परियोजनाएं विचाराधीन हैं, जिसमें 15-20 जिला अस्पतालों में चिकित्सा उपकरण और ऑक्सीजन कंसन्ट्रेटर (GG: 300,000) का वितरण सम्मिलित है। साक्षरता के अंतर्गत, हमारे क्लब सरकारी स्कूलों में TEACH के संभी क्षेत्रों में परियोजनाएं शुरू करेंगे।

मंगल ने टीआरएफ अनुदान के लिए 800,000 डॉलर का लक्ष्य रखा है। उनके मंडल के 7,000 से अधिक सदस्यों में वे 1,000 से अधिक सदस्यों को जोड़ने, और क्लब संख्या में 10 प्रतिशत की वृद्धि के प्रति आश्वस्त हैं। मैं कई सैटेलाइट क्लब, पासपोर्ट क्लब और कार्य-आधारित क्लब की शुरुआत करूंगा क्योंकि आने वाले वर्षों में मिश्रित क्लबों का प्रचलन बढ़ेगा। रो निर्मल जैन से प्रभावित होकर 1998 में वह रोटरी में शामिल हुए।

से मिलिए

वी मुत्तुकुमारन

रमेश विश्वनाथ मेहर

हॉस्पिटैलिटी, रोटरी क्लब नासिक वेस्ट, RID 3030

एक मेगा राहत चिकित्सा शिविर

उनका उद्देश्य सेवा परियोजनाओं में अधिक से अधिक संख्या में गैर-रोटेरियनों और अन्य गैर सरकारी संगठनों को शामिल कर रोटरी की सार्वजनिक छवि को मजबूत करना रहेगा।

उन्होंने गोंदिया जिले में चंद्रपुर के पास एक नक्सली बेल्ट में, सरकारी और निजी अस्पतालों के साथ मेडिकल कॉलेजों के सहयोग से 5 दिवसीय राहत चिकित्सा शिविर लगाने की योजना बनाई है। वे बताते हैं, इस चिकित्सा परियोजना का आयोजन लगभग 2,000 रोटेरियन करेंगे, जिसमें सामान्य बीमारियों के लिए 25,000 से अधिक ग्रामीणों की जांच की जाएगी और मामूली सर्जरी भी की जाएगी। 14 अक्टूबर को रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता के जन्मदिन के उपलक्ष्य में, सम्पूर्ण मंडल में चार दिवसीय रक्तदान शिविर आयोजित किए जाएंगे।

सीएसआर और GG, दोनों की सहायता से ₹30 लाख की लागत वाले कम से कम चार डायलिसिस केंद्र स्थापित किए जाएंगे। इसी तरह, विभिन्न अस्पतालों में चार नवजात आईसीयू (प्रत्येक ₹50 लाख) का निर्माण किया जायेगा। युवा लड़कियों को आत्मरक्षा तकनीक सिखाई जाएगी। कम से कम दो लाख छात्राओं को प्रशिक्षित किया जायेगा। नासिक जिले के ओज़र, निफाड कस्बों और जलगांव जिले के दूरदराज के इलाकों जैसे अप्रतिनिधित्व वाले क्षेत्रों में कम से कम पांच नए क्लब शुरू करना। ''मौजूदा 4,900 रोटेरियन में 750 नए सदस्य जोड़ना चाहता हूँ।'' योगदान के माध्यम से 120 से अधिक, शिशु हृदय शल्य चिकित्सा और 2,000 मोतियाबिंद ऑपरेशन किये जायेंगे। उनका टीआरएफ लक्ष्य 500,000 डॉलर है। रोटेरियन रतन जयंत स्टालेकर ने उनसे रोटरी में शामिल होने का आग्रह किया और वह 1991 में जुड़ गए।

के प्रभाकर

कंपनी ऑडिटर, रोटरी क्लब हैदराबाद सेंट्रल, RID 3150

गांवों में सेवा परियोजनाओं का विस्तार करेंगे

रो ई बोर्ड द्वारा मंडल अध्यक्ष के खर्चों और भत्तों में भारी कटौती के बाद, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश में नियमित रूप से दूर-दराज के ग्रामीण क्षेत्रों में जा कर सेवा परियोजनाएं शुरू करना और वहां के लोगों को रोटरी में शामिल होने के लिए प्रेरित करना हमारे लिए और कठिन हो गया है'', प्रभाकर का कहना है। 1,500 सदस्यों की वृद्धि और 30 नए क्लब जोड़ना उनका लक्ष्य है, कुल मिलाकर इनकी संख्या को क्रमशः 5,400 और 114 से अधिक बढ़ाना है। तेलंगाना में एक मैमोग्राफी वैन (GG: ₹1.5 करोड़) और गुंटूर में एक मोबाइल नेत्र क्लिनिक (GG: ₹1.5 करोड़) की शुरुआत शीघ्र ही की जाएगी। प्रत्येक परियोजना से 1,500 ग्रामीण लाभान्वित होंगे और उचित निदान के लिए ये परियोजनाएं प्रशिक्षित पैरामेडिकल स्टाफ द्वारा संचालित की जाएगी। मैं तेलंगाना के राजस्व जिलों और आंध्र के दो जिलों में कम से कम 1,000 नए रोटारेक्टर्स को शामिल करने का प्रयास करूंगा।'' टीआरएफ के लिए अपना लक्ष्य उन्होंने 1 मिलियन डॉलर रखा है।

लेकिन उनकी सबसे बड़ी चिंता है महामारी जो गांवों में चल रही रोटरी परियोजनाओं को बुरी तरह से प्रभावित कर रही है और ''हमें दूर-दराज के इलाकों में अपनी सार्वजनिक छवि बनाए रखने के लिए अपना काम पुनः आरम्भ करना होगा।'' एक अन्य चुनौती यह है कि कुछ रोटेरियनों को वार्षिक बकाया अधिक लगता है और मौजूदा सदस्यों को क्लब में बनाए रखना मुश्किल होगा। नए रोटेरियनों को प्रेरित कर क्लब में शामिल करने के लिए, ''मुझे नियमित रूप से यात्राऐं करनी पड़ती है, लेकिन इस कार्य के लिए उपलब्ध अल्प राशि के साथ।'' जुलाई में ही उन्होंने 30 क्लब पदस्थापन आयोजनों में भाग लिया है। रोटेरियन विजयलक्ष्मी शेखावत से प्रेरित हो कर वह 1995 में रोटरी में शामिल हुए थे।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

डिजिटल शिक्षा का समय आ गया है

किरण ज़ेहरा

स्कूली शिक्षा परिवर्तन के दौर में है, क्योंकि महामारी ने विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को ऑनलाइन कक्षाओं के लिए स्मार्टफोन का उपयोग करने हेतु मजबूर किया है। ''रो ई निदेशक महेश कोटबागी ने कहा, अब कक्षाएं स्मार्टफोन पर संचालित की जा रही है, जबकि पूर्व में हमने छात्रों को मोबाइल फोन का उपयोग न करने को लेकर प्रोत्साहित किया था। शिक्षकों की जिम्मेदारी बड़ी है क्योंकि उन्हें अपने कौशल को अपडेट करना होगा, तरक्की के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करना होगा अन्यथा वे पिछड़ जाएंगे'', उन्होंने कहा।

रोटरी क्लब सोलापुर, रो ई मंडल 3132, द्वारा आयोजित *टीचिंग इन द 21st सेन्चरी* (21वीं सदी में शिक्षण) नामक एक वेबिनार को संबोधित करते हुए, कोटबागी ने कहा कि कक्षाओं में डिजिटल बदलाव आने की वजह से निकट भविष्य में विद्यार्थी भारी-भरकम स्कूली किताबें नहीं ले जाएंगे, बल्कि केवल एक कंप्यूटर टैबलेट से ही काम हो जाएगा।

RILM के अध्यक्ष कमल संघवी ने कहा कि कोविड ने एक तरह से रोटरी के साक्षरता मिशन को गति प्रदान की है। ''हम सफलतापूर्वक अपनी डिजिटल शिक्षण सामग्री को दूरदर्शन के फ्री डिश के माध्यम से 15 मिलियन घरों तक, जियो मोबाइल के माध्यम से 420 मिलियन उपयोगकर्ताओं तक, टाटा स्काई के माध्यम से 70.26 मिलियन घरों तक ले गए और दीक्षा पोर्टल के माध्यम से लाखों शिक्षण सत्र संचालित किए।'' उन्होंने कहा कि सिक्किम और हरियाणा सरकार ने अपने सरकारी स्कूलों के लिए ई-शिक्षण सॉफ्टवेयर अपलोड करने हेतु RILM से संपर्क किया है और कई अन्य राज्य भी उनकी राह पर चल रहे है। शिक्षकों को ''हमारी सबसे स्थायी संपत्ति, हमारे बच्चों, के लिए जो कुछ भी करते है'' उसके लिए उन्हें धन्यवाद देते हुए संघवी ने कहा, ''आपको अपने विद्यार्थियों को (अनपढ़) वयस्कों को पढ़ना और लिखना सिखाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। इससे भारत शत-प्रतिशत साक्षर देश बन जाएगा।''

मानसिकता में बदलाव की आवश्यकता

ग्लोबल टीचर प्राइज 2020 के विजेता रंजीत सिंह डिसाले ने एक प्रस्तुति में कहा कि 21वीं सदी के विद्यार्थियों को उन शिक्षकों द्वारा पढ़ाया जा रहा है जो अभी भी अपनी भौतिक कक्षाओं वाली 20वीं सदी

ग्लोबल टीचर प्राइज़ 2020 के फाइनलिस्ट में से एक, हा अन फुओंग।

की मानसिकता में जी रहे है। उन्होंने जोर देकर कहा, ''प्रौद्योगिकी एक शिक्षक का स्थान नहीं ले सकती, लेकिन शिक्षक को अपने डिजिटल-प्रेमी विद्यार्थियों की जरूरतों के अनुरूप अपने कौशलों को अपडेट एवं विकसित करना चाहिए। डिसाले ने कहा, कोविड ने हमेशा के लिए कक्षा की मूल अवधारणा को बदल दिया है और दुनिया भर के शिक्षक ऑनलाइन शिक्षण में समस्याओं का सामना कर रहे है क्योंकि हम इस बदलाव के लिए तैयार नहीं थे और न ही ऑनलाइन शिक्षण के लिए प्रशिक्षित थे।''

शिक्षकों के लिए, सीखना एक सतत प्रक्रिया है, लेकिन उन्हें यह समझना चाहिए कि ''बच्चे अपनी गति से सीखते है और यदि हम सफल होना चाहते है तो हमें उनके सीखने के अनुभव को व्यक्तिगत बनाने के लिए चुनिंदा सामग्री की आवश्यकता होती है।'' तकनीक की मदद से, उन्होंने अपनी कक्षा में विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता के आधार पर QR-कोड आधारित पाठ तैयार किए थे। दुनिया भर के 3,500 से अधिक शिक्षकों ने आभासी विचार-विमर्श में भाग लिया जिसमें डिजिटल शिक्षा की प्रगति के साथ नई और उभरती शिक्षण विधियों पर विचार-विमर्श किया गया।

ग्लोबल टीचर प्राइज़ 2020 के विजेता रंजीत सिंह डिसाले।

'बिना सरहद की कक्षाओं' के अपने दृष्टिकोण को साझा करते हुए, वियतनाम की एक अंग्रेजी शिक्षिका और ग्लोबल टीचर प्राइज 2020 के फाइनलिस्ट में से एक, हा अन फुओंग ने कहा, ''विद्यार्थियों, शिक्षकों और विशेषज्ञों को अब शिक्षण के लिए एक ही स्थान पर रहने की आवश्यकता नहीं है।'' वीडियो और सहायक सॉफ्टवेयर का उपयोग करके ''हम बिना सरहद की कक्षाओं की रचना कर सकते है जो दुनिया के किसी भी बच्चे के लिए खुली होंगी। उन्होंने कहा, प्रौद्योगिकी ने शहरों में रहने वाले बच्चों और गांवों में रहने वाले बच्चों के बीच की खाई को मिटा दिया है।'' PDG जुबिन अमारिया, रो ई मंडल 3132, ने वक्ताओं को उनके बहुमूल्य विचारों के लिए धन्यवाद दिया और शिक्षकों को इस आभासी कार्यक्रम से प्राप्त ज्ञान को अपनी कक्षाओं में लागू करने हेतु प्रेरित किया।''■

Rotary PEOPLE OF ACTION

स्कूल के बच्चों के लिए बैठने की सुविधा

टीम रोटरी न्यूज़

बच्चों के लिए कक्षा में बैठने के लिए अच्छी सुविधाएं एवं आरामदायक बेंच होनी चाहिए ताकि कक्षाएं बच्चों को आकर्षित करें, केवल तभी वह सीखने के लिए प्रेरित होंगे,'' रो ई मंडल 3080 के डी जी अजय मैदान ने कहा। जुलाई में जब उन्होंने जिले का कार्यभार संभाला तो उन्होंने जिले के विभिन्न रोटरी क्लबों के माध्यम से सरकारी स्कूलों को 10,000 बेंच और डेस्क प्रदान करने की योजना बनाई।

अगस्त तक, रो ई मंडल ने 55 स्कूलों को बेहतर बनाने के उद्देश्य से रोटरी लोगो लगे हुए फर्नीचर के 2,200 सेट भेजे हैं। प्रोजेक्ट की कुल लागत ₹1.5 करोड़ है। डीजी बताते हैं कि ''इनमें से प्रत्येक सेट में दो बच्चे बैठ सकते हैं और यह माना जा सकता है कि यह सेट कम से कम सात वर्षों तक चलेंगे, मुझे यह कहते हुए बहुत प्रसन्नता हो रही है कि इन वर्षों में लगभग 140,000 बच्चे इस प्रोजेक्ट से लाभान्वित होंगे।''■

भविष्य का कथन

वैनेसा ग्लेविंस्कास

रोटरी भारत में पूर्ण साक्षरता का पथ प्रशस्त कर रही है

रोटरी इंटरनेशनल के अध्यक्ष बनने से काफी पहले से, शेखर मेहता महत्वाकांक्षी लक्ष्य प्राप्त करने के लिए चर्चित रहे हैं ।

उनकी कठिन से कठिन समस्याओं का सहजता से समाधान खोज निकालने की ख्याति की वजह से ही, 2014 में, पूर्व रो इ अध्यक्ष कल्याण बनर्जी ने उन्हें भारत को पूर्ण साक्षर बनाने के प्रयास का नेतृत्व करने के लिए कहा - एक लक्ष्य जो भारत सरकार के साथ-साथ कई गैर सरकारी संगठनों की पहुँच से दूर है।

मेहता कहते हैं, ''मैंने महसूस किया कि देश को साक्षर बनाना कोई सरल कार्य नहीं है'', पूर्ण साक्षरता का तात्पर्य है कि 7 साल या इससे अधिक उम्र के लोगों में साक्षरता दर 95 प्रतिशत या उससे अधिक होना। (भारत सरकार का अनुमान है कि उस समूह में भारत की वर्तमान साक्षरता दर 78 प्रतिशत है।) ''लेकिन मैं गांधी के विचारों में दृढ़ता से विश्वास करता हूं, अगर आप को लक्ष्य मिल गया तो रास्ते खुद-ब-खुद बनते जाएंगे।''

एक अकाउंटेंट और रियल एस्टेट डेवलपर, मेहता के पास शिक्षा क्षेत्र में कोई पूर्व अनुभव नहीं था। ''मेरे पास ना कोई सुराग था ना ही शिक्षा की कोई पृष्ठभूमि'', वे कहते हैं। उन्होंने विशेषज्ञों से नौ महीने गहन प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद एक गैर-लाभकारी संस्था की स्थापना की रोटरी इंडिया लिटरेसी मिशन (RILM) जिसका उद्देश्य सम्पूर्ण भारत में रोटरी क्लबों द्वारा शुरू किये जाने वाले साक्षरता कार्यक्रम को मानकीकृत कर उन्हें सुदृढ़ करना है।

इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए, RILM ने ऐसी सेवा परियोजनाओं का कार्यक्रम बनाया, जिससे सम्पूर्ण भारत के क्लब इस गैर-लाभकारी संस्था के सहयोग और परामर्श के साथ मिल कर आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित हों। प्रोजेक्ट्स का संक्षिप्त नाम रखा गया TEACH, जिसका तात्पर्य है शिक्षक सहायता, ई-लर्निंग, प्रौढ़ शिक्षा, बाल विकास और हैप्पी स्कूल (जो मूलभूत ढांचे में सुधार करने पर केंद्रित है) के लिए है। कमल संघवी जो 2019-2021 के

रो ई निदेशक थे और अब RILM के अध्यक्ष हैं कहते हैं, ''हमारा मानना है कि हर स्कूल ऐसा स्कूल हो, जहां हमारे खुद के बच्चों को भी पढ़कर मज़ा आये।''

भारत में सफल रहे पोलियो उन्मूलन अभियान मॉडल का अनुसरण करते हुए, समन्वयकों ने देश के रोटरी जोन और मंडलों में TEACH कार्यक्रम का समावेश कर उसे बढ़ावा दिया। RILM के स्टाफ ने इस कार्यक्रम की नियमावली बनाई और प्रशिक्षण सत्र आयोजित किये और आज भारत में लगभग हर क्लब TEACH कार्यक्रम के कम से कम एक घटक के लिए परियोजनाएं अवश्य कर रहा है। ''इस कार्यक्रम ने खूबसूरती से रफ़्तार पकड़ी है।'' संघवी कहते हैं, ''रोटेरियन भली भांति जान गए हैं कि किसी भी राष्ट्र को महान बनने के लिए, उस राष्ट्र की साक्षरता दर और साक्षरता का स्तर ऊंचा होना आवश्यक है।''

सैकड़ों रोटरी क्लबों के साथ-साथ उनके सहयोगी संगठनों के संयुक्त प्रयासों से कई बड़े पैमाने पर परिणाम मिले हैं। आज, अनुमानित सात मिलियन बच्चे RILM के एक अकेले घटक शिक्षक प्रशिक्षण से लाभान्वित हो रहे हैं। कार्यक्रम की समग्र पहुंच कहीं अधिक है।

''प्रशिक्षण, मानकीकरण और विकासशील सहभागिता - समग्र रूप से ये तीनों चीजें कार्यक्रम को दिशा देती हैं'', मेहता कहते हैं।

इस कार्यक्रम के जबरदस्त प्रभाव के कारण, रोटरी इंडिया लिटरेसी मिशन ने अपनी अलग पहचान बनाई है, जिसने हाल ही में - भारत सरकार के साथ मिल कर कोविड -19 महामारी के कारण स्कूल से बाहर रहे बच्चों को मुफ्त ई-लर्निंग सामग्री का निर्माण और वितरण कर अपनी सबसे बड़ी शुरुआत की है। .

''भारत के कई क्षेत्रों में इंटरनेट की स्थिति अत्यंत दयनीय है।'' बिस्वजीत घोष, RILM के मुख्य परिचालन और रणनीति अधिकारी बताते हैं, ''और सरकार जनता को ऑनलाइन शिक्षा उपलब्ध करवाने के लिए संघर्ष कर रही थी।'' तभी, घोष कहते हैं कि ''रोटरी ने अपना हाथ बढ़ाया'' और कक्षा 1-12 के लिए उच्च गुणवत्ता वाली मल्टीमीडिया सामग्री के निर्माण में सहायता का प्रस्ताव दिया।

RILM ने सामग्री बनाने के लिए एक वीडियो प्रोडक्शन कंपनी के साथ काम किया, और दानदाताओं और प्रायोजकों ने इसकी लागत उठाई ताकि राष्ट्र के लिए ई-लर्निंग निशुल्क उपलब्ध हो सके।

2020 में, भारत सरकार ने रोटरी द्वारा प्रायोजित सामग्री को कई टीवी चैनलों पर प्रसारित करना शुरू किया - प्रति कक्षा - एक चैनल - अंग्रेजी और हिंदी दोनों में।

E9 क्या है?

E9 नौ राष्ट्रों का एक समूह है - बांग्लादेश, ब्राजील, चीन, मिस्र, भारत, इंडोनेशिया, मैक्सिको, नाइजीरिया और पाकिस्तान - जहां दुनिया की आधी से अधिक आबादी रहती है और ये राष्ट्र बड़ी शिक्षा प्रणालियों और दुनिया के 70 प्रतिशत निरक्षर प्रौढ़ों का प्रतिनिधित्व करते हैं। काफी हद तक उनके सामूहिक प्रयास वैश्विक शिक्षा प्रयास की सफलता को प्रभावित करते हैं।

साक्षरता कार्यक्रमों की आवश्यकता कहाँ है?

निम्नलिखित देशों में जहां प्रौढ़ साक्षरता दर 50 प्रतिशत से कम है:

- अफ़ग़ानिस्तान
- बेनिन
- बुर्किना फासो
- मध्य अफ़्रीकी रिपब्लिक
- चैड
- कोटे डी आइवर
- गिन्नी
- गिन्नी-बिसाऊ
- लाइबेरिया
- माली
- नाइजर
- सियरा लिओन
- सोमालिया
- दक्षिण सूडान

रोटेरियन भली भांति जान गए हैं कि किसी भी राष्ट्र को महान बनने के लिए, उस राष्ट्र की साक्षरता दर और साक्षरता का स्तर ऊंचा होना आवश्यक है।

घोष का अनुमान है कि ये पाठ्यक्रम सम्पूर्ण भारत में लगभग 10 करोड़ छात्र के लिए उपलब्ध थे।

अब अगला लक्ष्य था इसी मल्टीमीडिया पाठ्यक्रम का भारत की अन्य भाषाओं में अनुवाद कर भारत के प्रत्येक पब्लिक स्कूल को सॉफ्टवेयर उपलब्ध कराना है। संघवी बताते हैं, ''गांवों में शिक्षा का स्तर शहरों की तुलना में काफी नीचे है. शहर में, उनके पास तकनीक और ज्ञान की पहुंच बेहतर है।''

इतने बड़े पैमाने पर ई-लर्निंग शहर और ग्रामीण की इस असमानता को कम करने में सहायक हो सकती है, परन्तु यह तभी संभव होगा जब शिक्षक सॉफ्टवेयर का उपयोग करना जानते हों। TEACH में T का प्रवेश यहीं से होता है। सम्पूर्ण भारत में हम शिक्षकों को प्रशिक्षण दे रहे हैं, संघवी कहते हैं, ''भारत के महामारी लॉकडाउन में प्रवेश करते ही इसकी तात्कालिकता और प्रासंगिकता और स्पष्ट हो गई। कई शिक्षकों को नहीं पता था कि Zoom कैसे चलाते हैं।''

ई-लर्निंग प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए यह गैर-लाभकारी संस्था सहयोगी संगठनों के साथ काम करती हैं और उत्कृष्ट शिक्षकों को पुरस्कार भी प्रदान करती है - जिसका आकलन उनके छात्रों और स्कूल के प्रिंसिपल द्वारा किया जाता है। यह इस तरह काम करता है: रोटरी क्लब स्थानीय छात्रों का सर्वेक्षण करते हैं, और उनसे मिली जानकारी के आधार पर एक शिक्षक को नेशन बिल्डर पुरस्कार के लिए चुना जाता है। खराब स्कोर करने वाले शिक्षकों को भविष्य में क्लब द्वारा प्रायोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए चुना जाता है। ''यह जानकारी मिलती है कि कौन से शिक्षक उत्कृष्ट हैं और वो कौन हैं जिन्हें अपने कौशल उन्नत करने के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता है। हम दोनों ओर से फायदे में हैं।''

बच्चों की साक्षरता सुधारने में RILM की सफलता के बावजूद, भारत अपने अनुमानित 287 मिलियन निरक्षर प्रौढ़ को संबोधित किए बिना पूर्ण साक्षरता का लक्ष्य हासिल नहीं कर सकेगा, जो दुनिया की कुल निरक्षर-प्रौढ़ आबादी का लगभग एक तिहाई है।

संघवी का कहना है कि भारत की साक्षरता दर बढ़ाने के सरकारी प्रयासों के अंतर्गत निरक्षर प्रौढ़ को उचित सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं। इसलिए RILM ने एक छोटी कार्यपुस्तिका और प्रवेशिका प्रकाशित की है जो वयस्कों को ''क्रियाशील साक्षरता'' की ओर पहला कदम बढाने में सहायक होगी - अन्य बुनियादी कौशल के साथ साथ वे उनका नाम लिख सकेंगे और सड़क संकेतों को पढ़ सकेंगे।

स्थानीय क्लबों ने इस प्राइमर पुस्तिका को छात्रों में वितरित किया और उनसे कहा ''हर एक, पढ़ाए एक'' कि हर एक, एक को पढ़ायेगा - दूसरे शब्दों में, एक बच्चा जो पढ़ या लिख नहीं सकता है, परिवार के सदस्य की सहायता से मूल बातें सीखने में इस प्राइमर का उपयोग कर सकता है। स्कूली बच्चे उत्साहित थे, संघवी कहते हैं। वे कहते थे, 'हे भगवान, मैं एक शिक्षक बनने जा रहा हूँ!'

RILM का लक्ष्य प्रत्येक भारतीय नागरिक को कम से कम क्रियात्मक रूप से साक्षर करना है - जिससे वो अपने समुदाय में रोजमर्रा की गतिविधियों में शामिल हो सके जहां बुनियादी साक्षरता की आवश्यकता होती है। महामारी ने RILM को अपनी समय सीमा दो साल बढ़ाने पर मजबूर कर दिया है। समूह को अब 2027 तक इस लक्ष्य को हासिल करने की उम्मीद है।

यह एक महत्वाकांक्षी लक्ष्य है, मेहता मानते हैं, लेकिन ''भारत में आज रोटरी फल-फूल रही है।'' बस, हमें सपने देखने की जरूरत है।''

© Rotary

बारिश से प्रभावित महाड को रोटरी की मदद मिली

टीम रोटरी न्यूज़

महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले के एक औद्योगिक शहर महाड में अत्यधिक भारी बारिश के बाद, स्थानीय रोटरी क्लबों से प्राप्त प्रतिक्रिया के आधार पर, रोटरी क्लब देवनार और महाड द्वारा संयुक्त रूप से एक विस्तृत अध्ययन किया गया यह समझने के लिए की तबाही की सीमा क्या है और रोटरी किन तरीकों से प्रभावित परिवारों को राहत प्रदान कर सकती है।

तालीवारे गांव में लोग अपने घरों में पानी भर जाने के कारन छत पर बैठे दिखाई दिए! तेज पानी के प्रवाह से सड़कें और घर बह गए और आवासीय क्षेत्रों में मगरमच्छ सहित जल जीव देखे गए। महाड़ के संपन्न परिवारों को भी अपने आलीशान घरों को छोड़ कर सुरक्षित स्थानों पर जाना पड़ा। रोटरी क्लब देवनार के पूर्व अध्यक्ष राजेंद्र दाते ने क्लब अध्यक्ष सुधीर मेहता के साथ मिलकर पूरी योजना तैयार की। ग्राउंड ज़ीरो से प्राप्त कुल आवश्यकताएं इस परियोजना के लिए पहले से मौजूद दान से कम थीं। रोटरी क्लब महाड के पूर्व राष्ट्रपति धनंजय अजगेकर ने महाड और उसके आसपास के इलाकों में बाढ़ की स्थिति का आकलन किया।

पता चला कि भोजन और पानी की कोई कमी नहीं है। लेकिन बेडशीट, कंबल, प्लास्टिक की चटाई, तौलिया, तकिए, तिरपाल आदि जैसी अन्य आपूर्ति की अत्यधिक आवश्यकता थी।

बाढ़ राहत दल ने बाढ़ पीड़ितों की मांग के अनुसार आवश्यक सामान की खरीद की। इसके लिए टीम को महाड भेजे जा रहे उत्पादों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए सही विक्रेताओं की पहचान करनी पड़ी। पहले चरण में, रोटरी क्लब 200 से अधिक परिवारों तक पहुंची, जो मुख्य रूप से महाड के बाहरी इलाके और मुख्य शहर के कुछ इलाकों में रहते थे।

दूसरे चरण के दौरान महाड़ के लिए 500 राशन किट भेजे गए। रोटेरियन धनंजय ने महाड और उसके आसपास के क्षेत्रों में आवश्यक राशन किटों की सही संख्या को निश्चित करने के लिए ग्राम पंचायतों का दौरा किया। बाढ़ प्रभावित क्षेत्र में चार दिनों में दो टीमों ने खाद्य सामग्री का वितरण किया।

रोटरी क्लब देवनार के बाढ़ राहत कार्य में सहयोग के लिए रोटरी क्लब चेंबूर आगे आया। रोटरी क्लब देवनार की टीम में रोटरेक्टर भी शामिल हुए, जिन्होंने रोटरी क्लब महाड की मदद से किराना किट सहित राहत सामग्री वितरित करने के लिए महाड की यात्रा की।

''यह हमारे लिए सबसे संतोषजनक अभ्यास था। हमें महाड और आसपास के रोटेरियन से जुड़कर खुशी हुई'', रोटरी क्लब देवनार के रतन विष्णु कामत ने कहा। अपने अनुभव को साझा करते हुए, प्रोजेक्ट के अध्यक्ष दातये ने कहा, ''मुंबई में रहते हुए, हमारे पास 250 किमी दूर उस क्षेत्र में मदद के लिए हाथ बढ़ाने की शक्ति थी, जिसे इस सहायता की सख्त जरूरत थी। यह रोटरी की शक्ति है।'' ■

Mahabs 21

FEEL THE HERITAGE

ROTARY INSTITUTE 2021

Zone 4,5,6 & 7 | 10-12 Dec 2021 | Mahabalipuram | Tamil Nadu

TENTATIVE AGENDA FOR YOUR TRAVEL PLAN

EVENTS		DATE	START TIME	END TIME	VENUE
GETS	Inauguration	7.12.21	4:00pm	5:30pm	GRT Radisson Blu
	Valediction	9.12.21	3:30pm	5:30pm	
DGN Training Seminar		9.12.21	9:30am	5:30pm	GRT Radisson Blu
COL Meet					
Dist. Trainers Seminar					
DG Mid - Year Review Meet					
TRF - Dinner		9.12.21	7:00pm onwards		GRT Radisson Blu
TRF - Seminar		10.12.21	9:30am	1:00pm	
Institute Inauguration		10.12.21	3:00pm	6:00pm	Four Points Sheraton
Institute 2nd Day		11.12.21	9:30am	5:30pm	
Institute 3rd Day / Valediction		12.12.21	9:30am	1:00pm	

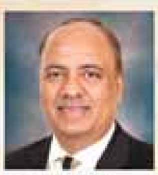

Shekar Mehta
RI President (2021 -22)

RID.AS. Venkatesh
Convener

PDG.Muruganandam.M (MMM)
Chairman

Come..!!
Feel the Heritage...

REGISTER EARLY..!!

TO AVOID LAST MINUTE RUSH

WELCOME TO Mahabs 21

FEEL THE HERITAGE

CONNECT, EXPLORE AND BE INSPIRED AT THE LAND OF ALLURING MONUMENTS.

MAHABALIPURAM

Mahabalipuram named after the benevolent king, "Mahabali", is a historic town founded by a Hindu Pallava king – Narasimhavarman between the 3rd and 7th century B.C. Also known as Mamallapuram, the ancient town is a UNESCO world heritage site that lies along the Coromandel Coast of the Bay of Bengal, 37 miles south of Chennai.

The Rathas, The Mandapas, The Descent of the Ganges, Lord Krishna's Butter Ball are the group of royal monuments that shows the architectural genius of the artisans and artists. Panch Rathas, meaning five chariots, are magnificent stone structures, each carved out of a single huge boulder. The shore temple is the one surviving structures of the legendary seven pagodas. The temples were built by the efforts of 3 generations of the Pallava dynasty taking a whopping 200 years to complete the site. Every year classical dance & drama festivals are hosted to preserve & promote the ancient culture which not only offers a visual treat for the eyes but also calms the mind and soothes the soul.

PONDICHERRY (NEAR MAHABS (1 HR 43 MIN (96.0 KM) VIA EAST COAST RD)

Pondicherry, another prominent tourist destination, that is just an hour away from Mahabalipuram, has many buildings, churches, temples and statues that preserves colonial ambience. Sri Aurobindo Ashram, founded by the renowned Freedom Fighter and spiritual philosopher Sri Aurobindo, is one of the most important ashrams of India located in the eastern part of Pondicherry.

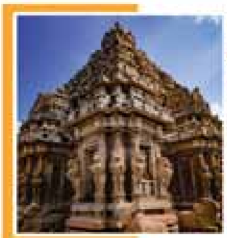

KANCHIPURAM (NEAR MAHABS (1 HR 53 MIN (67.8 KM)

Kanchipuram, an ancient pilgrimage city, ruled by the Pallavas and Medieval Cholas, houses the world famous Kamakshi Amman temple. The city is renowned for its hand woven silk sarees. The city has some of the most grand and majestic temples to sweep you off your feet, with their striking architectural marvel. These temples are not only sacred sites, but also a study of the architectural evolution within South Indian style of temple architecture.

HOW TO REGISTER

1. Visit www.riinstitutemahabs21.org
2. Select your District Number and your name
3. Check programmes that you will be attending
4. Select choice of hotels / Check in - Check out dates
5. Select your preferred payment option and complete your registration.

Mahabs 2021

FEEL THE HERITAGE

www.riinstitutemahabs21.org

PDG.MURUGANANDAM. M (MMM)
Chairman | +91 - 93825 50001

PDG.SURENDRA BOMMIREDDY
Co-Chair | +91 - 98481 05690

PDG.MADHAV CHANDRAN.R
Secretary | +91 - 98460 31667

PDG.KANNAN.RVN
Chair - Registration | +91 - 73737 66666

PDG.PINKY PATEL
Chair - Promotion | +91 - 9376210325

SUPPORT (MMM'S OFFICE)

PRIMARY SUPPORT:
Rtn.Sareesh Agarwal : +91 - 90255 05051

SECONDARY SUPPORT:
Rtn.Pavithra : +91 - 91599 90345
Rtn.Ruthi Rani : +91 - 93825 50006
Kaneeza : +91 - 98416 77403

Rotary PEOPLE OF ACTION

रोटरी दिवस पर 50,000 मरीज़ों की जांच की गई

टीम रोटरी न्यूज़

पूरे रो ई मंडल 3012 में लगभग 100 बहु-विशिष्टता वाले स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन किया गया जिसमें सभी 126 क्लबों ने एक विशाल रोटरी दिवस कार्यक्रम (29 अगस्त) में भाग लिया, जिससे 50,000 से अधिक लाभार्थी लाभान्वित हुए। इन चिकित्सीय शिविरों में, रोगियों की विभिन्न जांच जैसे नेत्र एवं रेटिना जांच, दंत जांच, मैमोग्राफी एवं कैंसर जांच, ECG और अस्थि खनिज घनत्व जांच मुफ्त में की गई।

रोटरी दिवस कार्यक्रमों का पदार्पण करते हुए, DG अशोक अग्रवाल ने पहले मीडिया को जानकारी दी थी कि पूरे मंडल के सभी क्लब विभिन्न स्थानों पर चिकित्सीय शिविरों, रक्तदान शिविरों, कोविड टीकाकरण जागरूकता रैलियों एवं अन्य सेवा परियोजनाओं का आयोजन करेंगे। क्लबों ने 150 होर्डिंग लगाए, और स्वास्थ्य शिविरों के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए रेडियो एवं प्रिन्ट मीडिया पर अभियान चलाए और गाजियाबाद में कोविड टीकाकरण के लिए एक साइकिल रैली का आयोजन किया। स्थानीय टीवी चैनलों पर विभिन्न रोटरी कार्यक्रमों की घोषणा की गई।

TB रोगियों का अभिग्रहण

रोटरी दिवस को चिह्नित करने के लिए, रो ई मंडल 3012 ने तपेदिक से पीड़ित 1,000 बच्चों को गोद लिया और उनके इलाज का पूरा खर्च क्लबों द्वारा प्रायोजित किया जाएगा। उन्हें स्वस्थ जीवन के लिए पौष्टिक आहार भी दिया जाएगा। यूपी के मेरठ के पास पंछी गांव में स्थित चरक आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर में एक एम्बुलेंस दान की गई। हमारी रोटरी दिवस परियोजनाएं बड़े पैमाने के सार्वजनिक छवि अभ्यास थे जिससे एक दिन में 1 करोड़ से अधिक लोग प्रभावित हुए, ऊ अग्रवाल ने कहा।

टीकाकरण के मोर्चे पर, उन्होंने कहा कि मंडल के क्लबों ने स्वास्थ्य विभाग एवं निजी अस्पतालों की सहायता से 1,00,000 से अधिक लोगों का टीकाकरण किया और यह आंकड़ा दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है।

रोटरी दिवस समारोह के तहत आंखों की जांच शिविर का दौरा करते DG अशोक अग्रवाल।

PDG जे के गौर (बीच में) RC सोनीपत मिडटाउन द्वारा वंचित महिलाओं के लिए शुरू की गयी स्वास्थ्य कार्ड परियोजना के तहत कार्ड वितरित करते हुए।

गरीबों को स्वास्थ्य कार्ड

रोटरी क्लब सोनीपत मिडटाउन, रो ई मंडल 3012, द्वारा ऐसे वंचित परिवारों को रोटरी दिवस कार्यक्रमों के हिस्से के रूप में रोटरी आयुष्मान हेल्थ कार्ड (RAHC) प्रदान किए गए जो उचित चिकित्सीय देखभाल का खर्च नहीं उठा सकते थे।

क्लब ने सोनीपत में 19 अस्पतालों को सूची में शामिल किया है जो 50 प्रति व्यक्ति की दर से जझऊ और परामर्श प्रदान करेंगे, जबकि RAHC लाभार्थियों के लिए सभी लैब एवं नैदानिक परीक्षण 50 प्रतिशत छूट पर किए जाएंगे। क्लब के अध्यक्ष राकेश देवगन ने कहा, हमारी योजना 1,000 परिवारों को ऐसे स्वास्थ्य कार्ड प्रदान करने की है, जिससे लगभग 4,000-5,000 लोग लाभान्वित होंगे। परियोजना का उद्घाटन PDG जे के गौर ने किया जिन्होंने इस मौके पर लगभग 300 कार्ड वितरित किए। बैठक की अध्यक्षता PP संदीप जेटली ने की थी।■

रोटरी ऑक्सीजन बैंक नेपाल में कोविड देखभाल प्रदान करता है

नेपाल के पोखरा में सभी सात क्लब गंडकी प्रांत और उसके पड़ोसी क्षेत्रों में दूसरी लहर जिसमें हताहतों में काफी वृद्धि हुई थी, के बाद एक कोविड टास्क फोर्स बनाने के लिए एक साथ आए। रो ई मंडल 3292 के अंतर्गत, आईपीडीजी किरण लाल श्रेष्ठ ने कहा, अस्पतालों में मेडिकल ऑक्सीजन और बेड की कमी के कारण कई लोगों की जान चली गई।

प्रोजेक्ट 'जीवन की आशा' को पोखरा क्लबों ने ऑक्सीजन सिलेंडर बैंक शुरू करने के मकसद से शुरू किया था। रोटेरियन्स ने उन कार्यशालाओं और कारखानों से सिलेंडर एकत्र किए जो लॉकडाउन के दौरान बंद थे, एक आश्वासन के साथ कि उन्हें बाद में वापस कर दिया जाएगा।

दिलीप अग्रवाल, डीन, मणिपाल मेडिकल कॉलेज पोखरा; PDG किरण लाल श्रेष्ठ; मान बहादुर जी सी, पोखरा के मेयर और क्लब के अध्यक्ष जितेंद्र सिगडेल, एक ऑक्सीजन सांद्रक के साथ।

कुल मिलाकर 350 ऑक्सीजन सिलेंडर, 125 कंसन्ट्रेटर्स और अन्य मेडिकल एसेसरीज को अंतरराष्ट्रीय भागीदारों जैसे रो ई मंडल 3523, 6250 और 7080, नेपाल चाइना फ्रेंडशिप एसोसिएशन, डिस्ट्रिक्ट रोटेरियन्स, इनर व्हील क्लब, रोटरी डिस्ट्रिक्ट ताईक्कांडो से रोटरी डिस्ट्रिक्ट और काओ झेंग झी फाउंडेशन जैसे अंतरराष्ट्रीय भागीदारों के सहयोग से पोखरा और अन्य ग्रामीण चौकियों के विभिन्न अस्पतालों में वितरित किए गए। रो ई मंडल 7080 के अंतर्गत, कनाडा के वुडस्टॉक ऑक्सफोर्ड रोटरी क्लब और रो ई मंडल 6250 के अंतर्गत, यूएस के हवाई रोटरी क्लब ने इस परियोजना का समर्थन किया था, जबकि रो ई मंडल 2540 के अंतर्गत जापान ने 200,000 फेस मास्क प्रदान करने में मदद की।

क्लबों के साथ समन्वय स्थापित करने वाले श्रेष्ठ ने कहा, सिलेंडर, कंसन्ट्रेटर्स और अन्य स्टॉक रोटरी क्लबों और रोटेरियन के माध्यम से पोखरा में विभिन्न अस्पतालों में वितरित किए गए।■

होम से 'स्मार्ट होम' तक

प्रीति मेहरा

ऑटोमेशन युक्त घर कई फायदे और एक नई जीवन शैली ला सकते हैं।

नवाचार हरित-ऊर्जा आंदोलन का दिल बन गया है। यह अपने साथ कई विकल्प लाता है कि कई बार कल्पना से परे जाना है और टेक्नोलॉजी को गले लगाने के लिए तैयार लोगों के लिए एक आसान और अधिक सुरक्षित जीवन का वादा करता है। वरिष्ठ नागरिकों या विकलांग लोगों के लिए, टेक्नोलॉजी कभी-कभी वरदान साबित हो सकती है। उदाहरण के लिए, स्टीफन हॉकिंग ने 'शरीर पर मन' पाने के लिए तकनीकी विकल्पों से दोस्ती नहीं की होती तो वह सब हासिल नहीं कर सकते थे। व्यस्त होम मेकर्स और ऑफिस गोअर्स के लिए भी हाईटेक से थोड़ी मदद जैसी और क्या बात हो सकती है।

हम 'स्मार्ट होम्स' की अवधारणा के बारे में बात कर रहे हैं, जो आपको एक ही समय में ढेर सारे काम करने में मदद करती ह और घर पर ऑटोमेशन का उपयोग करना एक अच्छा विकल्प है। यह आपको एक ही डिवाइस द्वारा जलवायु, सुरक्षा, रोशनी और मनोरंजन को नियंत्रित करने की क्षमता देता है। घर पर बच्चों और वरिष्ठ नागरिकों के साथ, ये अक्सर एक निगरानी उपकरण के साथ संयुक्त होते हैं, जो आपको अपने प्रियजनों की सुरक्षा और रखवाली के बारे में सूचित करता है, जब आप दूर होते हैं।

बाज़ार में कई कम्पनियाँ हैं जो ऑटोमेशन उपकरण प्रदान करते हैं। यदि आप केवल अपनी

रोशनी के लिए या अपने गीजर के लिए स्मार्ट तकनीक का उपयोग करना चाहते हैं, तो वह भी संभव है। इसमें स्मार्ट फीचर्स पेश करने के लिए आपको घर को फिर से डेकोरेट करने की जरूरत नहीं है। हालांकि, यहां भी टेक्नोलॉजी कंपनियाँ अब ग्राहकों के लिए स्मार्ट घरों की स्थापना में विशेष रूप से काम कर रहे हैं। वे 'इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT)' टेक्नोलॉजी का उपयोग करके ऑटोमेशन प्रदान करते हैं। लेकिन इस बारे में और अधिक जानकारी, बाद में...

सुविधा के अलावा, घर ऑटोमेशन द्वारा एक बड़ा बोनस है ऊर्जा की खपत में कमी और इसलिए कम बिजली के बिल के रूप में यह एक अच्छा विकल्प है! और एक बड़ा बोनस यह है कि यह आपके कार्बन पदचिह्न को कम करता है, जिससे आपको दुनिया को हरा-भरा बनाने और जलवायु परिवर्तन को कम करने में मदद मिल सकती है।

ऊर्जा के मोर्चे पर, सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण यह कि, आप अपने घर में रोशनी और पंखों को विनियमित कर सकते हैं। सिस्टम उन्हें चालू और बंद कर देता है, जब परिवार के सदस्य एक कमरे में प्रवेश करते हैं और उसे छोड़ते हैं, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि खाली कमरे में बिजली बर्बाद नहीं हो रही है। यदि आप दूर हैं, तो कमरे के तापमान को भी स्वचालित एयर कंडीशनिंग और हीटिंग सिस्टम के ज़रिये कम करके नियंत्रित किया जा सकता है।

तापमान परिवर्तन को भी खिड़की के परदों, लैंप, रोशनी और पंखों जैसे अन्य चीजों को ऑटोमेशन इलेक्ट्रॉनिक्स के ज़रिये नियंत्रित किया जा सकता है। वास्तव में, स्वचालित मोटर-चालित खिड़की के परदे बहुत उपयोगी हैं और उन्हें खोलने और बंद करने के लिए बस एक बटन के स्पर्श की जरूरत है। उन्हें दिन के विशिष्ट समय पर स्वचालित रूप से बंद करके और खोलकर पीक दक्षता पर संचालित करने के लिए प्रोग्राम किया जा सकता है।

ऑटोमेशन आपको 'ऑल ऑफ' कमांड की विलासिता भी देता है। इसलिए, यदि आपको जल्दी में घर छोड़ना पड़ता है, तो सिस्टम आपको उंगली के एक क्लिक के साथ पूरे घर को बंद करने या विशिष्ट इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को संशोधित करने का विकल्प देता है। यह घर की सुरक्षा प्रणाली की भी मदद कर सकता है, ताकि आपको बाहर रहते समय चिंता करने की कोई ज़रूरत न हो।

यह सर्वविदित है कि टोस्टर, माइक्रोवेव, ड्रायर और चार्जर जैसे उपकरण जब प्लग पर लगे छोड़ दिये जाते हैं, तो बिजली की कुछ मात्रा खर्च हो ही जाती है बेशक वे 'बंद' मोड में ही क्यों ना हों। कुछ अनुमानों के अनुसार, ये आपके बिजली बिल का पांच से दस प्रतिशत खर्च कर सकते हैं। होम ऑटोमेशन आपको उनमें से प्रत्येक को अनप्लग किए बिना उपकरण स्टैंडबाय मोड को पूर्ववत करने की अनुमति देता है, और बदले में आपके ऊर्जा शुल्क को कम करने में मदद करता है।

सबसे लोकप्रिय आज आईओटी (IoT) पर आधारित ऑटोमेशन प्रणाली हैं। यदि आप स्मार्ट होम समाधान के लिए त्रेस्श्रश पर खोज करें तो कई विकल्प सामने आते हैं और आप जिस शहर में रहते हैं उसके अनुसार एक विकल्प बनाया जा सकता है। मैंने पहले Smartify की जांच की, जो खेढ आधारित प्रणाली प्रदान करता है। कंपनी का दावा है कि यह वायर्ड सिस्टम पर बहुत अधिक लचीलापन प्रदान करता है और उपयोग में आसानी होती है और इस चिंता से दूर कि घर के चारों ओर कोई तार नहीं चल रहा है या बिजली के कनेक्शन ढीले नहीं हैं। इसके बाद, मैंने Smartnerd की जांच की, जो कई समाधान और स्मार्ट उपकरणों की एक क्यूरेट सूची भी प्रदान करता है।

इसमें स्मार्ट फीचर्स पेश करने के लिए आपको घर को फिर से डेकोरेट करने की जरूरत नहीं है। यहां भी टेक्नोलॉजी कंपनियाँ अब ग्राहकों के लिए स्मार्ट घरों की स्थापना में विशेष रूप से काम कर रहे हैं।

खेढ सिस्टम में रिमोट सर्वर होते हैं जो इंटरनेट पर स्थित हैं और कई सेंसरों को नियंत्रित करने और निगरानी करने के लिए कॉन्फ़िगर किये जा सकते हैं, जो घर में जहां भी आवश्यक होंगे, स्थापित किए जाएंगे। इसे मुख्य नियंत्रक या प्रवेश द्वार जैसा कहा जाता है जो कि एक ईथरनेट केबल के माध्यम से घरके राउटर से जुड़ा होता है। सेंसर प्रवेश द्वार के माध्यम से आदेश प्राप्त करते हैं और कार्रवाई करते हैं, जिन्हें ऐसा करने के लिए स्वचालित किया जाता है। स्वचालित होने की आवश्यकता वाले कार्यों के आधार पर, स्मार्टिफाई विभिन्न मूल्य बिंदुओं पर विभिन्न पैकेज प्रदान करता है - बुनियादी, उन्नत और प्रीमियम।

अधिकांश हरी इमारतों में आज इन स्मार्ट सुविधाओं को निर्माण के साथ ही शामिल किया जाता है, जो अक्सर लोगों के रहने के तरीके को फिर से परिभाषित करने में योगदान देते हैं। लेकिन यहां तक कि स्वतंत्र घरों या पुराने फ्लैटों में, आपके घर को 'स्मार्ट होम' में बदलना, आपके आराम क्षेत्र को बढ़ाने के लिए लंबे समय में महंगा नहीं है। (ईओएम)

लेखिका एक वरिष्ठ पत्रकार हैं, जो पर्यावरण के मुद्दों पर लिखती हैं।

संगीत और माधुर्य

पंडित जसराज

हिंदुस्तानी शास्त्रीय गायन के दैदीप्यमान नक्षत्र

वी रामनारायण

हैदराबाद से जुड़ाव रखने वाले हिंदुस्तानी संगीत के प्रेमियों के लिए, पिछली शताब्दी में साठ और सत्तर का दशक एक तरह से स्वर्णिम काल रहा है, जहाँ हेल्थ लीग के मैदानों और इन जुड़वां शहरों के अन्य मुक्ताकाश सभागारों के साथ-साथ आधुनिक रवींद्र भारती सभागार में उच्च कोटि के संगीत कार्यक्रम आयोजित किये गए थे। और यदि स्थानीय संगीतकारों से आपका मेलजोल रहा है, तो आपने उन संगीतकारों के सादगीपूर्ण घरों में चेंबर संगीत गोष्ठी और प्रत्येक वृहस्पतिवार को उनके गुरु को समर्पित साप्ताहिक रियाज़ का अतिरिक्त आनंद लिया होगा।

फिर आप वहां मालिनी राजुरकर या भीमशंकर राव जैसे स्थानीय संगीतकारों से टकरा सकते थे। युवा शास्त्रीय गायकों की जोड़ी, गिरीश वज़लवार और चंद्रशेखर स्वामी कभी-कभी गुरूवार की संगीत संध्या में अचानक आ जाते थे - हालांकि ये कोई आश्चर्य की बात नहीं थी, क्योंकि आमतौर पर वे अपने गुरु पंडित जसराज के साथ वार्षिक पंडित मोतीराम पुण्यतिथि समारोह में संगत किया करते थे, जिसका नाम बाद में पंडित मोतीराम - पं मणिराम समरोह हो गया था। जसराज के पिता और उनके भाई - गुरु, दोनों की स्मृति में आयोजित ये समारोह उनको वार्षिक श्रद्धांजलि है।

1970 के दशक में हम, मनीराम और जसराज दोनों भाइयों की जुगलबंदी गायन का आनंद लिया करते थे, कभी-कभी बीच वाले भाई प्रताप नारायण भी साथ होते थे। हैदराबाद के श्रोता प्रबुद्ध और जानकार श्रोता थे, जो तीन भाइयों की प्रस्तुति की प्रशंसा करते थे लेकिन वे इस बात से अच्छी तरह वाकिफ थे कि उनमें से सबसे छोटे भाई

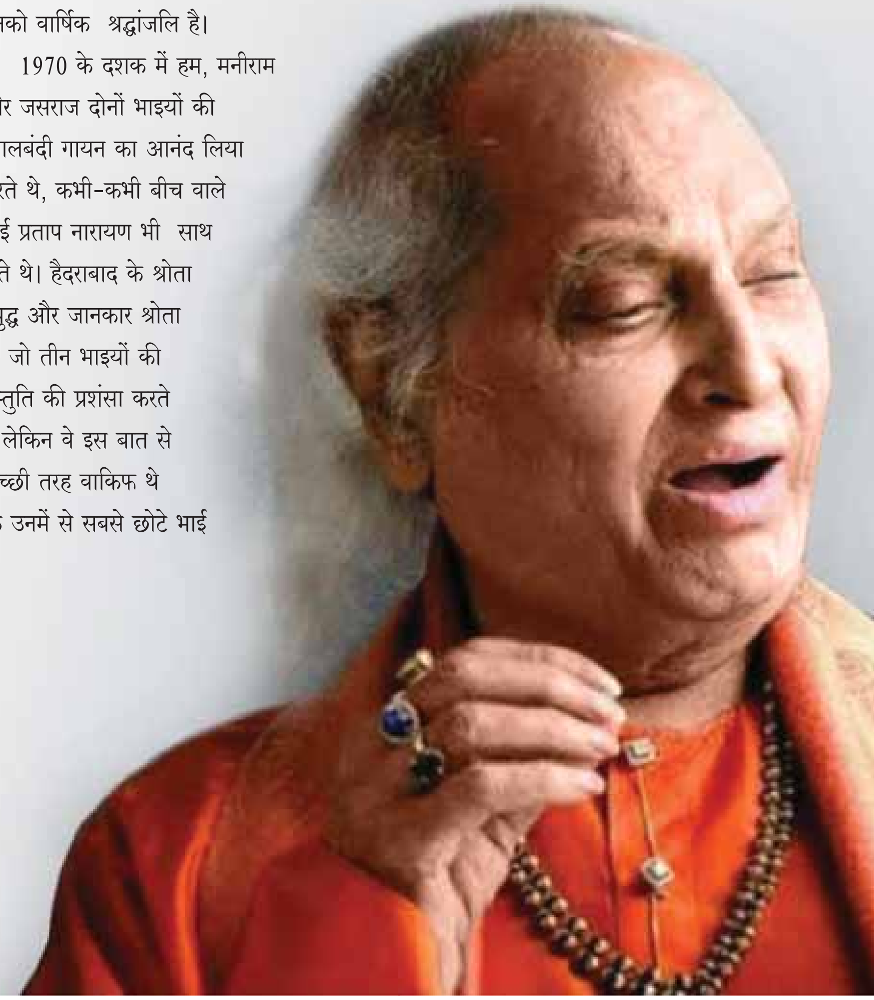

में कुछ अलग ही बात थी। आवाज़ का फैलाव साढ़े तीन सप्तकों तक, कोमल पर शुद्ध उच्चारण और स्पष्ट आवाज, उनके राग अन्वेषणों की गहराई, उनकी नाटकीय भाव भंगिमा और लय पर नियंत्रण और संगीत के प्रति उनके समर्पण और उत्कृष्ट प्रस्तुति से स्पष्ट था कि भविष्य के गर्भ में एक महान सितारा आकार ले रहा था। मंत्रमुग्ध हुए श्रोताओं को पता था कि उन्हें क्षितिज पर उभरती एक नई अनुभूति का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। जोग, अदाना (प्रसिद्ध माता कालिका की विशेषता) और भैरवी जैसे रागों की उनकी प्रस्तुतियां ट्रान्स में ले जाती थीं, और उसी अवस्था में आप घर चले जाते थे, कई दिनों तक वो संगीत आपके दिल और दिमाग में गूंजता रहता था।

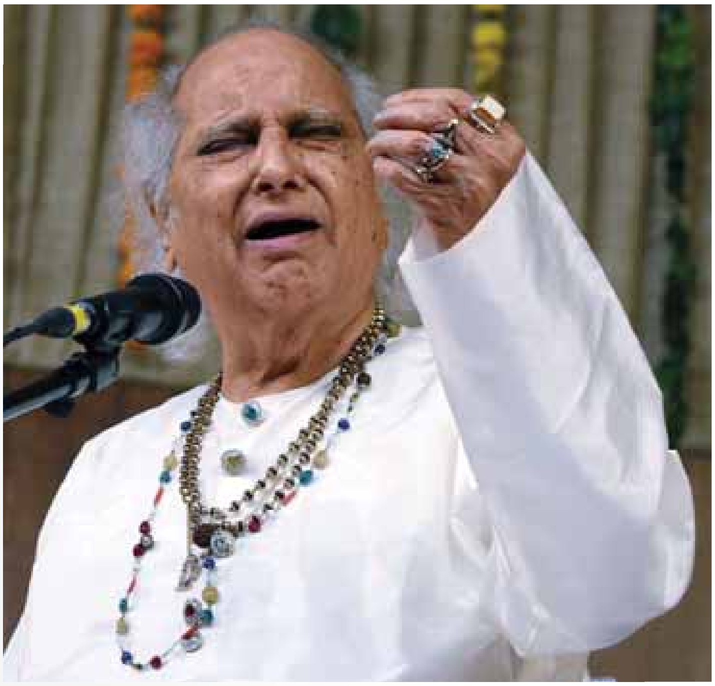

शुरुआत में शुद्धतावादियों ने अन्य घरानों या हिंदुस्तानी संगीत विद्यालयों के संगीत तत्वों को अपनी गायकी में शामिल किए जाने, ठुमरी के लिए उनका रुझान, अर्ध-शास्त्रीय 'हवेली संगीत' में उनकी बंदिशे, मूल रूप से कला संगीत में भक्ति भाव के आधिक्य, उनकी अनोखी जुगलबंदी जसरंगी' जिसमें एक महिला और एक पुरुष गायक अपने-अपने सुर में कई रागों को एक साथ गाते हैं- इन सब की भरपूर आलोचना की है। आखिरकार, उनके करिश्मे और श्रोताओं के विशाल हुजूम के साथ उनके संगीतमय संवाद ने जसराज को आमिर खान और भीमसेन जोशी के बाद निस्संदेह अपनी शैली का सर्वश्रेष्ठ गायक बना दिया।

ये सब तो भविष्य के गर्भ में था, लेकिन उस दशक में जब हम में से कइयों ने एक उभरते संगीतज्ञ की खोज कर ली थी, जो मेरे विचार से, उनके संगीत की पराकाष्ठा थी, विशुद्ध, निर्मल, सुखद और सुव्यवस्थित। लेकिन बाद के दशकों में उस समय का जादुई प्रभाव शायद ही दिखा हो, हालांकि अपने संगीत के जादू से वैसा सम्मोहन अक्सर पैदा किया करते थे।

1980 के दशक में कलाक्षेत्र सभागार में एक यादगार संगीत समारोह हुआ, जहां

संगीत कार्यक्रम की शुरुआत में ही उन्हें खांसी आई और गला पूरी तरह से सूख गया था, आवाज़ में खराश थी, उन्होंने श्रोताओं से क्षमा मांगी और आलाप के लिए थोड़ा समय देने का अनुरोध किया। उस अवसाद भरी शुरुआत से उबरने में उन्हें केवल पंद्रह मिनट लगे।

अग्रिम पंक्ति में रुक्मिणी देवी अरुंडेल की उपस्थिति से उन्हें वो शक्ति मिली जो भीतर गहराई में उतर के लौकिक संगीत की रचना करने के लिए ज़रूरी थी। जसराज को अपनी माँ का पूरा ध्यान रखने वाले बेटे के रूप में जाना जाता था, दिन भर की थकान के बावजूद वो पूरी श्रद्धा और प्रेम से उनके पैर दबाते थे जो अमूमन इतने छोटे बच्चे में कम ही नज़र आती है है। उन्होंने स्वीकार किया था कि रुक्मिणी देवी में उन्हें अपनी दिवंगत मां दिखती थी। उनके जीवन में गर्भनाल की यह तड़प ज़िंदगी भर रही, जो संभवतः उनके द्वारा माता कालीका की भावपूर्ण प्रस्तुति में स्पष्ट रूप से छलकती नज़र आती हैं।

नई सहस्राब्दी के प्रवेश पर, चेन्नई के श्रीकृष्ण गण सभा में एक अन्य संगीत कार्यक्रम का आयोजन था, परिश्रम, थकान और बीमारी पर दशकों के अनुशासन और कड़ी मेहनत से विजय पा कर उनके फौलादी संकल्प को पुनः प्रकट हो कर अपना दमखम दिखाना था। लोग फुसफुसा रहे थे कि पंडितजी अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन दे चुके थे, उनकी आवाज अपनी लोच खो चुकी थी; संगीत कार्यक्रम की शुरुआत में ही उन्हें खांसी आई और गला पूरी तरह से सूख गया था, आवाज़ में खराश थी, उस समय सबको लगा कि पता नहीं, उनके कंठ से मधुर स्वरों की गंगा पहले जैसे प्रवाहित होगी या फिर। बड़ी मुश्किल से उनके मुंह से स्वर निकल रहे थे, उन्होंने श्रोताओं से क्षमा मांगी और आलाप के लिए थोड़ा समय देने का अनुरोध किया। उस अवसाद भरी शुरुआत से उबरने में विंटेज जसराज को केवल पंद्रह मिनट लगे। यह अविश्वसनीय था, लेकिन महान कलाकार क्या ऐसे ही चमत्कार के लिए नहीं जाने जाते? कुछ वर्ष पूर्व संयुक्त राष्ट्र के एक संगीत कार्यक्रम में एमएस सुब्बुलक्ष्मी के साथ भी कुछ ऐसा ही वाकया हुआ था और एमएस की तरह ही जसराज ने भी उस चमत्कार का श्रेय परम सत्ता ईश्वर को दिया था।

जसराज का जन्म 28 जनवरी 1930 को हिसार, हरियाणा (फतेहाबाद के गाँव पीली मंदोरी) में हुआ था। जसराज ने अपना बचपन निज़ाम के राज्य हैदराबाद में गुजरा था, जहां उनके पिता पंडित मोतीराम हिंदुस्तानी संगीत के गायक थे, जिस दिन उन्हें हैदराबाद निज़ाम उस्मान अली खाँ बहादुर के दरबार में राज संगीतज्ञ घोषित किया जाना था, उसी दिन 1934 में उनके पिता का देहांत हो गया। जसराज केवल 4 वर्ष के थे। पंडित मोतीराम इससे पहले कश्मीर के राजा प्रताप सिंह के दरबार में भी संगीतज्ञ थे।

हैदराबाद से, जसराज, अपने सबसे बड़े भाई मनीराम से संगीत शिक्षा लेने के अलावा मेवाती घराने में संगीत का अध्ययन करने के लिए अक्सर गुजरात के साणंद की यात्रा किया करते थे । भाई प्रताप नारायण से

जोग, अदाना और भैरवी जैसे रागों की उनकी प्रस्तुतियां ट्रान्स में ले जाती थीं, और उसी अवस्था में आप घर चले जाते थे, कई दिनों तक वो संगीत आपके दिल और दिमाग में गूंजता रहता था।

उन्होंने तबला बजाना भी सीखा। 1946 में वे कलकत्ता चले गए, जहाँ उन्होंने अपने भाई-गुरु गायक मनीराम के साथ टेबल पर सांगत अपना संगीत कैरियर शुरू किया। उनके कुछ मित्रो दोस्तों को लगा कि वह अपनी गायकी प्रतिभा व्यर्थ गँवा रहे हैं, उन्होंने जसराज को तबला छोड़ने और एक संगीत कार्यक्रम के गायक बनने पर ध्यान केंद्रित करने के लिए राजी किया। भारतीय संगीत के कई महान नामों की तरह, जसराज ने भी अपने गायन करियर की शुरुआत ऑल इंडिया रेडियो से की थी। मंच के ऊपर उनका पदार्पण 1952 के अंत में हुआ था जब उन्होंने काठमांडू के शाही दरबार में अपनी गायन प्रस्तुत किया था। धीरे-धीरे, उनका करियर परवान चढ़ने लगा फिर उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। मनीराम के अलावा, उन्हें मेवाती घराने के जयवंत सिंह वाघेला और गुलाम कादिर

भीमसेन जोशी ने एक बार युवा जसराज से कहा था कि वो वरिष्ठ गायकों के स्तर तक पहुँचने के बहुत करीब थे; और निश्चित रूप से वह निहायत ही ऊंचा सम्मान था।

खान के साथ-साथ आगरा घराने के स्वामी वल्लभदास दामुलजी की विशारद से भी लाभ हुआ। 1962 में, उन्होंने फिल्म निर्देशक वी शांताराम की बेटी मधुरा से शादी की। इसके तुरंत बाद बॉम्बे के लिए निकल पड़े। जिसके बाद एक संगीतकार के रूप में अपने जीवन के सबसे महत्वपूर्ण वर्षों की शुरुआत हुई।

अपने 75 वर्षों के शानदार करियर में, जसराज ने लगातार अपने प्रदर्शनों की संख्या का विस्तार किया, युवा संगीतकारों को प्रेरित किया, भारत भर में विभिन्न संगीतकारों के साथ संगत की, कई शिष्यों का मार्गदर्शन किया, दुनिया भर में अथक रूप से पढ़ाया और प्रस्तुतियां दी, और अपने क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित, सम्मानित शिखर पुरुष बन गए। भक्ति तत्व उनके संगीत का एक प्रमुख हिस्सा बन गया, जिसमें श्लोक और भक्ति छंद, मंच परऔर उनकी रिकॉर्डिंग में छाये रहते थे। फिर भी उन सभी भक्ति रचनाओं की तुलना में, क्या उनके चालीसवें और पचासवें वर्ष के दौरान दिए संगीत में गहरा आध्यात्म बहता था, जिसे सुन कर बाद में उनके अनगिनत अनुयायी बने ?

श्रुति मैगज़ीन के संपादक के रूप में, मुझे जसराज के उस पहलू को जानने

अवसर मिला जिसे कम ही लोग जानते हैं, जब मुझे कलकत्ता में पले-बढ़े तमिल, टीएस अनंथू के संस्मरण छापने का अवसर मिला। उनके भाई बहनों ने युवा जसराज से संगीत सीखा है जब वो पंडित मनीराम के साथ रहते थे। अक्सर थका देने वाले रियाज के बाद देर रात वो अपने शिष्यों के घर जाते, जब शिष्य अभ्यास कर रहे होते तो जसराज की आँख लग जाती थी। लड़कियों ने दीवान पर एक चिट लगा दी जिस पर लिखा था: सोफा पर सोना माना है। जसराज ने चुपचाप संकेत को अनदेखा किया और सोफ़े पर लुढ़क गए, और उठते ही उन्हीं शब्दों के साथ गायन प्रारम्भ कर दिया!

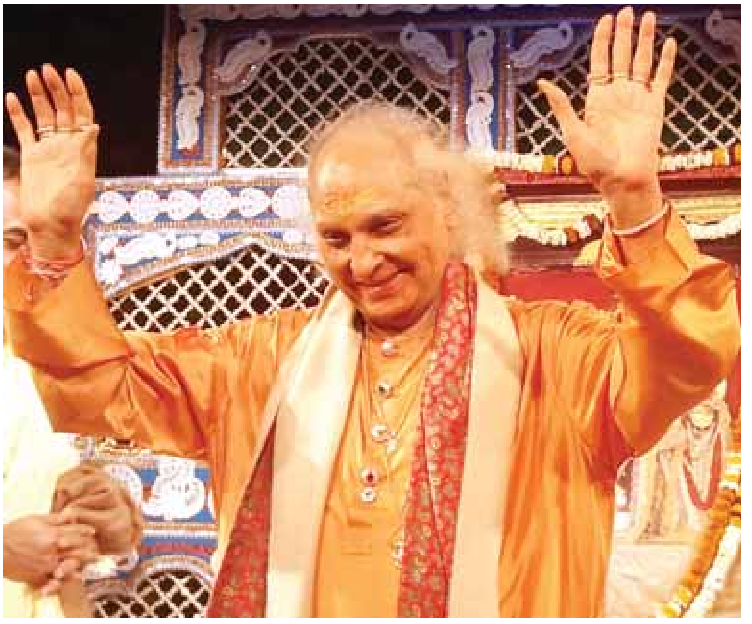

उन्होंने स्वीकार किया था कि रुक्मिणी देवी में उन्हें अपनी दिवंगत मां दिखती थी। उनके जीवन में गर्भनाल की यह तड़प ज़िंदगी भर रही, जो संभवतः उनके द्वारा माता कालीका की भावपूर्ण प्रस्तुति में स्पष्ट रूप से छलकती नज़र आती हैं।

लता मंगेशकर के साथ।

कई वर्षों बाद बाद मुंबई की यात्रा पर, अनंथू की मां ने जसराज से संपर्क करने की कोशिश की, लेकिन उनसे संपर्क करने में विफल रहने के बाद फोन पर केवल अपना नाम छोड़ दिया, अपना फोन नंबर नहीं दिया। वर्ष 1988 था, और जसराज एक स्टार बन चुके थे, जिनके प्रशंसकों की संख्या बहुत बड़ी थी, लेकिन कलकत्ता की अपनी पुरानी मित्र श्रीमती सुब्रमण्यम से मिलने के लिए उनका स्थानीय पता ढूंढने में जमीन आसमान एक कर दिया ।

भीमसेन जोशी ने एक बार युवा जसराज से कहा था कि वो वरिष्ठ गायकों के स्तर तक पहुँचने के बहुत करीब थे; और निश्चित रूप से वह निहायत ही ऊंचा सम्मान था। अपने पूरे जीवन में, जसराज ने उस स्तर की उपलब्धि और स्वीकृति के लिए प्रयास किया। संगीत मार्तंड की उपाधि, पद्म विभूषण पुरस्कार और उन्हें प्रदान किए गए अन्य कई सम्मानों, और एक प्यारा सा परिवार और प्रिय शिष्यों का साथ, संगीत के प्रणेता ये दिग्गज संगीतकार वाकई एक अज़ीम शख्सियत थे जिन्होंने आसमान की बुलंदियों को छुआ।

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

सूरत में महिलाओं का सशक्तिकरण

किरण ज़ेहरा

रोटरी क्लब सूरत, रो ई मंडल 3060, ने अपने महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम के तहत महिलाओं को सिलाई का प्रशिक्षण देने हेतु सूरत के अमरोली में एक व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र की शुरुआत की है। हाल ही में, IRDG प्रशांत जानी द्वारा DGE संतोष प्रधान और DGN श्रीकांत इंदानी की उपस्थिति में क्लब के सदस्य बाबूभाई जरीवाला द्वारा प्रायोजित इस केंद्र का उद्घाटन किया गया था।

IPDG प्रशांत जानी (दाएं से दूसरे) व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र की प्रबंधन टीम के साथ चर्चा करते हुए। पीडीजी हिमांशु ठक्कर (दाएं से चौथे) भी चित्र में शामिल हैं।

क्लब के पूर्व अध्यक्ष अजय महाजन कहते है, ''इस महामारी के कारण कई लोगों ने अपनी नौकरी खो दी है और परिवारों को एक समय का भोजन करने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। सूरत में महिलाओं पर अत्याचार और घरेलू हिंसा में बढ़ोत्तरी हुई है। हम इन महिलाओं को एक नया कौशल सीखने और उनके परिवारों को वित्तीय रूप से सहायता देने में मदद करना चाहते थे।''

यह दो महीने का एक प्रमाणपत्र कार्यक्रम है और यह केंद्र महिलाओं को अपनी स्वयं की सिलाई इकाई स्थापित करने में मदद करता है और जिनके पास कोई स्थान एवं सिलाई मशीन नहीं होती उन्हें वह प्रदान करता है। महाजन कहते है कि ''यह केंद्र नेतृत्व, कौशल विकास, वित्त प्रबंधन और उद्यमिता में उनकी क्षमताओं को विकसित करने में भी मदद करेगा।''

अमरोली की मेघना (35) के लिए कक्षा का पहला दिन ''एक पुनर्जन्म की तरह था। मैं ऐसी अनेक महिलाओं से मिली जो मेरी तरह ही संघर्ष कर रही थी लेकिन उन्हें एक अच्छा जीवन जीने हेतु आगे आते हुए देखना बहुत उत्साहजनक था। मेरी यहाँ बहुत सी सहेलियाँ बन गई है।'' उनके पति परिवार में एकमात्र कमाने वाले सदस्य थे और ''महामारी के दौरान उनकी नौकरी चले जाने के बाद मुझे अजीबोगरीब काम करके कमाना पड़ा। लेकिन अब मुझे घर-घर जाकर बर्तन माँझने की जरूरत नहीं है, वह आगे कहती है।'' वह एक कुर्ते पर 200 कमाती है लेकिन पैसे से ज्यादा, ''मुझे कुछ बनाने की संतुष्टि है और मैं अपने परिवार की बेहतर देखभाल कर सकती हूं और अपने बच्चों की बेहतरी पर ध्यान केंद्रित कर सकती हूँ। मेरे पति को मुझ पर गर्व है'', वह मुस्कुराती है।

युवा महिलाएं केंद्र में सिलाई सीखती हुयी।

महाजन कहते है, ''जब मेघना को अपना पहला कुर्ता सिलकर पहली कमाई मिली, तो हमें बहुत खुशी हुई जब उसने कहा कि यह पैसे उसके बच्चे की स्कूल की फीस देने के काम आएंगे।'' वर्तमान में इस केंद्र में सात सिलाई मशीनें है और यहाँ 25 महिलाएं प्रशिक्षण प्राप्त कर रही है। ''हम जल्द ही कुछ और मशीनें लाएंगे और धीरे-धीरे महिलाओं को सौंदर्य प्रसाधन, अगरबत्ती निर्माण और हस्तशिल्प में प्रशिक्षित करने हेतु अपनी गतिविधियों का विस्तार करेंगे'', वह आगे कहते है।

केंद्र का संचालन और प्रबंधन क्लब के RCC द्वारा किया जाता है। ■

रोटाकिड्स ऑफ चोपड़ा

टीम रोटरी न्यूज़

हमारे पास 33 देशों के 109 रोटरी मंडलों में 296 क्लब है और रोटाकिड्स 7-12 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए दोस्त बनाने और समुदाय की महत्वपूर्ण गतिविधियों में शामिल होने का एक मजेदार और रोमांचक तरीका है, रो ई मंडल 3030 के DG रमेश मेहरा ने कहा। रोटरी क्लब चोपड़ा को पहले रोटाकिड्स क्लब - रोटाकिड्स ऑफ चोपड़ा - की स्थापना पर बधाई देते हुए, उन्होंने कहा, शिक्षकों, इंटरेक्टरों और रोटरेकटरों एवं आपके क्लब के सदस्यों की मदद और समर्थन से, ये बच्चे दूसरों की मदद करने और नई दिलचस्प चीजें सीखने में बहुमूल्य अनुभव प्राप्त कर सकते है।

डीजी रमेश मेहर रोटाकिड्स चोपडा क्लब का चार्टर अध्यक्ष आरव गुजराती और सचिव पूर्वी जैन को देते हुए।

रोटाकिड्स ऑफ चोपड़ा के चार्टर अध्यक्ष नौ वर्षीय आरव गुजराती ने सचिव पूर्वी जैन और कोषाध्यक्ष मनन गुजरात की उपस्थिति में चार्टर प्रमाण पत्र स्वीकार किया। रोटरी क्लब चोपड़ा के अध्यक्ष पंकज बोरोले ने रोटरी समुदाय में बच्चों का स्वागत किया जहाँ आप इस दुनिया को एक बेहतर जगह बनाने में हमारी मदद करेंगे। उन्होंने यह भी बताया कि रोटाकिड्स का उद्देश्य युवाओं को मजेदार तरीके से सामुदायिक सेवा के महत्व को समझने में मदद करना है।

इस मौके पर महाराष्ट्र विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष अरुणभाई गुजराती भी मौजूद थे। ■

2022 ह्यूस्टन कन्वेंशन

एक बड़ा कैनवास

मियोकी वॉकर

ह्यूस्टन के रमणीय पहलुओं में से एक है इसकी ध्यान को आकर्षित करने वाली सार्वजनिक कला, जो शहर की जीवंत और विविध संस्कृति को व्यक्त करती है। जब आप 2022 के 'रोटरी इंटरनेशनल कन्वेंशन, जून 4-8' में हों, तो शहर के चारों ओर प्रदर्शनी पर लगे कुछ अविश्वसनीय दीवार- चित्र और मोज़ेक को देखना ज़रुर सुनिश्चित करें।

यदि आप हिप *ईडो* (पूर्वी डाउनटाउन के लिए शोर्ट फॉर्म) के पड़ोस में हैं, तो 801 चार्ट्रेस स्ट्रीट पर ''ऐब्स्ट्रैक्ट हैप्पी बीच वॉल'' देखें। बार्सिलोना स्थित कलाकारों जोसेन और मिना द्वारा चित्रित म्यूरल के जीवंत रंग, किसी भी दिन धूप का अहसास करा सकते हैं। या पास के ऐतिहासिक

जिले में मार्केट स्कायर पार्क के आसपास टहलने निकलें और देखें ''ह्यूस्टन इज इंस्पायर्ड'', एक म्यूरल डिजाइन जो जीवन से इतना भरा है कि यह आपको पर्याप्त ऊर्जा देने के लिए काफी है, जिससे आप पूरे शहर का पता लगाने निकल पड़ेंगे।

स्मिथर पार्क में, जो कि स्थिरता के लिए समर्पित एक सार्वजनिक पार्क है, आप बोतल के ढक्कन, टूटी हुई सिरेमिक टाइल्स, शंख, और अन्य पाए गए आइटम के साथ बनाई गई सुंदर कृतियों को देख सकते हैं। पार्क तीसरे वार्ड और पूर्वी छोर पड़ोस के किनारे पर स्थित है। एक तत्व *मेमोरी वाल* के रूप में जाना जाता है: दुनिया भर के कलाकारों द्वारा बनाये गए 60 पैनलों के साथ, यह खोये हुए प्रियजनों और अतीत की यादों के लिए एक श्रद्धांजलि के रूप में कार्य करता है। पार्क लिंडले फिश एम्फीथिएटर का भी घर है, जो कलाकार मैट गिफोर्ड द्वारा बनाया गया एक प्रदर्शनी स्थल है, जहाँ एक विशाल मछली के मुंह को बनाने के लिए पुराने सड़क के संकेतों, टूटे हुए दर्पणों और प्राचीन चित्रों के फ्रेम का उपयोग किया गया है।

अपनी यात्रा के अंत में, 'मर्लिन ओशमैन मैडिटेशन गार्डन' की यात्रा ज़रुर करें, जहाँ पुरे सफ़ेद रंग में बने म्यूरल आपके ध्यान को बरबस खीचेंगे। रसोई और भोजन कक्ष के घरेलू पुनर्चक्रण वाली वस्तुओं से बनी कलाकृतियों को देखकर यह साबित होता है कि घर की तरह कोई जगह नहीं है - सिवाय ह्यूस्टन को छोड़कर।

convention.rotary.org
पर अधिक जानें और रजिस्टर करें।

From RI South Asia Office desk

Rotary Grant Staff contact details: For global grant application and reporting, contact the staff person for the district where the grant activity will take place or, in the case of global grant scholarships, where the scholar candidate originates from.

Grant Type	Submission of	For Districts	Grant Staff Details
Global Grant	Application	2981, 2982, 3000, 3011, 3012, 3090, 3100, 3271, 3272	Sadaf Ajani sadaf.ajani@rotary.org, 847-866-3114
		3110, 3120, 3201, 3203, 3204, 3211, 3212, 3220, 3231, 3232, 3291	Jennifer Berg jennifer.berg@rotary.org, 847-425-5660
		3020, 3141, 3142, 3150, 3160, 3181, 3182, 3190, 3292	Laura Bradley laura.bradley@rotary.org, 847-866-4457
		3281, 3282	Cathleen Evans cathleen.evens@rotary.org, 847-866-3308
		3030, 3040, 3053, 3054, 3060, 3070, 3080, 3131, 3132, 3170, 3240, 3250, 3261, 3262	Chandra Palmer chandra.palmer@rotary.org, 847-866-3183
	Reporting	3000, 3012, 3054, 3132, 3141, 3160, 3182, 3190, 3212, 3231, 3240, 3261, 3291	Sumit William sumit.william@rotary.org, 011-42250150
		3011, 3020, 3053, 3060, 3131, 3142, 3150, 3170, 3181, 3201, 3232, 3250, 3262	Nelson Abraham nelsona.braham@rotary.org, 011-42250116
		2981, 3030, 3070, 3090, 3100, 3110, 3120, 3203, 3204	Sumit Sharma sumit.sharma@rotary.org, 011-42240151
		2982, 3040, 3080, 3211	Roy John roy.john@rotary.org, 011-42250146
		3271, 3272	Sadaf Ajani, sadaf.ajani@rotary.org, 847-866-3114
		3220	Jennifer Berg, jennifer.berg@rotary.org, 847-425-5660
		3292	Laura Bradley, laura.bradley@rotary.org, 847-866-4457
		3281, 3282	Cathleen Evans cathleen.evans@rotary.org, 847-866-3308
District Grant	Applications	All districts	Roy John, roy.john@rotary.org, 011-42250146
	Reporting	3000, 3012, 3054, 3132, 3141, 3160, 3182, 3190, 3212, 3231, 3240, 3261, 3291	Sumit William sumit.william@rotary.org, 011-42250150
		3011, 3020, 3053, 3060, 3131, 3142, 3150, 3170, 3181, 3201, 3232, 3250, 3262	Nelson Abraham nelsona.braham@rotary.org, 011-42250116
		2981, 3030, 3070, 3090, 3100, 3110, 3120, 3203, 3204	Sumit Sharma sumit.sharma@rotary.org, 011-42240151
		2982, 3040, 3080, 3211, 3220, 3271, 3272, 3281, 3292	Roy John roy.john@rotary.org, 011-42250146

For questions about disaster response grants, write to *grants@rotary.org*, and for programs of scale grants, write to *programsofscale@rotary.org*.

Wordsworld

No way out

Sandhya Rao

Powerful nations have long exploited Afghanistan out of greed, self-interest and political gamesmanship. They created the hydra-headed Taliban.

Few in India have shown the gumption that actor Naseeruddin Shah did to call out those in India celebrating the return of the Taliban in Afghanistan. In a video he said, "Even as the Taliban's return to power in Afghanistan is cause for concern for the whole world, there are celebrations among some sections of Indian Muslims. This celebration of the barbarians is no less dangerous." Do you want 'to reform Islam and support modernity' or go along with barbaric practices, he asked. The return of the Taliban presages the return of regressive social mores, the denial of education to children, and the repression of women. There's good reason for growing fears; make no mistake about this.

Having said this, years of political intervention and military invasion by Western nations have made Afghanistan a battle-ground serving greed, self-interest and political gamesmanship. Yes, these and their concomitant death and destruction abound all over the world. Yet, it's different, worse, in Afghanistan.

Farewell Kabul: From Afghanistan to a More Dangerous World by British war correspondent Christina Lamb had been winking at me from the living room shelf for a while. 'One day,' I'd think to myself. The day finally arrived. Published in 2014, and filled with facts and figures, this 640-page book also features stories about real people being targeted by real snipers, and real Chinook helicopters providing cover to troop movement. Embedded with the British forces and then with the US, Christina provides a hard look at the circumstances of the human tragedy that is Afghanistan, and the selfish, often blinkered aggression, both from outside forces and from within. In the end, the story of Afghanistan is the story of killings in cold blood of some people we can hold accountable for the situation and of the majority, both unaccountable and uncountable, whose homes and fields and herds have been blasted out of existence.

There is a phrase for this — collateral damage — often explained away as the 'unfortunate, inevitable' consequence of conflict. In the same way as, I suppose, it is the fallout of a 'war on terror', the purging of rationalists, the threat of suspicion, the fear of 'one god' or 'other gods', the amount of melanin produced by melanocytes that determine the colour of human skin and eyes and hair, the misogynistic hierarchies of social order drawn up by self-serving groups…

Ten-year-old Alam is the central character in *Opium Poppy* published originally in French by Hubert Haddad, and Englished by Renuka George. He and thousands of children like him are hostage to this crop which is the bedrock of both Afghanistan's tattered economy as well as the global drug trade. Alam tries to escape its tyranny by seeking refuge in Paris, where he is crushed by the drug trade. The book, in the words of *Le Monde* journalist Frederic Bobin, "… is a novel on the flouted innocence of children, thrust into a world gone mad … the universal drama of youth, betrayed."

Youth, betrayed. These are horrifying words; they describe the situation among the young people of Afghanistan, with their dreams, ambitions and hopes for the future. Somewhere towards the

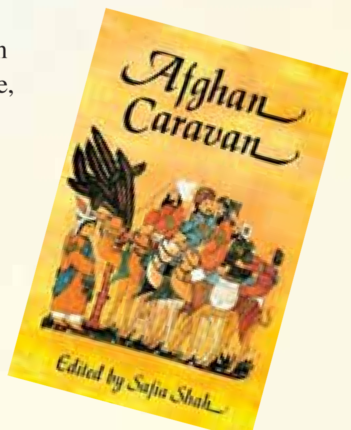

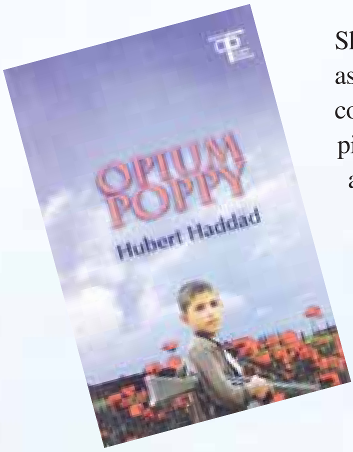

end of *Opium Poppy* is a passage that tragically reinforces the nature of this betrayal: 'Alam studies the junkie gravely, as her scrawny frame leans down from a balcony of paradise. Cannabis and alcohol, heroin fumes on an aluminium sheet, ether and even burnt glue, he had tasted them more than once, in Kabul as well as in Istanbul or in the sewers of the station in Rome. All the street kids did it more or less regularly, the thousands of refugees, those who had fled their villages, those who refused to join the insurgents. Their only ambition was to earn enough money and to leave, to strike a deal with a vaguely honest escort, to reach the other world, the one they saw in the pictures awash with joy.' For most of them, these pictures have long burned down.

In some ways, *Afghan Caravan* which fell out of another bookshelf, came as relief. Indeed, this pastiche of writings edited by journalist Safia Shah throws light on many aspects of the Afghanistan conundrum. The first piece, called 'I married an Afghan', is by Morag Murray, a Scotswoman who married the son of an Afghan chief in the early 1920s. Here, she writes about journeying to her husband's home for the first time: 'The road ran through the Khyber Pass. The great rocks, towering boulder upon boulder to heights ranging from 600 to 1000 feet, strike a peculiar terror in the traveller… At the actual frontier there is a 'turnstile' through which one passes into 'No Man's Land'… the gate leading to what is one of the least known and most remarkable countries in the world — a strip of land inhabited by clans who owe allegiance to none but their own chiefs, … always armed and sleeping with their rifles at their sides. Some of the greatest empires the world has ever known have tried to conquer them, in vain.'

In Gen Sir Andrew Skeen's words, the fighters '…come down hillsides like falling boulders … These men are as hard as nails; they live on little, carry nothing but a rifle and a few cartridges, a knife and bit of food… Their power of moving concealed is astounding, not only in moving from cover to cover, but in slipping from light to shadow, and background to background.'

The fighters in Christina's book are armed to the teeth, with a strange and scary tendency to drop their weapons accidentally, even rocket launchers. Many of the Taliban are recruits from Pakistan, Uzbekistan, Chechnya; they represent the rabid and the disgruntled as well as the educated and the ambitious. Corruption is rife; not even aid agencies are spared: 'The UN has its own airline to fly staff in and out of danger spots, so it quickly began its own service from Dubai or Islamabad to Kabul… What I didn't realise was that the millions of dollars to subsidise this service was coming from the money pledged to help Afghanistan.'

Then there are the opium brides. Christina describes meeting Parwin, 15. She is hiding from a 64-year-old drug smuggler to whom she's been pledged by her father

because he borrowed $2,000 in return for 24 kilos of opium from his farm. Unfortunately, the harvest yields little. Consider this: the West is determined to end drug trafficking from a country where opium is king. As Helmand's governor Sher Mohammad Akhundzada tells Christina, "The West needs to understand that if we eradicate, many farmers can't discharge their loans and families will have to sell their children."

All this is just skimming the surface: dip into these books and you will learn so much about people, policies and politics. Overriding all the insights is the realisation that Western nations tend to overlook the fact that one size can never fit all: the world comprises different faiths; unique cultural, social, political, economic concerns; and various systems of loyalty. At the same time, oppression and repression are the same in any language, in any faith, in any part of the world. In this context, it may be useful to go back to this column in the June issue, which talks about *Peace in the Age of Chaos*. There are many books, both fiction and nonfiction, featuring Afghanistan. You only have to look.

The columnist is a children's writer and senior journalist.

एक्शन से भरपूर जीवन

भरत और शालन सवुर

यदि आप व्यायाम को अपना स्वयं का स्थान, कायाकल्प के लिए एक निजी विश्राम स्थल बनाते हैं, तो आप कभी भी नीचा, बूढ़ा या निराश महसूस नहीं करेंगे। अगर आप ऐसा करते भी हैं, तो आप अपनी उंगलियों के एक झटके से खुद को इससे छुटकारा पाने में सक्षम होंगे। मैं रोजाना एक निश्चित समय की सलाह देता हूं। शोध कहता है कि दोपहर 3 बजे के बाद शरीर अधिक लचीला होता है। यह अधिक सहज महसूस करता है। ऐसा इसलिए भी है, क्योंकि मन ने अपेक्षाकृत आराम करना शुरू कर दिया है। जब आधे दिन में पर्याप्त काम हो जाता है, तो आप अपने लिए आसान हो जाते हैं। आप जिस उम्र और अवस्था में हैं, वह भी मायने रखता है।

अपने 20 के दशक में, आप अपनी मांसपेशियों को टोनिंग और बढ़ने के लिए व्यावहारिक रूप से दंडित करने के लिए, अपने शरीर को सही आकार देने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। लेकिन इसे ज़्यादा मत करिये। पीक की बजाय निरंतरता का लक्ष्य रखें। हड्डी और मांसपेशियों के निर्माण के लिए अपने उत्साह और ऊर्जा का दोहन करने का यह एक अच्छा समय है। दौड़ना, वजन-प्रशिक्षण, पेट के हिस्से पर आपका जोर होना चाहिए। यह खेलों में भी शामिल होने का एक अच्छा समय है - फुटबॉल, क्रिकेट, हॉकी, नेटबॉल शरीर और दिमाग को सर्वोत्तम चपलता देते हैं।

सलाह: इन्हें मजे के लिए खेलें। जीतना मदद करता है, लेकिन यही सब कुछ नहीं है। डॉ एशले मोंटेगु एक किस्सा सुनाते हैं, जहां एक भारतीय टेनिस खिलाड़ी को एक ऑस्ट्रेलियाई चैंपियन के खिलाफ खड़ा किया गया था। एक बार, जब ऑस्ट्रेलियाई ने एक विशेष रूप से सुंदर शॉट को अंजाम दिया, तो भारतीय ने सुन्दरता से खेले गए इस शॉट के पूरा होने पर अनायास ताली बजाई और हँसे, इस समय वह अपना रैकेट भी भूल गये!

जैसे ही आप अपने 30 के दशक में कदम रखते हैं, आप काम के की वजह से तनाव-क्षेत्र में हो सकते हैं, पदोन्नति, पारिवारिक जीवन का लक्ष्य रख सकते हैं ... ऐसे में ब्रिस्क वॉक या आउटडोर साइकलिंग बढ़िया है। यदि आपके पास समय की कमी है, तो प्रतिदिन केवल 20 मिनट के लिए 80-100 आरपीएम पर एक इनडोर साइकिल पर पैडल चलायें। एब्स (पेट का हिस्सा) जरूरी हैं क्योंकि वे आपके कोर को मजबूत करते हैं और साथ ही, उन मांसपेशियों को आराम करने के लिए सिखाते हैं। योग को शामिल करने का भी यह एक अच्छा समय है। हलचल के त्वरित विस्फोट आपकी ऊर्जा के स्तर को बढ़ाते हैं और आश्चर्यजनक रूप से तनाव दूर करनेवाले होते हैं। हमेशा याद रखें कि खेल से पहले वार्मअप और बाद में कूल डाउन ज़रूर करें।

सलाह: एक खुश मिजाज़ और प्यार करने वाले व्यक्ति बनने पर काम करें, जो प्यार करने के लिए जीता है और जीने के लिए प्यार करता है। इस तरह की सफलता आपको जाने नहीं देनी चाहिए। एक आदमी के बारे में एक प्यारा-सा किस्सा है, जिसने अपनी पत्नी से कहा कि वह उस दिन अपने बॉस से वेतन बढ़ाने के लिए कहने वाला है। वह घबराकर अपने बॉस के केबिन में चला गया और ... उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा, जब बॉस तुरंत सहमत हो गया। शाम को जब वह घर पहुंचा तो उसकी पत्नी ने सबसे अच्छी चीन की कटलरी सजायी थी और उसके पसंदीदा व्यंजन बनाए थे। उसकी थाली में, उसने एक कार्ड रखा था: बधाई हो, प्रिय। मुझे पता था कि आपको तरक्की ज़रूर मिलेगी। यह बातें आपको बतायेंगी कि मैं आपसे कितना प्यार करती हूँ। उनके विशेष कैंडल-लाइट डिनर के बाद, जैसे ही वह उठीं, उसकी जेब से एक कार्ड गिर गया। उस आदमी ने उठा लिया। जिसपर लिखा था, तरक्की न मिलने पर चिंता मत करिये। आप वैसे भी इसके लायक ही हैं, क्योंकि आप खास हैं। ये बातें आपको बतायेंगी कि मैं आपसे कितना प्यार करती हूँ। ये वे क़ीमती समय हैं जब आप नीचे हो सकते हैं, परंतु आप बहुत ही ऊँचा महसूस करते हैं।

हमारे 40 के दशक में, सक्रिय जीवन शैली एक महान वरदान है - यह ऊर्जा और प्रेरणा को बढ़ाता है, जब चीजें खराब हो जाती हैं। यह उच्च रक्तचाप और मोटापे को भी रोकता है। यदि आपके काम में यात्रा करना एक ज़रूरी हिस्सा है, तो विस्को के बॉडी-शेपर पुली को अपने साथ पैक करना बुद्धिमानी होगी। उसे बस एक खिड़की-ग्रिल की ज़रूरत है और साथ ही पुस्तिका में स्पष्ट रूप से दिए गए अभ्यासों के करने की। यह एक संपूर्ण शारीरिक कसरत है और बोनस है: इसका सरल और आसान होना।

थोड़ी सी अपरिपक्वता को हटाये जाने की ज़रूरत है और यह यहाँ आसान हो जाता है क्योंकि हमारा शरीर भी इस प्रयास में हमारी मदद करता है। यह हमारे मस्तिष्क-कोशिकाओं के बीच छोटे, पतले तंतु विकसित करता है। यह हमारी विश्लेषणात्मक शक्ति को बढ़ाता है और यह इस पर निर्भर करता है कि हम इसका उपयोग कैसे करते हैं। यह ज्ञान या अवसाद की शुरुआत हो सकती है। बुद्धि का चुनाव करें। मैं एक दोस्त के चेहरे के भाव को कभी नहीं भूल सकता जब उसने कहा, मैं आजकल अधिक संवेदनशील क्यों महसूस करती हूं? मैं अपने बॉस से आलोचना नहीं ले सकती, जैसा कि मैं पहले करती थी, और जब मैंने समझाया कि उसे अधिक विश्लेषणात्मक शक्तियां मिल रही हैं, तो उसका चेहरा चाँद की तरह चमक उठा। जब आप जान जाते हैं कि आपको क्या मिला है, तो आप जाग जाते हैं और एक बार फिर अपना सर्वश्रेष्ठ करने के लिए तैयार हो जाते हैं।

50 की उम्र में, आजकल, नए 30 के दशक हैं। हो सकता है कि यह चारों ओर अधिक जागरूकता के कारण हो, लेकिन हम अपने 50 के दशक में अलग से नहीं दिखते या वह सब अलग से महसूस नहीं कर पाते हैं, है ना? उम्मीद है, अगर आपने रोजाना व्यायाम किया है, यक़ीनन क्योंकि महामारी के कारण आपको 24x7 घर पर रहना पड़ा है, तो आप पहले से कहीं ज्यादा फिट हो सकते हैं। यहां, अपने कंधों को मजबूत रखना बहुत अच्छा है, इसलिए श्रग (कंधे की कसरत) के लिए जाएं। पुली, एब्स आदि के साथ जारी रखें। एक उपयोगी व्यायाम कुर्सी-साइकिल चलाना है। जब आप टीवी पर अपनी पसंदीदा फिल्म देख रहे होते हैं तो आप एक कुर्सी पर बैठते हैं, मिनी-साइकिल सामने रखते हैं और पैडल करते हैं। 20 मिनट के लिए 70-80 RPM से शुरू करें और इसे सप्ताहों में 60 मिनट तक बढ़ाएं। शोध में कहा गया है कि 50 के दशक की उम्र में रक्त संचार धीमा हो जाता है, जिससे चक्कर आना या अचानक सब भूल सकते हैं। आपकी 60 मिनट की लेगवर्क इन असुविधाओं को दूर कर देगी। साइकिल को एक तरफ धकेलते हुए और अपने पैरों को ऊपर उठाकर और नीचे करके कसरत करें। ये और साथ ही फर्श पर किए गए लेग-राइज घुटनों के लिए अच्छे होते हैं।

सलाह: पवन-चक्की कंधे-जोड़ों को तरल और लचीला रहने में मदद करती है और धड़ के मुड़ने से रीढ़ की हड्डी में अकड़न दूर रहती है।

60 की उम्र और उसके बाद के रहस्य ... 60, 70, 80 की उम्र के दशक धीरे-धीरे लुढ़कते हैं। बहुत सारे आंतरिक दबावों को पूरी तरह से जाने देने का यह एक सुंदर समय है। यह अद्भुत है क्योंकि आप में एक 20-वर्षीय, एक 30-वर्षीय, एक 40-वर्षीय वगैरह का इन्सान मौजूद है। जीवन के बारे में आपकी समझ गहरी है, इसलिए जीने और जीवित रहने की गहराई है। जॉर्ज वाशिंगटन यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ मेडिसिन के अनुसार, मन कोमल है, और मस्तिष्क भी ऐसा ही है। जाहिर है, मस्तिष्क के बाएं और दाएं गोलार्ध अधिक सामंजस्यपूर्ण हो जाते हैं और रचनात्मकता को बढ़ावा देते हैं। इन्हें अपने वर्षों के समृद्ध अनुभव के साथ मिलाएं और याद रखें कि आपको खुशी और तृप्ति के लिए एक शानदार कॉकटेल मिला है।

सलाह: यह व्यायाम बंद करने का समय नहीं है। आउटडोर/इनडोर वॉकिंग या आर्मचेयर साइकलिंग आपके शासन को शुरू करने के लिए बेहतरीन गतिविधियाँ हैं। कोई भी व्यायाम तब तक वर्जित नहीं है जब तक कि आपकी कोई मेडिकल शर्त न हो - अपने डॉक्टर की बात सुनें। और वही करें जो आपके मन और शरीर के अनुकूल हो।

60-प्लस पुनर्जागरण और प्रतिध्वनि का उम्र है। मॉन्ट्रियल विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर मोन्ची उरी का मानना है कि बुजुर्ग मस्तिष्क व्यावहारिक है; यह अनावश्यक को काटता है और समस्या के समाधान के लिए सही विकल्प चुनता है। इस तरह की नई रोशनी 60 की उम्र के दशक को स्पष्टता और सही निर्णयों के लिए महान बनाती है; 70 के दशक में मस्तिष्क पूरी ताकत से काम करना शुरू कर देता है। और ये सभी 90 की उम्र के आते-आते अपनी चोटियों पर होती हैं।

कृपया आपकी उम्र जो भी हो, व्यायाम ज़रूर करें। डॉ मोंटागु का उद्धरण उधार लेते हैं: 'आपको एक पैसे की आवश्यकता नहीं है, आपको सिर्फ़ अपने खुद की आवश्यकता है।'

लेखक फिटनेस फॉर लाइफ, *और* बी सिम्पली स्पिरिचुअल - यू आर नैचुरली डिवाइन *के लेखक है और फिटनेस फॉर लाइफ कार्यक्रम के शिक्षक है।*

Rotary PEOPLE OF ACTION

थूक-मुक्त हैदराबाद के लिए रोटरी के नेतृत्व में एक अभियान

टीम रोटरी न्यूज़

सार्वजनिक स्थानों पर थूकने के खिलाफ एक बड़ी पहल में, रो ई मंडल 3150 के अंतर्गत, रोटरी क्लब जुबली हिल्स ने हैदराबाद में हुसैन सागर झील परिसर के एक प्रतिष्ठित स्थान टैंक बंध में रोटरेक्ट एंड इंटरेक्ट क्लब, टोस्टमास्टर्स, जेयसीस और फ्रीमेसंस के साथ साझेदारी में एक विशाल जागरूकता रैली का आयोजन किया। स्वतंत्रता दिवस पर मंचन की गई इस रैली का मुख्य आकर्षण 150 मीटर का राष्ट्रीय ध्वज था, जिसे स्वयंसेवकों द्वारा ले जाया गया था। प्रदर्शनकारियों द्वारा स्वच्छता और जन स्वास्थ्य के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए तख्तियां और बैनर भी लिए गए थे।

'स्टॉप इंडिया स्पिटिंग (एसआईएस)' अभियान की शुरुआत सबसे पहले स्वच्छ बेंगलुरु के सहसंस्थापक पर्यावरणविद् ओडेट कटराक ने की थी, जो स्वच्छ, हरित और सुरक्षित शहर के लिए नागरिक नेतृत्व करनेवाले आंदोलनकारी थे और अब इसे सुंदर भारत के नाम से भी जाना जाता है। डीजी के प्रभाकर ने टैंक बंद के रोटरी पार्क में इस रैली को क्लब के अध्यक्ष पी सुरेश गुप्ता और अन्य एनजीओ के साथ हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। ''एसआईएस सार्वजनिक स्थानों में थूकने के खतरों के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए एक बहु-वर्षीय अभियान होगा।

रैली के हिस्से के रूप में स्वयंसेवक 150 मीटर का राष्ट्रीय ध्वज लेकर चलते हुए।

इसमें भारत सरकार द्वारा कोविड प्रोटोकॉल के हिस्से के रूप में इस स्वच्छता की आदत को शामिल करने की मांग की गई है।'' जुबली हिल्स रोटरी क्लब के पूर्व अध्यक्ष, के सेशा साई कुमार ने कहा, हैदराबाद को स्वच्छ, रहने योग्य और सुंदर शहर बनाने का लक्ष्य है, इस प्रकार यह स्वच्छ सर्वेक्षण के वार्षिक स्वच्छता सर्वेक्षण में शीर्ष राष्ट्रीय रैंक पर बना रहेगा।

'रैली को स्थानीय मीडिया में व्यापक कवरेज मिला और यह रोटरी क्लब के लिए एक प्रमुख जनसंपर्क अभ्यास था।'' कुमार ने कहा, कई संगठनों और एनजीओ ने इस रोटरी पहल में भागीदार के रूप में शामिल होने के लिए रुचि जताई है। ■

रेवाड़ी मेन रोटरी क्लब, एक सार्वजनिक स्वास्थ्य केंद्र का नवीनीकरण करता है

रेवाड़ी में जन स्वास्थ्य केंद्र का उद्घाटन करते DG अनूप मित्तल।

रो ई मंडल 3011 के अंतर्गत, रोटरी क्लब रेवाड़ी मेन ने हाल ही में रेवाड़ी के राजीव नगर में 'हरियाणा स्वास्थ्य विभाग' द्वारा संचालित शहरी जन स्वास्थ्य केंद्र (यूपीएचसी) का जीर्णोद्धार किया। क्लब ने दीवारों के निर्माण और बाह्य रोगियों के लिए एक प्रतीक्षा क्षेत्र को प्रायोजित किया तथा विद्युत फिटिंग के साथ केंद्र को सुसज्जित किया और अन्य मरम्मत कार्यों को पूरा किया। दो महीने तक चलने वाले इस प्रोजेक्ट को ₹3.3 लाख की लागत से पूरा किया गया और इस सुंदरतम सेंटर का उद्घाटन डीजी अनूप मित्तल ने किया।

क्लब के अध्यक्ष जेपी चौहान ने कहा, ''यह शायद हमारे क्लब की सबसे बड़ी परियोजनाओं में से एक है।'' अरुण गुप्ता प्रोजेक्ट के चेयरमैन थे। क्लब के सदस्यों ने परियोजना के लिए उदारता से योगदान दिया और एक सॉफ्टवेयर विकास संगठन 'डीबीजी टेक्नोलॉजी' प्रमुख प्रायोजक था। ■

On the racks

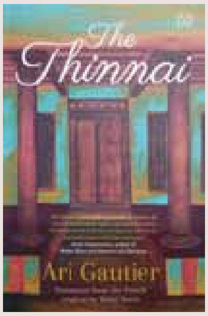

The Thinnai

Author : **Ari Gautier**
Publisher : **Hachette**
Pages : **186; ₹399**

In this delightful book, originally written in French, Ari Gautier takes us through the unglamorous district of Kurusukuppam, Pondicherry, that you will not find in any tourist literature.

The narrative, translated from French to English by Blake Smith, is centred around the eccentricities of the inhabitants of the four-odd streets of the locality, as different from Pondichery's plush and stylish White Town, as chalk from cheese. The core of the story is of course Pondicherry's French history, and the differences, subtle and strong, between those who speak proper French, such as the narrator's family and those who speak Creole, like their domestic help Lourdes. "Pondicherrian Creole is French compounded with Tamil and Portuguese words, spoken in a Tamil style," explains the writer.

The protagonist's father, who had once fought in the French army, is now settled comfortably with a Frenchman's military pension in a respectable house with a predominant *thinnai* (Tamil word for a shaded verandah or sit-out with built-in seating). It is the fragnance of the French style cooking in this house, that draws the weary and colourful traveller Gilbert *Thatta* to the *thinnai*. The *Durai* (white person), dressed in a dirty coat, accompanied by little Gilbert, is welcomed in the *thinnai*, given ample food and liquor by the generous owner and the rest of the story is Gilbert *Thatta's* colourful story about a rare diamond… the Stone of Sita… in his possession.

An interesting passage in the book is the history of how the local residents of Pondicherry renounced their Indian citizenship and embraced French citizenship. "On 3 January 1882, my great grandfather Nalanda presented himself at Pondicherry's newly built City Hall…. Two hundred years ago, one of its ancestors had converted to Catholicism to escape untouchability. Now Nalanda was able to dive into another new world seeking a better life for himself and his children. He would become a French citizen."

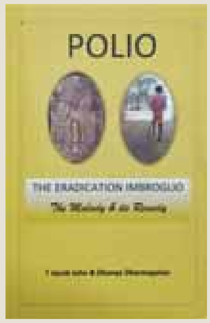

Polio, The Eradication Imbroglio

Author : **T Jacob John and Dhanya Dharmapalan**
Publisher : **Notion Press**
Pages : **274; ₹650**

This book is a reminder of the war against polio and the continuing battle as its total eradication takes a back seat while the world fights Covid-19. The global programmes to root out polio are now facing an existential crisis, say experts. Helping the readers understand the global combat against the disease, the book talks of past milestones and the way forward. It has a detailed account of the challenges Albert Sabin, the first developer of oral polio vaccine, faced when he and Dr Olitsky grew a strain of poliovirus in a lab. The authors warn that "this is not the time to make more gambles," as it would deflect from the primary aim of eradicating polio and suggest a logical way forward.

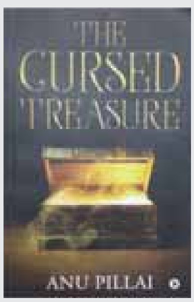

The Cursed Treasure

Author : **Anu Pillai**
Publisher : **Notion Press**
Pages : **102; ₹150**

Set in Kollam during the British Raj, the book narrates the story of Keshu, a man of high morals. His journey from rags to riches is pebbled with trials and tribulations including the sudden twist that claimed his fortunes under mysterious circumstances. Stretching over two centuries, from 1880 to 2020, the book narrates the history of Keshu's descendants in a lucid style. It keeps the reader hooked on to the question: Will Keshu's lost treasure ever be found?

Compiled by Rasheeda Bhagat and Kiran Zehra

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब सेलम मेट्रोपोलिस - रो ई मंडल 2982

गवर्नमेंट मोहन कुमारमंगलम हॉस्पिटल में कोविड मरीजों की सेवा करनेवाली पांच सौ नर्सों को सम्मानित किया गया। अस्पताल के डीन डॉ वल्लिअम्मई ने क्लब के पूर्व अध्यक्ष हरिदास को कोविड टीकाकरण के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए सम्मानित किया।

रोटरी क्लब पिलखुवा सिटी - मंडल 3012

DG अशोक अग्रवाल की मौजूदगी में क्लब के नए पदाधिकारियों की नियुक्ति के दौरान तीन दिव्यांगों को ट्राइसाइकिल दान की गई। क्लब का लक्ष्य इस साल के अंत तक 50 तिपहिया साइकिलें दान करने का है।

रोटरी क्लब पुदुकोट्टई सिटी - रो ई मंडल 3000

मुख्य अतिथि के रूप में तमिलनाडु के स्वास्थ्य मंत्री एम सुब्रमण्यम की मौजूदगी में कीरानूर के सरकारी अस्पताल को ऑक्सीजन सिलेंडर दान किए गए। कानून मंत्री एस रघुपति उपस्थित थे।

रोटरी क्लब पुसाद - रो ई मंडल 3030

DG डॉ आनंद झुनझुनवाला ने स्थापना के दौरान वृक्षारोपण अभियान की शुरुआत की। क्लब का लक्ष्य 1,000 से अधिक पौधे लगाने का है और इन पौधों को परियोजनाओं और विशेष अवसरों पर आए मेहमानों को उपहार में दिया जाएगा।

रोटरी क्लब दिल्ली साउथ सेंट्रल - रो ई मंडल 3011

फरीदाबाद में DG अनूप मित्तल द्वारा थैलेसीमिया से पीड़ित बच्चों के लिए ₹5 लाख की लागत वाले पांच बिस्तरों वाले रक्त आधान केंद्र का उद्घाटन किया गया।

रोटरी क्लब अहमदाबाद सुप्रीम - रो ई मंडल 3054

टेबल टेनिस खेलने वाली भाविना पटेल और सोनल पटेल का प्रायोजन क्लब द्वारा किया गया था। जहां भाविना ने रजत पदक जीता, वहीं सोनल टोक्यो पैरालिंपिक में पदक हासिल करने के करीब पहुंची।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब सूरत राउंडटाउन - रो ई मंडल 3060

मांडवी स्थित तेजस आई हॉस्पिटल के सात ग्रामीण विज़न सेंटर्स को चिकित्सा उपकरण एवं उपभोग्य सामग्रियाँ दान में दी गईं। अंतर्राष्ट्रीय साझेदार रोटरी ई-क्लब ऑफ वर्ल्ड पीस, रो ई मंडल 5330, US, ज़ूम पर इस कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

रोटरी क्लब श्री गंगानगर - रो ई मंडल 3090

क्लब अध्यक्ष जय कुमार जसुजा और सचिव हरीश भाटिया द्वारा वर्ध आश्रम नामक एक वृद्धाश्रम में वरिष्ठ नागरिकों को फल और पौष्टिक भोजन वितरित किया गया। इस मौके पर PDG अश्विनी सचदेव और अन्य रोटेरियन मौजूद थे।

रोटरी क्लब फगवाड़ा मिडटाउन - रो ई मंडल 3070

हदियाबाद स्थित सेंट सोल्जर डिग्री कॉलेज में एक वृक्षारोपण अभियान चलाया गया, जिसकी अगुवाई क्लब अध्यक्ष मनोज कुमार ने की।

रोटरी क्लब बिसौली - रो ई मंडल 3110

क्लब ने अपने इनर व्हील क्लब के साथ मिलकर बिसौली में एक विशाल वृक्षारोपण अभियान का आयोजन किया। इस हरियाली अभियान ने क्लब की सार्वजनिक छवि में भी इजाफा किया।

रोटरी क्लब शाहबाद मारकंड - रो ई मंडल 3080

मुगल माजरा गांव के शासकीय प्राथमिक स्कूल में चौथा वाटर कूलर स्थापित किया गया। इस सुविधा से छात्रों के साथ-साथ शिक्षकों को भी फायदा होगा।

रोटरी ई-क्लब पुणे डायमंड - रो ई मंडल 3131

कोथरुड स्थित एक डिजिटल खुदरा दुकान पर चलाए गए एक विशेष अभियान में भारी मात्रा में खिलौने, कंप्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक सामग्रियों, कपड़े, जूते, ड्रेस सामग्री, बैग, साइकिल, गद्दे और कुशन सहित अन्य सामग्रियों से होने वाला कचरा एकत्रित किया गया।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब अंबरनाथ स्मार्ट सिटी - रो ई मंडल 3142

रायगढ़ जिले के पोलादपुर तालुक और महाड़ स्थित सवाद, देवले, हल्दुले और दाभिले गांवों में बाढ़ पीड़ितों को ₹1.65 लाख की 300 से अधिक राशन किटें वितरित की गईं। यह परियोजना रोटरी क्लब महाड़ की मदद से सम्पन्न की गई।

रोटरी क्लब कुंडपुरा - रो ई मंडल 3182 (रशीदा)

CET परीक्षा में बैठने वाले 500 विद्यार्थियों को फेस मास्क और सैनिटाइटर दान किए गए। क्लब अध्यक्ष शशिधर हेगड़े ने यह सामान कुंडपुरा गवर्नमेंट कॉलेज को सौंपा।

रोटरी क्लब गुलबर्गा सनसिटी - रो ई मंडल 3160

पुणे के साधु वासवानी मिशन और रोटरी क्लब इचलकरंजी टेक्सटाइल सिटी के सहयोग से गुलबर्गा स्थित रोटरी स्कूल में आयोजित कृत्रिम अंग फिटमेंट शिविर में 170 दिव्यंगों को कृत्रिम अंग लगाए गए।

रोटरी क्लब पलरीवट्टम - रो ई मंडल 3201

क्लब अध्यक्ष रमेशकुमार जी ने एक विधवा और उसकी दो बच्चियों को रोटरी द्वारा बनाए गए नए घर की चाबी प्रस्तुत की। मंडल निदेशक बालगोपाल, AG चित्रा अशोक और क्लब सचिव बेंजिथ बेबी इस मौके पर मौजूद थे।

रोटरी क्लब हेरिटेज सिटी शिरोल - रो ई मंडल 3170

एक स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया जिसमें श्रीनिवास पाटिल और अतुल पाटिल ने 100 से अधिक बच्चों की सामान्य बीमारियों की जांच की।

रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम साउथ - रो ई मंडल 3211

क्लब ने पेरियारम गांव को गोद लिया है और यह ग्रामीणों को लाभ पहुंचाने वाले विभिन्न विकास कार्यक्रमों को कार्यान्वित कर रहा है।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब तिरुनेलवेली सेंट्रल - रो ई मंडल 3212

महामारी की चपेट में आए वंचित एवं विकलांग लोगों को 250 किलो चावल की बोरियाँ और किराने का सामान दिया गया।

रोटरी क्लब रायगढ़ स्टील सिटी - रो ई मंडल 3261

लगभग 1,500 पीपल, नीम, आम और करंज के पौधे क्लब के सदस्यों द्वारा रायगढ़ के निकट प्रसादा गांव में लगाए गए।

रोटरी क्लब वंदवासी टाउन - रो ई मंडल 3231

क्लब ने एनेट्स, इंटरेक्ट और रोटरेक्ट क्लबों की स्थापना की। रोटेरियनों ने विद्यार्थियों के किताबें, बैग प्रायोजित किए, और महामारी से पीड़ित परिवारों को चावल एवं राशन वितरित किए।

रोटरी क्लब भद्रक - रो ई मंडल 3262

भद्रक स्थित सालंदी अस्पताल में मोतियाबिंद सर्जरी शिविर में बीस रोगियों का ऑपरेशन किया गया। क्लब ने अपने स्वर्ण जयंती वर्ष में मोतियाबिंद के 500 ऑपरेशन करने की योजना बनाई है।

रोटरी क्लब गुवाहाटी सिटी - रो ई मंडल 3240

रोटरी क्लब गुवाहाटी मेट्रो के साथ साझेदारी में परियोजना *अन्नरत्नम* के अंतर्गत डॉक्टर बी बोरूआ कैंसर हॉस्पिटल में लगभग 400 लोगों, अधिकांशतः रोगियों के परिचारकों, को भोजन परोसा गया।

रोटरी क्लब कलकत्ता मिडटाउन - रो ई मंडल 3291

नरेंद्रपुर स्थित रामकृष्ण मिशन ब्लाइंड बॉयज एकेडमी में कक्षा 10वीं के 17 दृष्टिबाधित छात्रों को ऑनलाइन कक्षा में भाग लेने हेतु सक्षम बनाने के लिए स्मार्टफोन दान किए गए।

वी मुत्तुकुमारन द्वारा संकलित

बढ़ती उम्र के विषाद

टीसीए श्रीनिवासा राघवन

LBW

इस बात को समझना आसान नहीं है, खासतौर से तब जब आपके पास काफी लंबे समय का अनुभव हो और आप इस बात के आदी हो गए हो कि आप जो कुछ भी कह रहे है लोग उस पर ध्यान देते है फिर चाहे वह बात कितनी ही बकवास क्यों न हो। लेकिन यह एक ऐसा सबक है जिसे हर व्यक्ति को बढ़ती उम्र के साथ सीखना चाहिए: युवा आपकी बातों पर ध्यान नहीं देते है। जब आपको इस बात पर गुस्सा आता है, जैसा कि मेरे साथ अक्सर होता है, तो मैं अपने आप से कहता हूँ कि कुछ साल पहले मैं भी बिल्कुल ऐसा ही था।

मुझे उन मुलाकातों की याद आती है जहाँ वृद्ध सहकर्मी या रिश्तेदार बातचीत का हिस्सा बनने की कोशिश कर रहे थे। मुझे यह भी याद है कि कैसे हम युवा बिना किसी बात की परवाह किए अपने समकक्षों के साथ शामिल होने का बहाना ढूंढते हुए उनकी आधी बात सुनकर सिर हिलाते थे। मुझे उन वृद्ध लोगों के चेहरे पर निराशा का भाव भी याद है जो स्वयं भी कोई बहाना ढूंढकर वहाँ से जाना पसंद करते, लेकिन वे ऐसा नहीं कर सकते थे क्योंकि वे जिनके साथ आए थे वो आधी रात तक वहाँ रुकने वाले थे। फिर वे जाकर एक कोने में बैठ जाते और धैर्यपूर्वक सबको देखते रहते, खाने-पीने की चीजों को न कहते हुए क्योंकि उनके लिए बहुत देर हो चुकी थी। कभी-कभी, कुछ लोग बहुत दया दिखाते हुए कुछ मिनटों के लिए उनके साथ बैठ जाते थे। कुल मिलाकर, अक्सर वे अकेले ही होते थे।

मैं भी अब उस अवस्था में पहुँच गया हूँ, वास्तव में आप में से बहुत से लोग भी वहाँ पर होंगे। यहाँ तक कि इस वायरस के आने से पहले भी मैं हमेशा दावतों या पेशेवर समारोहों में शामिल होने को लेकर काफी चयनात्मक था। लेकिन अब मैंने यह सब बिल्कुल बंद कर दिया है क्योंकि कहीं भी जाने का क्या मतलब जब किसी को फर्क नहीं पड़ता कि आप आए भी है या नहीं? यह तीन गुना बदतर तब हो जाता है जब आप उन्हें बताते है कि आप नहीं आ रहे है और वे जवाब देते है मैं समझता हूँ, सर/अंकल। अपना ध्यान रखिए। लेकिन सभी पहलुओं पर विचार करने के बाद ये बात भी ठीक लगती है।

हालाँकि, जो बात इतनी अच्छा नहीं है - लेकिन होनी चाहिए - वह यह है कि जब आपके अपने बच्चे आपकी तीसरी व्हिस्की की बात पर आपकी इच्छा को पूरी तरह से अनदेखा करते हुए आपके साथ अजीब व्यवहार करना शुरू कर देते है - क्षमा करें, अब और नहीं। आप कुछ कहने की कोशिश करते है और महसूस करते है कि वे आपकी बात पर ध्यान न देते हुए अपनी बातों में ही मशगूल है, इस तथ्य की परवाह किए बिना कि आप उन्हें बताना चाह रहे है कि वे गलत समझ रहे है। आप देखते है कि उन्हें अपने गलत होने की भी परवाह नहीं होती क्योंकि उन्हें लगता है कि वे सही है। और यही बात उनके लिए मायने रखती है, जैसा कि अपने जवानी के दिनों में हमारे साथ था।

मैंने बदला लेने का एक बहुत ही बेरहम तरीका निकाला। मैं पेशेवर या निजी मिलन समारोह आयोजित करता हूँ जहाँ औसतन 70 वर्षीय लोग मौजूद होते है और में एक या दो युवाओं को ही आमंत्रित करता हूँ। हम सब उनकी उपेक्षा करते है, और उनके साथ वेटर की तरह व्यवहार करते है।

लेकिन एक दुष्ट और चतुर आदमी होने के नाते, मैंने बदला लेने का एक बहुत ही बेरहम तरीका निकाला। साल में एक या दो बार, मैं पेशेवर या निजी मिलन समारोह आयोजित करता हूँ जहाँ औसतन 70 वर्षीय लोग मौजूद होते है क्योंकि मैं एक या दो युवाओं को ही उसमें आमंत्रित करता हूँ। फिर हम सब उनकी उपेक्षा करते है, यदि यह पुराने सहकर्मियों का समारोह है तो हम उनके साथ वेटर की तरह व्यवहार करते है और यदि यह कोई निजी समारोह है तो उसमें बेटे/बेटियों/भतीजों/भतीजी की तरह व्यवहार करते है। मेरा यकीन मानिए, यह देखना मजेदार होता है कि वे कितना ऊब जाते है। बस इतना ध्यान रखें कि उनमें से तीन से अधिक को आमंत्रित न करें, दो लड़के और एक लड़की या दो लड़की और एक लड़का। मैंने देखा है कि जहाँ लड़कियां उस शाम को हँसकर बिताती है, वहीं लड़के कुंठित महसूस करते है। कभी-कभी उनमें से कुछ नशे में हो जाते है क्योंकि वहाँ शराब मुफ़्त होती है और उनकी पत्नियाँ मौजूद नहीं होती। मैं आपको बता रहा हूँ, इसमें बहुत मज़ा आता है।

किसी वजह से, सेवानिवृत्त महिलाओं को युवा भीड़ से बहुत ज्यादा सम्मान और तवज्जो मिलती है। मैंने इसे तब तक जीवन के बड़े रहस्यों में से एक माना जब तक कि एक वृद्ध महिला ने मुझे यह नहीं बताया था कि जीवन भर उपेक्षित होने की वजह से, उन्होंने इसे संभालना सीख लिया है। उसने कहा, ''वृद्धावस्था को गरिमा के साथ स्वीकार करके, आप पुरुषों को भी इसे आजमाना चाहिए।'' ■

संक्षेप में

सुनहरी जीभ वाली ममी

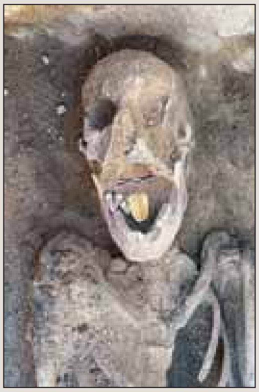

मिस्र-डोमिनिकन पुरातत्वविदों के एक दल ने 2,000 साल पुरानी ममियों की खोज की है, जिनके मुंह के अंदर सुनहरी जीभ रखी गई थी। उत्तरी मिस्र में अलेक्जेंड्रिया के तपोसिरिस मैग्ना मंदिर में इन 16 ममियों की खोज की गई थी जिन्हें ग्रीक और रोमन युग में लोकप्रिय चट्टान काटकर बनाए गए मकबरों में दफनाया गया था। जीभ के आकार का एक स्वर्ण पत्र एक ममी के मुंह में रखा हुआ मिला जो एक विशेष अनुष्ठान हुआ करता था जिससे यह सुनिश्चित किया जाता था कि मृत्यु के बाद वे अधोलोक के देवता ओसाइरिस से बात करने में सक्षम हो।

एक कुंवारी शार्क ने दिया बच्चे को जन्म

इटली के कैला गोनोन एक्रेरियम में एक कुंवारी शार्क से जन्मे शिशु का नाम इस्पेरा, या मॉल्टीज़ में आशा रखा गया है, और वैज्ञानिकों के अनुसार यह अपने प्रकार की पहली शार्क हो सकती है। स्मूद-हाउन्ड शार्क प्रजाति की इस मादा बेबी शार्क ने एक ऐसी माँ से जन्म लिया था जो पिछले एक दशक से एक टैंक में एक अन्य मादा शार्क के साथ रह रही थी और वहाँ कोई नर शार्क नहीं था। पार्थेनोजेनेसिस नामक यह दुर्लभ घटना मादाओं द्वारा स्व-गर्भादान करने की उनकी क्षमता के परिणामस्वरूप तब घटित होती है जब जलवायु परिवर्तन या अत्यधिक मछली पकड़ने या प्राकृतिक चयन प्रक्रिया जैसे कि शिकार और बीमारी के कारण सभी मौजूदा नरों का सफाया हो जाता है।

एक बचाव फ्लाइट के नाम पर हुआ अफगानी बच्चे का नामकरण

एक अफगानी मां, जिसे बचाव उड़ान के दौरान प्रसव पीड़ा हुई थी, ने अपनी बेटी का नाम उस फ्लाइट के परिचय संकेत *REACH 828* के नाम पर रीच रखा जिसने उन्हें 21 अगस्त को जर्मनी के रेमस्टीन एयर बेस पहुंचाया था। रक्षा अधिकारियों ने सुरक्षा के लिहाज से इस परिवार के बारे में अन्य कोई जानकारी नहीं दी और अमेरिकी वायु सेना द्वारा अपने ट्विटर हैंडल पर साझा की गई तस्वीरों में इस मां का चेहरा डिजिटल रूप से धुंधला कर दिया गया था।

एयरपोर्ट ने ली ईको पार्क की शक्ल

फ्रांसीसी परिदृश्य वास्तुकार मोस्बैक पेसागिस्टेस ने पुराने ताइचुंग हवाई अड्डे को एक पारिस्थितिक स्थान में परिवर्तित करने के लिए प्रौद्योगिकी और प्रकृति का संयोजन किया है। मोटे तौर पर दार्शनिक रूडोल्फ स्टेनर के प्रिन्सपल्स ऑफ दी 12 सेंसेस (12 इंद्रियों के सिद्धांत) पर आधारित इस पार्क में 12 अलग-अलग क्षेत्र है जिनका नामकरण 12 इंद्रियों के नाम पर किया गया है। अन्य चीजों के अलावा, इस परिदृश्य में गूंज उत्पन्न करने के लिए एक झील द्वारा निर्मित एक ध्वनि क्षेत्र और फूलों के बागानों से निकलने वाली खुशबुओं का क्षेत्र भी शामिल है।

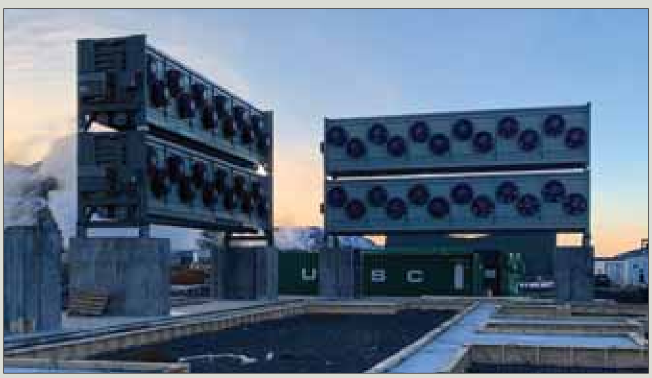

आइसलैंड की फर्म हवा से CO_2 हटाती है

उन्नत तकनीक का उपयोग करके एक स्विस कंपनी, क्लाइमवर्क्स, ने एक ऐसा संयंत्र स्थापित किया है जो हवा से कार्बन डाइऑक्साइड को सोखकर उसे पत्थर बना देता है। कंपनी का दावा है कि उसका ओर्का प्लांट 4,000 टन कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2) सोंख सकता है जो लगभग 870 कारों से होने वाले वार्षिक उत्सर्जन के बराबर है। हवा को पंखें के माध्यम से खींचकर CO_2 को एक संग्राहक में एकत्रित किया जाता है, जहाँ इसे पास की बेसाल्ट चट्टान में 1,000 मीटर की गहराई पर भरे जाने से पहले गर्म करके पानी में मिलाने हेतु एकत्रित किया जाता है।

किरण ज़ेहरा द्वारा संकलित; एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा।

Registered No. TN/CCN/359/2021-2023 | Total number of pages in this monthly
Licensed to post WPP No.TN/PMG(CCR)/WPP 421/21-23 | issue, including cover, 84. Price: ₹35
Registered with Registrar of News Papers for India TNHIN/2001/05271 Rotary Samachar Published on the first week of every month

ADVT.

REGULAR CLASSES
ALREADY COMMENCED

www.iisuniv.ac.in

IIS (deemed to be UNIVERSITY) JAIPUR

Admissions Open 2021-22

For UG/PG/Ph.D./Professional programmes

Option-1 : Apply Offline
Visit our Campus between 9.30 am & 4.00 pm on all working days

Option-2 : Apply Online

Direct Admission for **UG/PG & Professional** programmes

Admission to **Ph.D.** programmes through **Research Entrance Test (RET)**

UNDERGRADUATE PROGRAMMES

- **B.A.**
- **B.A. Hons.**
- **B.A.** (Journalism and Mass Communication)
- **B.F.A.** (Applied Art, Painting, Sculpture)
- **B.B.A.**
- **B.C.A.**
- **B.Com.**
- **B.Com. Hons.**
- **B.Sc.**
- **B.Sc. Hons.**
- **B.Sc. Hons.** (Home Sc.)
- **B.Sc. Hons.** (Multimedia & Animation)
- **B.Sc. Fashion Design**
- **B.Sc. Jewellery Design & Technology**

INTEGRATED COURSES

- **B.A. B.Ed.***
- **B.Sc. B.Ed.***

*Approved by NCTE

SPECIALIZED PROGRAMMES

- **B.Com. Hons.** (Proficiency in Chartered Accounting/ Proficiency in Company Secretaryship) Specialized programmes and separate academic calendars for aspirants of CA & CS.
- **B.Com. Hons.** (Applied Accounting and Finance) Accredited by ACCA, UK.

SPECIALIZED CERTIFICATE PROGRAMMES

- **ICAI sponsored Certificate** programme for Accounting Technicians.
- **University of Cambridge,** U.K.'s Business English Certificates Tests of English

BACHELOR OF VOCATION (B.VOC.) PROGRAMMES*

- **B.Voc.** (Office Management and Secretarial Practices)
- **B.Voc.** (Banking and Financial Services)
- **B.Voc.** (Entrepreneurship and Business Innovation)
- **B.Voc.** (Digital Marketing)

*Approved by UGC

POSTGRADUATE PROGRAMMES

- **M.A.-** Economics, English, French, Sociology, Geography, History, Political Science, Mathematics, International Relations, Public Administration, Psychology, Statistics
- **M.Sc.-** Biotechnology, Botany, Chemistry, Economics, Environmental Science, Geography, Information Technology, Mathematics, Microbiology, Physics, Psychology, Statistics, Zoology
- **M.Com. -** Accounting & Taxation, Business Studies, Financial Studies
- **M.Sc. Home Science** - Clothing and Textiles, Foods and Nutrition, Human Development
- **M.F.A.** - Applied Art (Graphic Design/Illustration), Print Making, History of Art, Painting, Sculpture (Portraiture, Creative Sculpture)
- **M.A.** Journalism & Mass Communication
- **M.A./M.Com./M.Sc.** Fashion Design
- **M.S.W.** (Master of Social Work)
- **M.B.A. (Semester Based)** Human Resource Management; International Business; Retail Management; Travel & Tourism Management; Finance; Advertising & Brand Management; Business Analytics; Innovation, Entrepreneurship and Venture Development
- **M.B.A.** (**Dual Specialization, Trimester based**) - Marketing, Finance, Human Resource, International Business, Information Technology Management **(Co-Educational)**
- **M.C.A.** (Master of Computer Applications - Two years semester based programme) **(Co-Educational)**

RESEARCH PROGRAMMES

- **Ph.D.**

  Faculty of Arts & Social Sciences: English, History, Political Science, Mathematics, Statistics

  Faculty of Science : Environmental & Life Sciences (Botany, Biotechnology, Environmental Science, Microbiology, Zoology), Chemistry, Computer Science, Home Science (Human Development), Mathematics, Physics, Statistics
- **D.Sc./D.Litt.**

CAREER ORIENTED & SKILL DEVELOPMENT PROGRAMMES, 3-LEVEL CERTIFICATE/DIPLOMA /ADVANCED DIPLOMA ALONG WITH DEGREE PROGRAMMES

IIS (deemed to be **UNIVERSITY)**
Gurukul Marg, SFS, Mansarovar, Jaipur -302 020 (India)
0141-2397906-07, +91 141 2400160, 2401008

50% SCHOLARSHIP

OFFERED TO THOSE WHO HAVE LOST AN EARNING PARENT / GUARDIAN TO COVID-19